रोमांचक विज्ञान कथाएँ

जयंत विष्णु नारलीकर

रोमांचक विज्ञान कथाएँ

जयंत विष्णु नारलीकर

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

फ्रेड होयले को,
जिनसे मैंने
बहुत कुछ सीखा।

1

हिम युग की वापसी

''**पा**पा, पापा ! जल्दी उठो। देखो, बाहर कितनी सारी बर्फ है! कितना अच्छा लग रहा है!''

राजीव शाह की सुबह-सुबह की गहरी नींद बच्चों के शोरगुल से उचट गई। पहले तो उसे समझ नहीं आया कि शोरगुल किस बात पर हो रहा है। कविता और प्रमोद क्यों इतने उत्तेजित हो रहे थे?

''पापा, क्या हम नीचे जाकर बर्फ में खेल सकते हैं?'' कविता ने पूछा।

बर्फ! यहाँ मुंबई में! यह कैसे मुमकिन है? राजीव की नींद फौरन गायब हो गई । वह लपककर खिड़की के पास पहुँचा और बाहर झाँका । उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वाकई! बाहर बर्फबारी हुई थी। दूर-दूर तक घरों के बीच में बर्फ की सफेद चादर बिछी हुई थी और तभी उसे महसूस हुआ कि कितनी ठंड पड़ रही थी। बच्चों ने तो दो-दो स्वेटर तक चढ़ा लिये थे। गरम कपड़ों के नाम पर उनके पास वही स्वेटर थे। वैसे भी मुंबई में गरम कपड़ों की जरूरत किसे पड़ती है। ये स्वेटर भी उन्होंने पिछले साल ऊटी में खरीदे थे और तब उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन मुंबई में उनकी जरूरत पड़ेगी।

''नहीं! नीचे मत जाओ।'' ठंड से सिहरते हुए राजीव बोला और फिर अपने चारों ओर शॉल लपेटते हुए उसने भी हथियार डाल दिए, ''हम छत पर चलेंगे। लेकिन पहले अपने जूते-मोजे पहन लो।''

प्रमोद और कविता दौड़कर पहले ही छत पर पहुँच गए। राजीव ने भी एक और मोटा शॉल निकाल लिया। उसकी दिली इच्छा हो रही थी कि उनके पास भी कोई हीटर होता। यहाँ तक कि कोयलेवाली अँगीठी से भी काम चल जाता है।

पिछले एक हफ्ते से जलवायु में जो बदलाव आ रहे थे उसी की परिणति थी यह बर्फ। आमतौर पर तापमान 15 डिग्री सेल्सियस तक गिरने पर ही मुंबईवाले शोर मचाने लगते हैं कि ठंड पड़ रही है। कल दिन का तापमान मुश्किल से 5 डिग्री पहुँचा था और रात में 0 डिग्री हो गया । लेकिन किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि बर्फ भी पड़ने लगेगी। इस बर्फबारी ने मौसम के अच्छे-अच्छे पंडितों के मुँह बंद कर दिए थे। अब मौसम में कहाँ और क्या परिवर्तन आएगा, कोई नहीं जानता।

''जल्दी आओ, पापा!'' छत की ऊपरी सीढ़ी से प्रमोद चिल्लाया। अपार्टमेंट के सबसे ऊँचे माले पर बने इस फ्लैट के मालिक होने के नाते छत पर भी उन्हीं का अधिकार था। मुंबई जैसे शहर में यह बड़े शान की बात थी।

''मैं आ रहा हूँ। पर अपना ध्यान रखो। बर्फ फिसलन भरी हो सकती है।'' सीढ़ियाँ चढ़ते हुए राजीव ने बच्चों को सावधान किया। वह समझ नहीं पा रहा था कि छत पर कितनी ठंड होगी।

लेकिन छत पर पहुँचते ही आस-पास का नजारा देखकर वह अपनी चिंता भूल गया। उसे लगा कि गरम और आर्द्र जलवायु के शहर मुंबई की बजाय वह क्रिसमस कार्ड पर छपे किसी यूरोपीय शहर की तसवीर देख रहा हो। हिंदू कॉलोनी की कुंज गलियों में लगे पेड़ों पर भी सफेद चादर बिछी हुई थी। लेकिन फुटपाथों और सड़कों पर यातायात के कारण काले-सफेद का बेमेल संगम हो रहा था। दादर के पार जाती रेल लाइन भी सुनसान पड़ी थी।

''मैं शर्त लगा सकता हूँ कि मध्य रेलवेवालों ने भी अपना तामझाम समेट लिया होगा। उन्हें किसी बड़े बहाने की जरूरत नहीं पड़ती।'' राजीव बड़बड़ाया, ''मुझे हैरानी है कि पश्चिम रेलवेवाले क्या कह रहे होंगे।'' जवाब के तौर पर तभी उसे माहिम की ओर जाती पटरी पर लोकल ट्रेन दिखाई दी।

लेकिन राजीव की कल्पनाएँ पाँच साल पीछे की उड़ान भर रही थीं, जब उसने एक शर्त लगाई थी। उस वक्त तो शर्त लगाना बहुत आसान लग रहा था कि क्या मुंबई में बर्फ पड़ेगी? उसका दावा था, 'कभी नहीं।' लेकिन वसंत ने बड़े यकीन के साथ कहा था, 'अगले दस वर्षों के भीतर मुंबई में बर्फ पड़ेगी।'

लेकिन ऐसा केवल पाँच वर्षों के भीतर ही हो गया।

□

वाशिंगटन में भारतीय राजदूत द्वारा दी गई दावत में पहली बार वह वसंत से मिला था। वसंत यानी प्रो. वसंत चिटनिस, जो उस दौरान अमरीका में जगह-जगह पर व्याख्यान दे रहे थे। राजदूत ने उस दावत में डी.सी. मैरीलैंड और वर्जीनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को बुलाया था। कुछ पत्रकार भी थे, जिनमें राजीव भी एक था।

विज्ञान और राजनीति पर गपशप का दौर जारी था। लेकिन वसंत चुपचाप बैठा था। ऐसी दावतों और गपशप में वह शायद ही कभी शामिल होता हो।

'टेलीप्रिंटर पर अभी-अभी एक संदेश आया है। ज्वालामुखी वेसूवियस दोबारा फट पड़ा है।' एक पत्रकार लगभग चिल्लाता हुआ अंदर दाखिल हुआ।

'हे भगवान्! तीन महीनों के भीतर फटनेवाला यह चौथा ज्वालामुखी है। ऐसा लगता है कि धरती माता का पेट खराब हो गया है।' राजीव ने वसंत से कहा, जो उसकी बगल में ही बैठा था।

'पर हमें धरती माँ के पेट की बजाय उसकी खाल की परवाह करनी चाहिए।' वसंत ने तुरंत ही जवाब दिया।

'आपका क्या मतलब है?' राजीव ने पूछा।

'हाँ-हाँ, वसंत! हमें भी बताओ।' मैरीलैंड विश्वविद्यालय से आए एक प्रोफेसर ने कहा।

'अच्छा! जब कोई ज्वालामुखी फटता है तो उसका सबकुछ धरती पर ही नहीं गिरता है। कुछ पदार्थ वायुमंडल में भी घुल-मिल जाता है। यह निर्भर करता है कि कितना? क्योंकि एक निश्चित स्तर पार करने पर प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है। मुझे डर है कि हम उस सीमा को अगर पार नहीं कर गए हैं तो उसके निकट तो पहुँच ही गए हैं।' वसंत ने गंभीरतापूर्वक बताया।

'प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा! फिर उससे क्या होगा?' किसी सनसनीखेज 'कथा' की उम्मीद में एक अमरीकी खबरनवीस पेन और पैड निकालकर तैयार हो गया।

उसकी आँखों में सीधे देखते हुए वसंत ने उलटा सवाल कर दिया, 'कल्पना करें कि मैं अपनी सलाह दूँ कि आप अपनी राजधानी वाशिंगटन से हटाकर होनोलूलू ले जाएँ।'

'पर उसकी जरूरत ही क्यों पड़ेगी?' खबरनवीस ने पूछा।

'क्योंकि आप खबरनवीसों को पहेलियाँ बुझाना अच्छा नहीं लगता, मैं इसका जवाब भी दूँगा।' मुसकराते हुए वसंत ने कहा, 'मामूली हिम युग के आने से आपको न्यूयॉर्क, शिकागो और यहाँ तक कि वाशिंगटन जैसे उत्तरी शहर खाली करने पड़ेंगे।'

इससे पहले कि प्रो.वसंत और कुछ बता पाते, विदेश मंत्रालय से एक खास मेहमान के आने से उनकी बातचीत में व्यवधान पड़ गया। फिर आम बातचीत होने लगी। लेकिन राजीव वसंत को थोड़ा और कुरेदना चाहता था। अत: जैसे ही बातचीत का मौका मिला, उसने सीधे मतलब की बात की।

'आप अपने सभी दावों को ठोस सबूतों के साथ पेश करने के लिए विख्यात हैं। लेकिन क्या हिम युग के बारे में आपकी भविष्यवाणी कुछ दूर की कौड़ी नहीं लगती? अवश्य ही मैं आपके क्षेत्र का नहीं हूँ, मगर मेरा मानना है कि अगले हजारों साल तक कोई हिम युग नहीं आएगा । बशर्ते कि हमारा पारंपरिक ज्ञान...'

'गलत साबित न हो !' पापड़ खाते हुए वसंत ने उसकी बात पूरी करते हुए कहा, 'मैं साबित कर सकता हूँ कि

अगर हमारे वर्तमान पारिस्थितिकी तंत्र में प्रकृति का संतुलन यों ही बिगड़ता गया तो दस साल के भीतर ही यह मुसीबत आ जाएगी। लेकिन मिस्टर शाह, आपको डरने की जरूरत नहीं। मुंबई में आप सुरक्षित हैं। भूमध्य रेखा के दोनों ओर उत्तर-दक्षिण में 20 डिग्री अक्षांश तक की पट्टी को सुरक्षित रहना चाहिए।'

'अगर मुझे स्कूल में पढ़ी भूगोल की कुछ मोटी-मोटी बातें याद हैं तो मुंबई भी इसी अक्षांश के भीतर करीब 19 डिग्री उत्तर में स्थित है। आपकी पट्टी के सीमांत पर।'

'तो हम मुंबईवालों को बर्फबारी और अन्य सब चीजों के साथ असली शीत लहर का सामना करना पड़ सकता है। मुझे कहना चाहिए कि हम आसानी से बचे रहेंगे।' वसंत ने चहकते हुए कहा।

'मैं यकीन नहीं कर सकता। केवल दस साल के भीतर मुंबई में बर्फ गिरेगी, यह नामुमकिन है। अगर आप एक दमड़ी लगाएँ तो मैं दस डॉलर की शर्त लगा सकता हूँ कि ऐसा कभी नहीं होगा। निश्चित रूप से यह बहुत दु:साहसपूर्ण शर्त है।' दस डॉलर का नोट निकालते हुए राजीव ने कहा।

'मुझे डर है कि हालात मेरे पक्ष में कुछ ज्यादा ही अनुकूल हैं। निश्चित बातों पर मैं शर्त नहीं लगाता हूँ। पत्रकार साहब, आप निश्चित रूप से यह दस डॉलर हार जाएँगे। उसकी बजाय आइए, हम अपने कार्ड बदल लेते हैं। यह रहा मेरा कार्ड। मैं इस पर आज की तारीख लिख देता हूँ। आप भी ऐसा ही करें। अगर दस साल के भीतर मुंबई में बर्फ गिरती है तो आप मेरा कार्ड लौटा देंगे और अपनी हार मान लेंगे। अगर नहीं पड़ी तो मैं अपनी हार मान लूँगा।'

अभी वे कार्डों का लेन-देन कर ही रहे थे कि मेजबान ने आकर घोषणा की, 'आइए और हमारे खानसामे द्वारा बनाई गई खास मिठाई का आनंद लीजिए।'

एक बड़ा सा आइस केक उसी मेज पर लाया गया जिस पर कुछ देर पहले दावत चल रही थी। केक का नाम पढ़कर राजीव और वसंत दोनों के चेहरों पर मुसकराहट दौड़ गई। केक का नाम था—'आर्कटिक सरप्राइज'।

'वास्तविक 'सरप्राइज' तो दस साल के भीतर आने वाला है।' वसंत बुदबुदाया, 'पर वह उतना खुशनुमा नहीं होगा।'

□

छत पर बच्चों ने धमा-चौकड़ी मचा रखी थी। कविता द्वारा फेंका गया बर्फ का गोला राजीव को आकर लगा और वह अतीत से तुरंत वर्तमान में आ गया। सचमुच में वह शर्त हार चुका था। अब उसे डाक द्वारा प्रो. चिटनिस का कार्ड वापस भेजना था। वह सीढ़ियों से नीचे उतरा।

पर डेस्क से कार्ड निकालते ही उसपर अंकित फोन नंबर से उसे एक बेहतर विचार सूझा। अवश्य ही शर्त के अनुसार उसे कार्ड डाक द्वारा भेजना था। पर फोन द्वारा उनसे सीधे बात क्यों न की जाए। उसने तुरंत ही फोन मिलाया।

''हाँ, चिटनिस?'' उसने पूछा।

दूसरे छोर पर स्थित व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''जी हाँ, वसंत चिटनिस बोल रहा हूँ। क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ प्लीज?''

''मैं राजीव शाह बोल रहा हूँ, आपको याद होगा।''

''हमारी शर्त! बिलकुल, मैं आज तुम्हें ही याद कर रहा था। तो तुम हार मानते हो?''

राजीव की आँखों के सामने दूसरे छोर पर वसंत का मुसकराता चेहरा घूम गया।

''सचमुच, पर क्या आप मुझे साक्षात्कार के लिए आधे घंटे का समय देंगे? मैं आपकी भविष्यवाणी का वैज्ञानिक आधार जानना चाहता हूँ। मैं आपके सिद्धांत को प्रकाशित कराना चाहता हूँ।''

''बिलकुल पत्रकार के अनुसार; पर अब इसका कोई फायदा नहीं होगा। फिर भी तुम्हारा स्वागत है, बशर्ते कि तुम

सुबह ग्यारह बजे तक संस्थान में पहुँच जाओ।''

राजीव तुरंत मान गया। वह झटपट दाढ़ी बनाने में जुट गया और साथ ही रेडियो भी चालू कर दिया। रेडियो पर विशेष समाचार बुलेटिन आ रहा था—

''समूचा उत्तर भारत जबरदस्त शीत लहर की चपेट में है। पश्चिमी राजस्थान से बंगाल की खाड़ी तक और हिमालय से लेकर सह्याद्रि की पहाड़ियों तक जबरदस्त बर्फ पड़ी है। हताहतों की संख्या का अनुमान लगाना संभव नहीं है। हजारों की संख्या में आप्रवासी पक्षियों के झुंड मृत पाए गए हैं, जिन्हें मौसम में आए इस अचानक बदलाव का जरा भी अंदाजा नहीं था। ज्यादातर फसलें चौपट हो गई हैं। सड़क और रेल संपर्क बुरी तरह बाधित हो गया है। प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्रियों ने अपने-अपने क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण किया है। बर्फ की आपदा का सामना करने के लिए प्रधानमंत्री ने विशेष कोष की घोषणा की है। सभी से इस कोष में खुलकर दान करने की अपील की गई है।''

राजीव ने दूसरा स्टेशन लगाया, पर वहाँ भी यही समाचार बुलेटिन आ रहा था।

तभी कविता की उत्साह भरी चीख सुनाई पड़ी, ''पापा, पापा! आओ, टी.वी. देखो। देखो, इस पर सब जगह बर्फ की तसवीरें दिखा रहे हैं।''

टेलीविजन पर भी विशेष समाचार बुलेटिन आ रहे थे। समूचे उत्तर भारत में गिरी बर्फ के दृश्यों के अलावा उन बुलेटिनों में और कुछ नहीं था। कम-से-कम तकनीकी तो सूचना के प्रवाह को थामने में समर्थ थी। राजीव को रूसी फिल्म 'डॉ. जिवागो' में दिखाए गए दृश्य याद आ गए। टेलीविजन पर देश के प्रमुख शहरों के तापमान दिखा रहे थे—श्रीनगर 20 डिग्री, चंडीगढ़ 15 डिग्री, बीकानेर 15 डिग्री, दिल्ली 12 डिग्री, वाराणसी 10 डिग्री, कोलकाता 3 डिग्री।

केवल मुंबई के दक्षिण में पारा 0 डिग्री के मनोवैज्ञानिक स्तर से ऊपर रहने में कामयाब हो पाया था। मद्रास 3 डिग्री, बैंगलोर 2 डिग्री, त्रिवेंद्रम 7 डिग्री तापमान के साथ अपेक्षाकृत गरम लग रहे थे। तभी एक न्यूज फ्लैश आया—राष्ट्रपति ने एक आपात बैठक बुलाई जिसमें उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल के सदस्य, तीनों सेनाओं के प्रमुख, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और विपक्षी दलों के नेता शिरकत करेंगे। इस बैठक में फैसला लिया जाएगा कि क्या राष्ट्रीय राजधानी को दिल्ली से मुंबई ले जाया जाए?

'तुम्हें अपनी राजधानी वाशिंगटन से होनोलूलू ले जानी पड़ सकती है।' राजीव को पाँच साल पहले वसंत के कहे गए शब्द याद आ गए, जो उन्होंने अमरीकी खबरनवीस से कहे थे। अगर भारत जैसे गरम देश में बर्फ ने इतना कहर बरपा दिया है तो यूरोप और रूस जैसे ठंडे मुल्कों का क्या हाल होगा? वहाँ का हाल जानने के लिए उसने बी.बी.सी. वर्ल्ड चैनल लगाया।

सचमुच चारों ओर भारी तबाही और बरबादी का आलम था। तापमान 20 से 30 डिग्री तक गिर चुका था। चूँकि कनाडा, यूरोप और रूस ठंडे मौसम के अभ्यस्त थे, इसलिए उन्हें इस बदलाव से कुछ विशेष फर्क नहीं पड़ा जितना कि भारत में, जहाँ भगदड़ मच गई थी।

अचानक ही राजीव को अपनी मुलाकात का खयाल आ गया। घड़ी में सुबह के 9 बजकर 5 मिनट हो रहे थे। सूरज अपनी पूरी क्षमता से चमकने का प्रयास कर रहा था, लेकिन उसकी चमक किसी ग्रह या चाँद से ज्यादा नहीं थी। कविता और प्रमोद मानकर बैठे थे कि उनका स्कूल आज बंद रहेगा, इसलिए वे दोनों आराम से टेलीविजन देख रहे थे। उन्हें इस बात का भी सुकून था कि उनकी माँ अपने मित्र की बेटी के विवाह में शरीक होने के लिए पुणे गई हुई थीं। वरना वह उन्हें काम पर काम बताती रहतीं।

राजीव ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और गैराज से अपनी कार बाहर निकाली। कार भी ठंडी पड़ चुकी थी और

बहुत माथा-पच्ची करने के बाद स्टार्ट हो सकी। सड़क पर निकलने के बाद असली मुसीबत से सामना होने लगा। बर्फ से ढकी सड़क पर कार बार-बार फिसल रही थी। पर चूँकि राजीव विदेशों में ऐसी सड़कों पर कार चला चुका था, इसलिए थोड़ी-बहुत दिक्कत के बाद वह कार पर नियंत्रण रखने में सफल हो गया। लेकिन मुंबई के ज्यादातर ड्राइवरों के साथ ऐसा नहीं था। अंबेडकर रोड पर लावारिस पड़ी या टकराई हुई कारों और बसों को देखकर तो यही लगता था कि मुंबईवालों को बर्फ पर चलने का अभ्यास नहीं है।

''हम हिंदुस्तानी भी खामख्वाह अपने आपको फन्ने खाँ ड्राइवर समझते हैं। भले ही हमें केवल ब्रेक और एक्सलरेटर से ज्यादा कुछ और पता न हो।'' राजीव बड़बड़ाया और अपनी कार को कीचड़ व मलबे के बीच सावधानी से चलाने लगा।

उसे महसूस हुआ कि कोलाबा पहुँचने में उसे आज कुछ ज्यादा वक्त लगेगा, हालाँकि वहाँ पहुँचने में आमतौर पर 40-45 मिनट ही लगते हैं। खैर, उसके पास अभी डेढ़ घंटे का समय था।

□

''आइए पत्रकार साहब! आप एक घंटा लेट हैं। क्या आपको रास्ते में साक्षात्कार के लिए कोई और शिकार मिल गया था?'' दफ्तर में घुसते ही वसंत ने उसका स्वागत किया।

''मुझे खेद है प्रो. चिटनिस। अगर इस गड़बड़-झाले के बीच कार चलाने की बजाय मैं पैदल आया होता तो शायद यहाँ जल्दी पहुँच जाता।'' राजीव आरामकुरसी पर पसर गया। वसंत भी उसके सामने अपने ओहदे के अनुसार रिवॉल्विंग चेयर पर बैठ गया।

''पहले मेरी बधाइयाँ स्वीकार करें प्रोफेसर, उस दिन आपने क्या सटीक भविष्यवाणी की थी! बिलकुल सही निशाना लगा। पर हम पत्रकार और कुछ चाहे न हों, वहमी जरूर होते हैं। कृपया मेरा वहम दूर करें कि आपने ऐसी सटीक भविष्यवाणी की कैसे? और यह क्यों कहा कि अब इसे प्रकाशित करने का कोई फायदा नहीं होगा?''

''आपको अपने सवालों के जवाब इन कागजात में जरूर मिल जाएँगे।'' यह कहते हुए वसंत ने एक फाइल राजीव के सामने रख दी।

उस फाइल में अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में छप चुके आलेखों की टाइप की हुई प्रतिलिपियाँ तथा हाथ से लिखे कागजों का पुलिंदा था। पर उस विषय में अनभिज्ञ होने के कारण राजीव उनका सिर-पैर कुछ समझ नहीं पाया, वह केवल उनके शीर्षकों और निचोड़ों को ही नोट कर सका।

''हिम युग की भविष्यवाणी करनेवाला मेरा वैज्ञानिक सिद्धांत प्रकाशित भाग की बजाय अप्रकाशित भाग में ज्यादा मिलेगा।'' वसंत ने सहज भाव से कहा।

''ऐसा क्यों?''

''झूठी वास्तविकता के कारण, हर चीज की बारीकी से नुक्ता-चीनी करने और निष्पक्षता के झूठे अहसास के कारण, जिस पर हम वैज्ञानिकों को बहुत गुमान है।'' वसंत के चेहरे पर व्यंग्य और हताशा के भाव तैर रहे थे। आगे बोलने से पहले फिर उसका चेहरा निर्विकार हो गया, ''आम लोग सोचते हैं कि हम वैज्ञानिक प्रकांड विद्वान् होते हैं, जो ईर्ष्या और लालच से परे केवल ज्ञान की खोज में लगे रहते हैं। पर ये सब बकवास है। हम वैज्ञानिक भी आखिर मनुष्य हैं। मानवीय स्वभाव की सभी कमजोरियाँ हमारे भीतर भी होती हैं। अगर वैज्ञानिक व्यवस्था को नई खोजें हजम नहीं होतीं तो उसके पुरोधा लोग इन खोजों को दबाने के लिए सबकुछ करेंगे। मुझे भी अपने सिद्धांतों और भविष्यवाणियों के स्वर को मंदा कर देना पड़ा, ताकि मेरे विचार प्रकाशित हो सकें। और अन्य हाथ से लिखे विचार, जो आप देख रहे हैं, उन्हें प्रकाशन के लिए कुछ ज्यादा ही अव्यावहारिक और फूहड़ माना गया।''

''मुझे क्षमा करें, प्रो. चिटनिस।''

''मुझे वसंत कहो।'' प्रोफेसर ने बीच में ही कहा।

''धन्यवाद, वसंत! लेकिन आप जो कुछ कह रहे हैं, उसमें कॉपरनिकस और गैलीलियो के दिनों से गजब की समानता दिखती है। अगर मुझे ठीक-ठीक याद है तो कॉपरनिकस ने अपनी पुस्तक में जो प्रस्तावना लिखी थी उसे प्रकाशक ने पूरी तरह बदल डाला, ताकि पुस्तक को धार्मिक संस्थानों की तरफ से प्रतिरोध न झेलना पड़े।'' राजीव ने बातचीत रिकॉर्ड करने के लिए टेप रिकॉर्डर चालू कर दिया था। इस बीच उत्तर देने से पहले वसंत ने अपने विचारों को कुछ व्यवस्थित कर लिया था।

''उन दिनों धार्मिक व्यवस्था थी, जो वैज्ञानिकों को हतोत्साहित करती थी। आज वैज्ञानिक नौकरशाही है, जो हम वैज्ञानिकों के सिर पर बैठी है। वे समझदार लोग ही तय करते हैं कि क्या चीज प्रकाशन योग्य है और क्या नहीं। और यदि (चीज) यह वास्तविक विज्ञान है तो इसे दिन की रोशनी भी नसीब न हो। पाँच सदी पहलेवाली धार्मिक व्यवस्था की जगह ये आज वैज्ञानिक जगत् के धर्माधिकारी बन बैठे हैं। माफ करना, अगर मैं कुछ ज्यादा ही कड़वा बोल गया हूँ तो।''

''बेशक वसंत, तुम इस पूरी व्यवस्था पर ही टिप्पणी कर रहे हो। व्यवस्था जैसी भी हो, तुम अपने निजी अनुभव के आधार पर इसे कोस रहे हो। लेकिन अगर मुझे इसका पक्ष लेना होता तो मैं यही कहता कि अपने पूरे कैरियर के दौरान वैज्ञानिकों को सैकड़ों अजीबो-गरीब और अधकचरे विचार सूझते। लेकिन इन सबको परखने का वक्त किसके पास है? इसलिए अगर वे किसी नई लीक से हटकर विचार से बचने की कोशिश करते हैं तो...''

''तो किसे दोष दिया जाए? मैं सहमत हूँ, लेकिन अगर लीक से हटकर सोचा गया विचार भी तर्कों पर आधारित हो और उसके पक्ष में सबूत भी हों तो क्या उसकी सुनवाई नहीं होनी चाहिए? निश्चित ही ऐसे किसी ठोस विचार को सैकड़ों अजीबो-गरीब और अधकचरे विचारों से अलग पहचानना कोई कठिन काम नहीं है। खासकर इसे प्रतिपादित करनेवाला वैज्ञानिक अपने क्षेत्र में अच्छी-खासी साख बना चुका हो; लेकिन इन फिजूल की बातों को छोड़कर हमें अपने सिद्धांत पर आना चाहिए।''

□

''ठीक है, वसंत। मुझे अपने सिद्धांत के बारे में बताओ और यह भी बताओ कि यह क्यों भविष्यवाणी करता है?'' राजीव ने कहा।

वसंत ने संसार का नक्शा निकाला और उसे राजीव के सामने मेज पर फैला दिया।

''यहाँ देखो, नक्शे में दरशाई गई ठोस जमीन पर गौर करो। इस जमीन ने नक्शे के कुल क्षेत्रफल का लगभग एक-तिहाई भाग घेर रखा है। बाकी सारा भाग पानी है—समुद्रों और महासागरों की शक्ल में। यही महासागर हमारी जलवायु को नियंत्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके ऊपर की गरम हवा ऊपर उठती है और धरती के वायुमंडल में घुल-मिल जाती है तथा दोबारा नीचे आने से पहले चारों ओर फैल जाती है। ठीक?''

''यह सब तो स्कूल की किताबों में भी लिखा है।'' राजीव ने कहा।

''लेकिन हम हमेशा ही इसे यों ही लेते हैं कि महासागर गरम हैं और हमेशा गरम रहेंगे। किस हद तक यह सही है? कुछ साल पहले मैंने समुद्र की गहराइयों में तापमान मापा था। समुद्र का पानी ऊपरी स्तरों में गरम होता है और नीचे गहराइयों में ठंडा होता जाता है, इतना ठंडा कि बर्फ जम जाए। लेकिन मुझे यह देखकर अचंभा हुआ कि ऊपर की गरम परतें, जिन पर हमारी जलवायु निर्भर है, काफी पतली हैं और साल-दर-साल ये और ज्यादा पतली होती जा रही हैं।''

''पर सूर्य क्या कर रहा है? क्या वह महासागरों को पर्याप्त गरमी नहीं देता?'' राजीव ने पूछा।

''ऊष्मा के प्रत्यक्ष स्रोतों के तौर पर सूर्य बहुत ही अप्रभावी है। ध्रुवों पर गरमी के मौसम में चौबीसों घंटे कितनी

चमकदार धूप होती है। पर इससे कितनी बर्फ पिघलती है? इसके बजाय बर्फ धूप को परावर्तित कर देती है और उसकी गरमी को अपने अंदर नहीं आने देती। लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से धूप ज्यादा कारगर साबित हो सकती है और होती है। अगर तुम मेरी प्रयोगशाला चलो तो मैं तुम्हें एक प्रयोग करके दिखाता हूँ।'' इतना कहकर वसंत उठ खड़ा हुआ और राजीव को गलियारे के पास स्थित अपनी प्रयोगशाला में ले गया।

वहाँ उसकी मेज पर शीशे का एक बड़ा सा बरतन रखा था। एक उपकरण को चालू करते हुए वसंत ने समझाना शुरू किया, ''मैं इस बरतन के अंदर की हवा को धीरे-धीरे ठंडा कर रहा हूँ। इसमें कुछ नमी है, यानी कि जलवाष्प। अगर मैं हवा को ठंडा करने की प्रक्रिया को सावधानी के साथ पूरी करूँ तो इसका तापमान 0 डिग्री से नीचे गिर जाना चाहिए और जलवाष्प को बर्फ में नहीं जमना चाहिए।''

तापमान-सूचक नीचे गिर रहा था और जब वह शून्य से भी नीचे चला गया तब भी बर्फ नहीं जमी थी। तब वसंत ने बरतन के आर-पार एक प्रकाश-किरण छोड़ी। समकोण से देखने पर बरतन के भीतर बिलकुल अँधेरा नजर आ रहा था।

''ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्रकाश इस नम हवा के आर-पार गुजर जाता है।'' वसंत ने समझाया, ''पर अब मैं तापमान को और कम करूँगा।''

जब तापमान 0 से 40 अंश नीचे तक गया तो बरतन चमकने लगा। यह परिवर्तन एकदम जादू जैसा लग रहा था।

''ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि बरतन के भीतर हवा में मौजूद जलवाष्प अब जम गई है। बर्फ के कण प्रकाश को छितरा देते हैं, जबकि नम हवा ऐसा नहीं कर पाती। यही मुख्य बिंदु है।'' वसंत ने कहा।

अपने कमरे में लौटते वक्त वसंत ने बताया, ''यही क्रिया ध्रुवीय प्रदेशों में भी होती है। वहाँ पर जब तापमान 0 से 40 अंश तक नीचे गिर जाता है तो हवा में बर्फ के कण बन जाते हैं, जिन्हें हम 'हीरे की धूल' कहते हैं। ये वही बर्फ कण हैं जिन्हें तुमने अभी प्रयोग में देखा था। प्रयोग की तरह ध्रुवों पर भी यह धूल धूप को छितरा देती है। अन्य जगहों पर हमें ऐसा होता नजर नहीं आता, क्योंकि कहीं भी तापमान कभी भी इतना नीचे नहीं गिरता है।''

वसंत का बयान हालाँकि टेपरिकॉर्डर में दर्ज हो रहा था, लेकिन राजीव शाह अपने नोट बनाने में व्यस्त था। हालाँकि उसे अपने सवाल का जवाब अभी भी नहीं मिल पाया था। राजीव के चेहरे पर तैर रहे हैरानी के भावों को ताड़कर वसंत मुसकराया और आगे बोला, ''अब मैं तुम्हें अपने सिद्धांत का लब्बोलुआब बताता हूँ। कल्पना करो कि महासागर ठंडे हो रहे हैं और वायुमंडल को पर्याप्त मात्रा में गरमी नहीं पहुँचा पाते हैं। इससे हर जगह का तापमान कम होता जाएगा और ध्रुवीय प्रदेशों के अलावा अन्य जगहों पर भी हीरे की धूल बनने लगेगी और यह धूल क्या करेगी? धूप को छितराकर यह इसे जमीन तक पहुँचने से रोक देगी। कल्पना करो कि धूल का यह परदा धरती को आंशिक तौर पर ढक रहा है।''

बात राजीव की समझ में आ गई। आगे की बात को उसी ने पूरा किया, ''फिर धरती और ठंडी हो जाएगी। महासागर भी कम गरम होंगे। हीरे की धूल बढ़ती जाएगी और फैलती जाएगी। यह धूल धूप को ज्यादा-से-ज्यादा धरती पर पहुँचने से रोक देगी और हम हिम युग की ओर बढ़ते जाएँगे। लेकिन अगर महासागर गरम हों तो यह दुश्चक्र शुरू ही नहीं होने पाएगा।''

''रुको, रुको!'' वसंत ने कहा, ''आमतौर पर महासागरों की ऊपरी परत इतनी गरम तो होती है कि वह वायुमंडल को हीरे की धूल के खतरे से बचा सके। लेकिन अगर कुछ ऐसा हो जाए जिससे महासागरों के ठंडे होने का दुश्चक्र शुरू होने लगे तो फिर हम हिम युग से नहीं बच सकते। जैसे जब कभी कोई ज्वालामुखी फटता है तो उसके द्वारा उगले गए कण वायुमंडल में भी घुल-मिल सकते हैं। वहाँ वे धूप को सोख लेते हैं या छितराने लगते

हैं। इसलिए अगर ज्वालामुखियों की गतिविधियाँ सामान्य से ज्यादा बढ़ जाएँ तो वायुमंडल में धूल का परदा बनने का खतरा बढ़ जाता है, जो धूप को गरम करने के अपने काम से रोकता है। जैसा कि मैंने कई साल पहले गौर किया था कि प्रकृति द्वारा निर्धारित सुरक्षा परत धीरे-धीरे पतली होती जा रही थी।'' और अब राजीव को उस बातचीत का सिर-पैर समझ में आने लगा, जो पाँच साल पहले वाशिंगटन में हुई थी और यह भी समझ में आ गया कि वेसूवियस ज्वालामुखी के फटने की खबर सुनकर वसंत उतना चिंतित क्यों हो गया था।

और अब जबकि वसंत की आशंका सही साबित हो चुकी है तो आगे क्या होने वाला है?

□

'हिम युग आ गया! भारतीय वैज्ञानिक ने भविष्यवाणी की थी'—यह शीर्षक था राजीव के सनसनीखेज आलेख का। इस आलेख को भारत में खूब वाहवाही मिली। बाद में यह विदेशी समाचार एजेंसियों द्वारा पूरी दुनिया में खूब प्रचारित-प्रसारित किया गया। जल्द ही वसंत चिटनिस एक जानी-मानी हस्ती बन गए। इस तथ्य से कि उन्होंने जलवायु में विनाशकारी बदलाव की वैज्ञानिक तौर पर काफी पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी, उन्हें आम जनता के बीच पर्याप्त मान-सम्मान मिला और अपने वैज्ञानिक सहयोगियों के बीच उनकी साख भी बहुत बढ़ गई। परिणामस्वरूप भविष्य के बारे में उनकी भविष्यवाणियों को गंभीरतापूर्वक लिया जाने लगा।

लेकिन अभी भी ऊँचे ओहदों पर जमे हुए वैज्ञानिक ऐसे थे जो हिम युग की शुरुआत से सहमत नहीं थे। वे मानते थे कि यह केवल जलवायु में अस्थायी गड़बड़ी है, जो बेशक बड़े पैमाने की है और असाधारण है, लेकिन है अस्थायी, जो जल्द ही ठीक हो जाएगी। उन्होंने जनता को भरोसा दिलाया कि पुराने व अच्छे गरम दिन कुछ साल के भीतर फिर लौट आएँगे। बस, महासागरों और उनके ऊपर की हवाओं के गरम एवं ठंडे होने के चक्र में संतुलन कायम हो जाए; लेकिन ठंड से जमे देशों को विश्वास दिलाना वाकई काफी कठिन था।

संसार के विख्यात पत्रकारों के सम्मेलन में वसंत ने दोबारा सुस्ती के खिलाफ चेताया, ''हो सकता है कि अगली गरमी के मौसम में कुछ बर्फ पिघल जाए, लेकिन इसे हिम युग का अंत मत मानिए, क्योंकि उसके बाद आनेवाला सर्दी का मौसम और ज्यादा ठंडा होगा। इसे टालने का तरीका भी है; लेकिन उस तरीके को जल्द-से-जल्द अमल में लाना पड़ेगा। इस चक्र को उलट देना अभी भी संभव है, पर इसमें बहुत सारा धन खर्च होगा। कृपया इसे खर्च करें।''

लेकिन इस चेतावनी का कोई असर नहीं हुआ। अप्रैल में वसंत का मौसम आया और तापमान मामूली रूप से बढ़ा। उत्तरी गोलार्द्ध में हर जगह गरमी का मौसम चमकदार और गरम था, यहाँ तक कि दक्षिणी गोलार्द्ध में भी सर्दी का मौसम उतना ठंडा नहीं था जितना उत्तरी गोलार्द्ध में रह चुका था। इसलिए मौसम-विज्ञानी और अन्य लोग भविष्यवाणी करने लगे कि बर्फ पिघलने लगी है।

विंबल्डन के मैच अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हुए, हालाँकि खिलाड़ियों को गरम स्वेटर पहनकर खेलना पड़ा। हर कोई खुश था कि मैचों के दौरान बारिश नहीं हुई। ऑस्ट्रेलिया ने दोबारा एशेज श्रृंखला जीत ली और इस बार कोई मौसम को दोष नहीं दे सका। यू. एस. ओपन गोल्फ के मैच भी बड़े आरामदेह मौसम में खेले गए, जिसकी कोई उम्मीद नहीं थी। नीचे विषुवतीय प्रदेशों में भी भयंकर गरमी का नामोनिशान नहीं था; लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून अपने समय पर और पर्याप्त मात्रा में आया।

तो हमें घबराने की कतई जरूरत नहीं थी। दुनिया के सभी छोटे-बड़े देशों ने सोचा, एक बार फिर भारत की भोली जनता ने लाल फीते में बँधी अपनी नौकरशाही का अहसान माना, जो अभी भी राजधानी को दिल्ली से मुंबई ले जाने के मनसूबे बाँध रही थी। गरमी का मौसम देखकर इन मनसूबों को भी बाँधकर इस टिप्पणी के साथ ताक पर रख दिया गया कि 'अगली सूचना तक निर्णय स्थगित'।

लेकिन वसंत चिटनिस की चिंता लगातार बढ़ती जा रही थी। एक लौ भी बुझने से पहले तेज रोशनी के साथ भकभकाती है। गरमी का मौसम उम्मीद के मुताबिक ही था। लेकिन कोई भी उनकी बात को सुनने के मूड में नहीं था।

लेकिन एक आदमी था राजीव शाह, जिसे वसंत के तर्कों पर पूर्ण विश्वास था। एक दिन जब राजीव अपने दफ्तर में बैठा टेलीप्रिंटर पर आई खबरों की काट-छाँट कर रहा था कि तभी वसंत वहाँ पर आ धमका। उसके चेहरे से राजीव ने ताड़ लिया कि उसके पास जरूर कोई खबर है।

''लो, देखो यह टेलेक्स।'' यह कहते हुए वसंत ने उसे एक छोटा सा संदेश पढ़ने के लिए दिया।

'आपके निर्देशानुसार हमने अंटार्कटिक पर जमी हुई बर्फ की पैमाइश की है। हमने पक्का पता लगाया है कि बर्फ का क्षेत्रफल बढ़ा है और समुद्र के पानी का तापमान पहले की तुलना में दो अंश गिरा है।'

''यह संदेश अंटार्कटिक में स्थापित अंतरराष्ट्रीय संस्थान से आया है।'' वसंत ने कहा, ''मुझे इसी नतीजे की उम्मीद थी; लेकिन मैं इसे पक्का करना चाहता था। बदकिस्मती से मेरी आशंका सही साबित हुई।''

''तुम्हारा मतलब है कि आनेवाली सर्दी में हमें और ज्यादा ठंड का सामना करना पड़ेगा?''

''बिलकुल ठीक, राजीव! तुम मेरे पूर्वग्रहग्रस्त वैज्ञानिक सहकर्मियों से कहीं ज्यादा समझदार हो । किसे परवाह है! हम सभी इन सर्दियों में जमकर मौत की नींद सोने जा रहे हैं।''

''चलो भी वसंत, क्या इतना बुरा हाल होने जा रहा है? क्या इस बर्फीले दुश्चक्र से निकलने का कोई रास्ता नहीं है?'' राजीव ने पूछा।

''रास्ता है, लेकिन अब मैं चुप रहूँगा, जब तक कि ये पूर्वग्रही और हठी वैज्ञानिक मुझसे आकर पूछते नहीं। हाँ, दोस्त होने के नाते मैं तुम्हें एक नेक सलाह जरूर दूँगा। भूमध्य रेखा के जितने निकट तुम जा सकते हो, चले जाओ। शायद अगले कुछ महीनों में इंडोनेशिया का मौसम कुछ बरदाश्त करने लायक बचे। मैं तो बानडुंग का टिकट खरीदने जा रहा हूँ।'' और वसंत जल्दी से बाहर निकल गया।

□

मानव अपने आपको धरती का राजा कहता है; लेकिन जिस स्तर पर प्रकृति की शक्ति काम करती है उसके समक्ष मनुष्य की सबसे अच्छी तकनीकी भी बौनी है।

2 नवंबर को मुंबई के लोगों ने एक अद्‌भुत नजारा देखा। हजारों-हजार पक्षी आसमान में उड़े जा रहे थे। वे सारे-के-सारे पक्षी बहुत ही अनुशासित ढंग से उड़ रहे थे। पक्षी विज्ञानी अपने-अपने घरों से बाहर निकल आए, ताकि इस नजारे को देख सकें और कुछ सीख सकें। उनमें से अनेक पक्षी पहले कभी भी इस दिशा में उड़कर नहीं आए थे।

जल्द ही मुंबई के कौए, गौरैया और कबूतर भी इस झुंड में शामिल हो गए।

राजीव ने गौर किया कि वे सभी पक्षी दक्षिण दिशा की ओर जा रहे थे। उन पक्षियों ने अपनी सहज वृत्ति से वह जान लिया था जो मानव अपनी तमाम उन्नत तकनीकों के बल पर भी नहीं जान पाया था। स्पष्ट है कि पक्षियों में समझदारी थी और उन्होंने पिछले साल के अनुभवों से काफी कुछ सीखा था।

आखिरकार दो दिन बाद आसमान में मँडरा रहे मानव निर्मित उपग्रहों ने भी मौसम में किसी अनहोनी का पता लगा ही लिया। 4 नवंबर को एक चेतावनी प्रसारित की गई । वायुमंडलीय बदलाव तेजी से हो रहे हैं और इस बात के संकेत हैं कि अगले चौबीस घंटों के भीतर धरती पर अनेक जगहों पर भारी बर्फ गिरेगी। गर्व से गरदन अकड़ाए मौसम-विज्ञानियों ने बताया कि उनकी उन्नत तकनीकों के बगैर यह पूर्व चेतावनी नहीं आ सकती थी। उन्हें शायद मालूम नहीं था कि पक्षी काफी पहले ही भूमध्य रेखा के पास सुरक्षित जगहों पर पलायन कर चुके थे।

पक्षियों के समान अनुशासन के अभाव में मनुष्य के बीच भगदड़ मच गई। जापान, कनाडा, अमरीका और तकनीकी रूप से विकसित यूरोपीय देशों का भरोसा था कि पिछली सर्दियाँ बिता लेने के बाद वे इस बार फिर किसी भी तरह की ठंड का सामना कर लेंगे। लेकिन वे इस बात के लिए तैयार नहीं थे कि उनके बड़े-बड़े शहर भी पाँच मीटर मोटी बर्फ के तले दब जाएँ। नतीजा यह हुआ कि उसके बाद मची भगदड़ में केवल वे ही सौभाग्यशाली लोग बच पाए जो परमाणु हमलों से बचानेवाले बंकरों तक पहुँच सके। पारंपरिक तौर पर गरम देशों में ठंड का कहर कुछ कम था। लेकिन उनमें भी तैयारी के अभाव में काफी जनसंख्या हताहत हो गई।

राजीव शाह भी मद्रास में अपने चचेरे भाई के पास चला गया, लेकिन वहाँ भी ठंड के मारे बुरा हाल था। प्रमोद और कविता को भी अब बर्फ में खेलने में मजा नहीं आता था। अन्य लोगों की तरह वे भी पूछते कि अच्छे पुराने गरम दिन कब आएँगे। लेकिन आम आदमियों को छोड़िए, विशेषज्ञ लोग भी यकीन के साथ कुछ भी बता पाने में असमर्थ थे। विशेषज्ञ लोगों में भी, जो पिछली सर्दी के मौसम को बेहद हलके रूप से ले रहे थे, ज्यादातर लोग मर-खप गए थे। उनमें से केवल एक व्यक्ति ही बच पाया, क्योंकि वह वाशिंगटन छोड़कर मियामी बीच पर आ गया था। वह रिचर्ड होम्स था, जो अमरीकी ऊर्जा बोर्ड का सदस्य था।

एक दिन अचानक उसके फोन ने राजीव को आश्चर्य में डाल दिया।

''हाय राजीव! कैसे हो तुम? शर्तिया तुम मद्रास में गरम मौसम का मजा ले रहे हो, जबकि हम यहाँ मियामी में जमे जा रहे हैं।'' रिचर्ड मजाकिया बनने की कोशिश कर रहा था। लेकिन राजीव को उसके शब्दों में छिपी चिंता का एहसास हो गया।

''चलो भी रिचर्ड! वास्तव में तुम वहाँ पर अच्छे-खासे गरम घर में दिन गुजार रहे हो।'' उसने कहा।

''मियामी में गरम घर! तुम बचकानी बात कर रहे हो। लेकिन राजीव, मैंने वसंत का पता लगाने के लिए फोन किया है। तुम जानते हो न, वसंत चिटनिस, वह कहाँ गायब हो गया? मुंबई और दिल्ली के तो फोन काम ही नहीं कर रहे हैं।''

''जैसे कि इन शहरों के फोन कभी ठीक से काम करते ही नहीं।'' राजीव बड़बड़ाया। उसके बाद उसने रिचर्ड को बानडुंग में वसंत का पता और फोन नंबर दिया।

''मैं जानना चाहता हूँ कि वह इन सबका क्या मतलब निकालता है। हो सकता है, उसके पास इस संकट से निकलने का कोई रास्ता हो।'' सूचना के लिए राजीव को धन्यवाद देते हुए रिचर्ड ने कहा।

अब अक्लमंद लोग भी बात करने को तैयार हैं। राजीव ने सोचा। कुछ महीने पहले इसी होम्स ने बुरे दिनों के लिए वसंत की भविष्यवाणी का मजाक उड़ाया था। पर अभी भी देर नहीं हुई थी, बशर्ते कि वसंत सुनने के मूड में हो।

□

''आपके वाशिंगटन के क्या हाल-चाल हैं, रिचर्ड?'' बानडुंग हवाई अड्डे पर रिचर्ड का स्वागत करते हुए वसंत ने पूछा।

''वहाँ तो कोई नहीं बचा। दरअसल हमसे ज्यादा समझदार तो पक्षी ही निकले। उन्होंने समय पर अपने इलाकों को छोड़ दिया।'' होम्स ने उत्तर दिया। पिछली मुलाकात की तुलना में इस बार उसके स्वर में वह जोश-खरोश नहीं था। उसे वसंत की प्रतिक्रिया का अनुमान नहीं था, इसलिए वह राजीव को भी साथ लाया था। अब वे चुपचाप वसंत के घर की ओर चले जा रहे थे।

''तुमने भी अपने लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं तलाशी है। तुम नहीं जानते कि सारी दुनिया पर बर्फ कहर बरपा रही है। देखो, इन टेलेक्स और फैक्स संदेशों को देखो।'' राजीव ने कागजों का पुलिंदा वसंत को थमा दिया।

वसंत ने उन कागजों को गौर से पढ़ा। अगर परिस्थितियाँ सामान्य होतीं तो वे सनसनीखेज सुर्खियाँ बन जातीं, पर अब कागजों पर लिखी बातें सामान्य लग रही थीं—

'ब्रिटिश सरकार ने अपनी बाकी बची 40 प्रतिशत आबादी को केन्या पहुँचाने का कार्यक्रम पूरा होने की घोषणा की। इस कार्यक्रम को पूरा करने में दो महीने लगे।'

'मॉस्को और लेनिनग्राद खाली कराए गए—रूसी प्रधानमंत्री की घोषणा।'

'हम अपने भूमिगत ठिकानों में एक साल तक जिंदा रहेंगे—इजराइल के राष्ट्रपति।'

'उत्तरी भारत में सभी नदियाँ पूरी तरह जम गईं, यू.एन.आई.की खबर।'

विस्तृत संदेशों को पढ़ने के बाद वसंत एक-एक कर कागज राजीव को थमाता गया। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। कागजों को पढ़ने के बाद उसने नपी-तुली टिप्पणी की, ''पिछले साल तो हमने केवल एक झलक देखी थी। अब पूरा नजारा देखने को मिल रहा है। मुझे तो संदेह है कि हम अगला साल देखने के लिए जिंदा भी बचेंगे कि नहीं।''

''क्या इतना बुरा हाल होने जा रहा है?'' राजीव ने चिंतित होकर पूछा।

''क्या इसे टाला नहीं जा सकता है?'' रिचर्ड ने पूछा।

''अब शायद बहुत देर हो चुकी है, रिचर्ड, लेकिन हो सकता है कि मैं गलत हूँ। हम कोशिश कर सकते हैं, पर अब हमारे पास क्या विकल्प है? हमें इसे पिछले साल ही करना चाहिए था।''

वसंत ने अपनी डेस्क से टाइप किए हुए कागजों का पुलिंदा निकाला। उसके ऊपर लिखा—'परियोजना : इंद्र का आक्रमण'।

''इंद्र स्वर्ग का राजा है, जिसका निवास ऊपर आसमान में है। वहीं सारी समस्याओं की जड़ है।'' आसमान की तरफ उँगली उठाते हुए होम्स ने कहा और चुपचाप कागजों का वह पुलिंदा ले लिया—एक साल पहले वह इनकी तरफ देखना भी नहीं चाहता था।

□

होम्स और चिटनिस की मुलाकात को छह महीने बीत चुके थे। भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर केवल दस अक्षांश तक ही इलाका हरा-भरा और नीला था, जो धरती की पहचान माना जाता है। बल्कि हर जगह हिम युग अपने पैर पसार चुका था और इसी पतली सी पट्टी में समूची मानव सभ्यता सिमट गई थी और इसी पट्टी में इस सभ्यता को बर्फ के आक्रमण को रोकने के लिए अपने प्रयास करने पड़े।

मरता क्या न करता!

लेकिन वसंत अब ज्यादा आशान्वित था कि वे अब रॉकेट छोड़ने के लिए तैयार थे। थुंबा में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में रॉकेट लॉञ्चर के पास खड़ा वह बेसब्री से अभियान शुरू होने का इंतजार कर रहा था।

''हम तैयार हैं।'' अभियान प्रमुख ने कहा।

''तब दागो।'' वसंत ने आदेश दिया। उसे किसी अभियान को शुरू करने के लिए शुभ घड़ी का इंतजार करने से ही चिढ़ थी।

प्रमुख ने एक बटन दबाया। अगला पल बड़ी बेचैनी में बीता, फिर चमचमाता हुआ रॉकेट नारंगी लपटें छोड़ता आसमान की ओर लपका। इंद्र का विजय अभियान शुरू हो चुका था। सभी ने चैन की साँस ली।

इस अंतरिक्ष केंद्र से वायुमंडल की जानकारी हासिल करने के लिए पहले ही कई रॉकेट छोड़े जा चुके थे। अब की बार छोड़ा गया रॉकेट वायुमंडल को काबू में करने के लिए बनाया गया था। बशर्ते कि यह और भूमध्य रेखा की पट्टी से छोड़े जानेवाले अन्य रॉकेट बखूबी अपना काम करने में सफल हो जाएँ। श्रीहरिकोटा, श्रीलंका,

सुमात्रा, केन्या और ग्वाटेमाला में भी लॉन्च पैड ऐसे ही रॉकेटों और उपग्रहों को छोड़ने के लिए तैयार थे। क्योंकि यह योजना वसंत के दिमाग की उपज थी, इसलिए पहले प्रक्षेपण की अध्यक्षता करने का सम्मान उसे ही दिया गया।

अपने सामने पैनल पर लगे उपकरणों को देखकर पहली बार उसके चेहरे पर मुसकान आई। उसने लाल रंगवाला फोन उठाया और रिसीवर पर बोलना शुरू किया—

''अभियान सफलतापूर्वक शुरू हो चुका है।'' रॉकेटों, उपग्रहों, गुब्बारों और ऊँची उड़ान भरनेवाले हवाई जहाजों—सभी को इस अभियान में झोंक दिया गया था। ये सभी आक्रमणकारी सेना के चार अंग थे और समूची मानव जाति को उपग्रहों द्वारा भेजी गई सूचनाओं का बेचैनी से इंतजार हो रहा था। ये उपग्रह आधुनिक महाभारत में संजय की भूमिका निभा रहे थे।

राजीव ने अपनी डायरी में लिखा—'हमारे इस पुराण में धरती के राजाओं ने इंद्र पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया है। क्या यह आक्रमण सफल होगा?'

और आक्रमण क्या था? दरअसल यह वायुमंडल पर धातु के छोटे-छोटे कणों की बौछार करने की महत्त्वाकांक्षी योजना था। ये कण धूप की गरमी को सोखकर नीचे जमीन पर बैठ जाएँगे, यह वसंत की योजना थी। उसे उम्मीद थी कि अब तक ज्वालामुखियों के फटने से निकली राख के कण—जो वायुमंडल में घुल-मिल गए थे, अब धूप को धरती तक नहीं पहुँचने दे रहे थे—बैठ चुके होंगे। उसे यह उम्मीद भी थी कि वायुमंडल पर धात्विक कणों की बौछार से राख द्वारा हुआ नुकसान पूरा हो जाएगा।

लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं था। वायुमंडल में छितराए हुए हिमकणों को भी तुरंत ही कम करना था। ऐसा केवल वायुमंडल को विस्फोटक द्वारा गरम करके ही हो पाता। इसके लिए वसंत ने अस्त्र तकनीकी के विनाशक की बजाय रचनात्मक तरीकसे उपयोग करने की शर्त रख दी।

विनाश के कगार पर पहुँच चुके सभी देशों ने इस शर्त को सहर्ष स्वीकार कर लिया और सहयोग की भावना से कार्य करने लगे। इस तरह छह महीने वायुमंडल को विस्फोटक तरीके से निकली ऊर्जा के द्वारा गरम करने के तरीके खोजने में जुट गए। इन मिले-जुले प्रयासों केअंत में अब भी एक सवाल मुँह बाए खड़ा था—'क्या यह तरीका काम करेगा?'

□

सितंबर का महीना आते-आते इस सवाल का जवाब भी मिल गया। जवाब मानव जाति के पक्ष में था। सबसे पहले गंगा के मैदानों में जमी ब्रर्फपिघलने लगी। उसके तुरंत बाद कैलिफोर्निया से लेकर फ्लोरिडा तक बड़े-बड़े इलाके ब्रर्फ की कैद से मुक्त होने लगे। मियामी से रिच्रर्ड होम्स ने वसंत को फोन लगाया—

''बहुत-बहुत बधाइयाँ, वसंत! इंद्र के आक्रमण ने विजय प्राप्त की है। हीरे की धूल तेजी से वायुमंडल से गायब हो रही है। संपूर्ण धरती का वायुमंडल गरम हो रहा है। तुम वाकई बहुत महान् हो, वसंत।''

वसंत के चेहरे पर वैसा ही संतोष झलक रहा था जैसा तमाम कठिनाइयों को पार कर कामयाबी हासिल करनेवाले वैज्ञानिक के चेहरे पर झलकता है। अब साथी वैज्ञानिक भी उसके कार्य की सराहना कर रहे थे। लेकिन भीतर-ही-भीतर उसके मन में गहरी चिंता और अनिश्चितता अब भी बनी हुई थी।

यह युद्ध तो उन्होंने जीत लिया, पर असली युद्ध तो अभी आने वाला था। जैसा कि अकसर होता है, किसी लड़ाई में अपनी सारी ताकत झोंक देने के बाद विजेता भी थककर चूर हो जाता है। आदमी थोड़ी देर रुककर अपनी उपलब्धियों के लिए खुद की पीठ थपथपा सकता है; परंतु बड़े संघर्ष अभी आने बाकी थे। हिम युग के कारण मनुष्य की आबादी घटकर आधी रह गई थी। इंद्र के आक्रमण में बहुत सारी ऊर्जा एवं अन्य आवश्यक संसाधन

झोंक दिए गए थे। और अब पिघलती हुई ब्रर्फ से बड़े पैमाने पर बाढ़ आने का खतरा पैदा हो गया था। क्या मनुष्य आगे भी सहयोग की भावना के साथ इन समस्याओं का सामना करता रहेगा? यह सोचते-सोचते वसंत के माथे पर पसीना आ गया। पिछले दो साल में उसे पहली बार पसीना आया था।

❑

2

और मुंबई जल उठा

हड़बड़ाहट के साथ राजेश की नींद खुल गई। वह पसीने में नहाया हुआ था। मौसम हालाँकि गरम और उमस भरा था, पर पसीना आने का कारण कुछ और ही था। आज भी राजेश ने वही भयानक सपना देखा था। पहले तो यह सपना उसे कभी-कभार ही आता था, लेकिन कुछ दिनों से अकसर दिखाई देने लगा था और अगर यही हालत रही तो शायद उसे किसी विशेषज्ञ की सलाह लेनी पड़ेगी।

उसने बिस्तर के साथ लगे स्विच को ऑन किया, पर लाइट जली नहीं कि घड़ी के चमकदार डायल पर नजर डालते ही उसे कारण समझ में आ गया। उस वक्त सुबह के 5 : 05 बजे थे और बिजली तो 5 : 30 बजे ही आएगी। यह घटना सन् 2041 की है। मुंबई शहर में सख्ती से बिजली की कटौती चल रही थी। उसके जैसे औसत (आम) घरेलू उपभोक्ता को दिन में केवल छह घंटे ही बिजली मिलती थी—सुबह 5 : 30 से 8 : 00 बजे तक और शाम को 18 : 30 से 22 : 00 बजे तक। जलापूर्ति की हालत तो और भी खराब थी। मुंबई शहर निगम ने ऐसे उपकरण लगा रखे थे, जो बहुत कड़ाई से नाप-तौलकर पानी छोड़ते थे। प्रत्येक उपभोक्ता को प्रतिदिन 100 लीटर के हिसाब से पानी अपार्टमेंट की छत पर रखी टंकियों में पंप कर दिया जाता।

अब चूँकि वह जाग ही गया था तो उसने सोचा—क्यों न तैयार हो लिया जाए, ताकि सुबह-सुबह की आपाधापी से बच सके। मुंबई के ज्यादातर नागरिकों की तरह राजेश के पास भी ऐसी लाइटें थीं जो जमा की गई बिजली से चलती थीं। उसने अपनी रीचार्जेबल ट्यूबलाइट जलाई। जब कभी बिजली आती तो ऐसे उपकरण अपनी बैटरियों को चार्ज करने लग जाते।

अकसर राजेश सोचा करता कि ऐसे उपकरण कानूनी भी हैं या नहीं। क्योंकि बिजली जैसी दुर्लभ चीज की फिजूलखर्ची को रोकने के लिए ही तो निर्धारित घंटों में उसकी आपूर्ति की जा रही है। तो क्या ये उपकरण ज्यादा बिजली खींचकर इस कवायद को ही ठेंगा नहीं दिखा रहे? पर जवाब न उसके पास था, न ही किसी और के पास। बिजली कंपनी भी मामले को अदालत तक नहीं ले गई, क्योंकि उसे भी पता नहीं था कि क्या फैसला होगा; लेकिन इस ऊहापोह के बीच संचित बिजली से चलनेवाले विद्युत् उपकरणों का बाजार खूब फल-फूल रहा था।

घड़ी की सुइयों की तरह राजेश की दिनचर्या भी टिक-टिक कर आगे बढ़ने लगी। वह तैयार होगा और किस्मत अच्छी रही तो जल्दी ट्रेन भी मिल जाएगी। वह विरार में रहता था और फास्ट लोकल ट्रेन में चलने के बावजूद उसे चर्चगेट तक पहुँचने में कुल सत्तानबे मिनट लगते थे। उसके दादाजी भी इसी रूट पर सफर किया करते थे और विरार से चर्चगेट तक आने-जाने में उन्हें भी इतना ही समय लगता था—यानी तब से इसमें कोई सुधार नहीं आया है। पिछले पचास वर्षों में सारी दुनिया की लोकोमोशन तकनीकी काफी आगे बढ़ गई, लेकिन मुंबई को उससे कोई लाभ नहीं हो पाया। जहाँ रेलगाडि़यों की रफ्तार बढ़ी, वहीं यातायात में भारी बढ़ोतरी ने तेजी से चलती रेलगाडि़यों का चक्का जाम कर दिया। मध्य रेलवे हर 30 सेकंड पर एक ट्रेन रवाना करने का दावा करता है, तो पश्चिमी रेलवे प्रत्येक 35 सेकंड पर। लेकिन पटरियों की लंबाई तो जहाँ-की-तहाँ थी। इससे रेलगाडि़याँ हमेशा ही जाम में फँसी नजर आती थीं।

करीब एक घंटे में राजेश निकलने को तैयार था। उसके अपार्टमेंट परिसर के गलियारे और सीढ़ियाँ लोगों से ठसे पड़े थे—बिलकुल रेलवे प्लेटफॉर्म की तरह। अगर आज राजेश के दादाजी होते तो उन्हें शहर की दुर्दशा देखकर

अवश्य ही दु:ख होता। लेकिन मुंबई तो इन सबकी अभ्यस्त हो चुकी है। करीब पच्चीस साल पहले तिकड़मी राजनीतिज्ञों के एक गुट के दिमाग में मुंबई की गंदी बस्तियों की समस्या सुलझाने का अनूठा विचार आया। उन्होंने मुंबई शहर निगम से नया कानून पास करवाया, जिसके अनुसार फ्लोर स्पेस इंडेक्स (एफ.एस.आई.) को दोगुना करना अनिवार्य हो गया। केवल अतिरिक्त एफ.एस.आई. को ही अनिवार्य कहा गया। मुंबई के प्रत्येक भवन-मालिक के लिए अतिरिक्त निर्माण करवाना अनिवार्य हो गया, ताकि अनिवार्य एफ.एस.आई. शर्त का पालन हो सके। इतना ही नहीं, भवन में अतिरिक्त निर्माण गंदी बस्ती के निवासियों को देना भी अनिवार्य था—वह भी केवल लागत मूल्य पर। इस कानून का पालन न करने पर बिजली-पानी काटने के साथ-साथ भारी जुरमाने का प्रावधान भी था।

जैसे-तैसे लोगों ने इस कानून का पालन तो किया, पर क्या इससे समस्या सुलझ गई? पुराने लोग गंदी बस्तियों से निकले तो उनकी जगह पर नए लोग आकर बस गए। कई मामलों में तो लोग गंदी बस्तियों में ही रहे, लेकिन अपने नए घरों को उन्होंने दूसरे जरूरतमंद लोगों को ऊँची दरों पर किराए पर चढ़ा दिया।

रोजगार की तलाश में लोगों का ताँता लगा रहा। किसी नेता में इतनी राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति नहीं थी कि वह इस पर रोक लगा सके। नहीं, एक आदमी तो था, जिसने सन् 2025 में ऐसा करने की कोशिश की थी। मुंबई के निगम आयुक्त की हैसियत से उस बहादुर इनसान ने बृहत्तर मुंबई में लोगों की बाढ़ को रोकने के लिए बड़े कठोर कानून बनाए थे; लेकिन जल्दी ही उसे अपनी भूल का एहसास हो गया कि उसने बर्र के छत्ते में हाथ डाल दिया था। सैकड़ों नागरिक, अधिकतर कार्यकर्ता बाँहें चढ़ाकर सड़कों पर उतर आए। उद्देश्य था— मौलिक अधिकारों, मुक्त आवागमन और न जाने किन-किन आजादियों की रक्षा। न्यायाधीशों ने भी उन नियमों को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। आयुक्त महोदय का स्थानांतरण भी ऐसी दूर-दराज जगह पर कर दिया गया जहाँ से फिर उनकी कोई खबर नहीं आई। पर आज राजेश को अचानक उन आयुक्त महोदय की याद आ गई! 'वह बेचारा आयुक्त! असली हीरो तो वही था। हमें उसकी मूर्ति लगानी चाहिए।' यह सोचता हुआ राजेश अपने मकानों पर अनधिकार कब्जा जमाए लोगों के बीच से गुजर रहा था। कुछ वर्षों में उसका छोटा सा फ्लैट भी उन जैसे बिन बुलाए मेहमानों से भर जाएगा।

सुबह साढ़े छह बजे भी स्टेशन जानेवाली बस सवारियों से ठसाठस भरी थी, पर कम-से-कम इस वक्त तो राजेश एक बस में घुसने में सफल हो गया। अन्यथा पीक ऑवर में तो चार बार कोशिश करने में तीन बार असफलता ही हाथ लगती। मुँह बिचकाए हुए उसने अपने दु:स्वप्न के लिए धन्यवाद कहा, जिसने उसे जल्दी जगा दिया था।

घर से जल्दी निकलने के कारण राजेश को विरार से 6 : 40 की लोकल ट्रेन में बैठने की सीट भी मिल गई। यह चर्चगेट तक बिना रुके जाती थी। यानी बीच में अगर लाल बत्तियाँ मिलें, तभी यह रुकेगी। उसने अनुमान लगाया कि उसे आठ-सवा आठ के बीच चर्चगेट पहुँच जाना चाहिए।

□

जैसे-जैसे ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी, राजेश के विचारों को भी पंख लग गए; पर घूम-फिरकर उसके विचार पिछली रात के सपने पर आ जाते। वह सपने के दृश्यों को याद करने लगा। पाँच साल पहले उसने शहर की पब्लिक लाइब्रेरी से एक पुस्तक ली थी। वह पुस्तक करीब साठ साल पहले किसी जाने-माने आर्किटेक्ट और टाउन प्लानर ने 'शहरी आबादी के लिए नियोजन' विषय पर लिखी थी। लेखक विशेषज्ञों के उस समूह का सदस्य था, जिसे मुंबई के भावी विकास के लिए रणनीतियाँ सुझानी थीं; लेकिन ज्यादातर विशेषज्ञ-सुझावों की तरह इस समूह के सुझावों को भी बड़े करीने से लाल फीते में बाँधकर ताक पर रख दिया गया था कि सपने में भी उनपर अमल न हो। लेकिन इन सबसे बढ़कर शहर के बारे में लेखक की भविष्यवाणियाँ थीं, जिन्होंने राजेश पर गहरा असर डाला था।

पुस्तक में लेखक ने लिखा था कि मुंबई लगातार बाहर से आनेवाले आप्रवासियों की भीड़ अपने अंदर समाता रहा है। शहर के संसाधनों को बारंबार ज्यादा-से-ज्यादा दावेदारों के बीच बाँटना पड़ा है। इस कारण पर्यावरण और शहरी जीवन के मानकों का निरंतर ह्रस हुआ है। फिर भी मुंबईवासी हमेशा ही निरंतर बिगड़ती दशा के अनुरूप स्वयं को ढालते रहे और कभी कोई आवाज नहीं उठाई। लेखक के शब्दों में, मुंबईवासियों की दशा देगची में गरम होते पानी में रहनेवाले मेढक की तरह है; जैसे-जैसे पानी गरम होता जाता है, मेढक को तकलीफ तो होती, पर वह बजाय कूदने के गरम होते पानी के अनुरूप स्वयं को ढाल लेता। लेकिन धीरे-धीरे ऐसी अवस्था हो जाती है जब मेढक की सहनशक्ति जवाब दे जाती है, तब वह बेहोश होकर मर जाता है। लेखक ने चेतावनी भी दी थी कि अगर समय पर काररवाई नहीं की गई तो मुंबई की भी यही दशा होने वाली है।

राजेश ने महसूस किया कि समय पर कभी काररवाई की ही नहीं गई। केवल उस निगम आयुक्त ने कुछ करने की सोची भी तो उसे दूर फिंकवा दिया गया। यह किताब पढ़कर राजेश रात-दिन चिंता में डूबा रहने लगा। अंत में उसकी चिंताएँ ही सपने की शक्ल लेकर उसे डराने लगीं। वह खुद को टब में बैठे मेढक के रूप में देखता था। सपने शुरू होने पर वह देखता कि टब में बैठा वह गरम पानी से नहा रहा है; पर जल्द ही पानी बहुत ज्यादा गरम हो जाता। उसे कष्ट तो होता, वह बेचैनी से करवटें भी बदलता, पर कभी टब से बाहर नहीं निकलता—जब तक कि पीड़ा असहनीय न हो जाए। तभी उसका दु:स्वप्न समाप्त हो जाता; परंतु वह जीवित बचेगा कि नहीं—यह उसे कभी पता नहीं लग पाता।

चर्नी रोड स्टेशन निकल जाने पर राजेश सीट छोड़कर उठ गया। मुंबई की लोकल ट्रेन में चढ़ना जितना कठिन है, उतरना उससे भी ज्यादा कठिन है। वह जानता था कि चर्चगेट स्टेशन पर लोगों की भारी भीड़ ट्रेन पर धावा बोलने को तैयार खड़ी होगी, और अगर ट्रेन रुकते ही वह तुरंत नीचे नहीं कूदा तो डिब्बे से बाहर नहीं निकल पाएगा। इन दिनों तो रात-दिन 'रश ऑवर' रहने लगा है। इसके दादा के जमाने में दिन में कुछ घंटे ट्रेनें खाली चला करती थीं, पर अब नहीं।

राजेश का ऑफिस कफ परेड की एक गगनचुंबी इमारत में था। चर्चगेट स्टेशन से खचाखच भरी बस से ऑफिस तक सफर करने के बजाय राजेश ने पैदल चलने का फैसला किया। उसके पास आधे घंटे का समय था। शायद वह धोंदिबा को भी पकड़ सकता था, जो तब तक मछली मारने नहीं निकला होगा। धोंदिबा एक जवान मछुआरा था, जो कफ परेड के पास मच्छीमार नगर नामक मछुआरों की बस्ती में रहता था। कुछ साल पहले संयोगवश राजेश की उससे भेंट हो गई थी। आज भी वे दोनों अपनी पहली मुलाकात को मुसकराकर माफ करते हैं।

राजेश और उसका मित्र मच्छीमार नगर के निकट एक स्टॉल पर भेलपुरी खा रहे थे। दोनों ही मुंबई में दिनोदिन बढ़ती नए लोगों की भीड़ पर टीका-टिप्पणी भी कर रहे थे—

''उदाहरण के तौर पर इन मछुआरों को ही लें।'' राजेश के मित्र ने कहा, ''उन्हें यहीं से मछली मारनी जरूरी है जो महानगर का दिल है; जबकि पूरा कोंकण तट उनके लिए खाली है?''

''बिलकुल ठीक! पर उन्हें कौन कहे? हमारे नेता तो किसी भी नए आनेवाले को 'न' कहते नहीं, क्योंकि वह उनका वोटर हो सकता है।''

राजेश ने हाँ में हाँ मिलाई। मित्र ने आगे कहना जारी रखा, ''हमें इन मछुआरों को बताने की जरूरत है कि मित्रो, जाओ कहीं और मछली पकड़ो, मुंबई के शोरगुल को और मत बढ़ाओ।''

तभी बगल से खखारने की आवाज आई। उनके ठीक पीछे खड़ा नौजवान बोल उठा, ''आपकी बातचीत में बाधा डालने के लिए माफी चाहता हूँ। पर मैं बताना चाहता हूँ कि भीड़ हम नहीं, कोई और बढ़ा रहा है। मछुआरों की

यह बस्ती तो यहाँ बाहरी लोगों के आने से पहले की है। यह बस्ती यहाँ तब से है जब अंग्रेजों ने मुंबई को अपने अधिकार में लिया था। मेरे पुरखे बड़ी शांति से यहाँ पर मछली पकड़ा करते थे, तब आप बाहरी लोगों का शोरगुल यहाँ आया भी नहीं था।''

''मैं खेद प्रकट करता हूँ।'' राजेश ने कहा था, जिसे मुंबई का इतिहास कुछ पता था—''मुझे याद है कि मैंने कहीं पढ़ा था कि यह बस्ती इतनी पुरानी है।''

पर राजेश का मित्र अविश्वास से ताकता रहा। उस युवक ने कहा, ''अपनी गलती मान लेने के लिए मैं आपका आदर करता हूँ। बहुत कम लोग ऐसा करते हैं। जब कभी आपके पास समय हो तो मैं आपको कुछ पुराने रिकॉर्ड दिखा सकता हूँ, जिन्हें मेरे परिवार ने कई पीढ़ियों से सँभालकर रखा है। वैसे मेरा नाम धोंदिबा है।''

वह छोटी सी मुलाकात एक लंबी सी मैत्री की शुरुआत थी, जिसने राजेश की जिंदगी में ताजगी और जिज्ञासा भर दी थी। उसे धोंदिबा के पेशे से ईर्ष्या होती थी, क्योंकि वह अपनी नौका लेकर अकसर खुले समुद्र में पागल कर देनेवाली भीड़ से दूर चला जाता था। आज भी उसने उसी भेलपूड़ीवाले से धोंदिबा के बारे में पूछा।

''आपने कुछ मिनटों की देरी कर दी, श्रीमान!'' भेलपूड़ीवाले ने बताया और समुद्र में कुछ सौ मीटर दूर जा चुकी नौका की ओर इशारा किया।

''अच्छा, जब वह लौटेगा तब उससे मिल लूँगा।'' राजेश ने मानो अपने आपसे कहा। पर उस वक्त उसे तनिक भी भान नहीं था कि अत्यंत विनाशकारी परिस्थितियों में उनकी भेंट होगी, वह भी कुछ घंटों के भीतर ही।

सन् 2041 में भारत की वाणिज्यिक राजधानी होने के नाते मुंबई को भारत के सभी शहरों में नंबर-दो का खिताब प्राप्त था। मुंबईवाला कभी भी नंबर-एक खिताब की परवाह नहीं करता; क्योंकि नंबर-एक की हैसियत राष्ट्र की राजधानी होने के नाते दिल्ली के लिए आरक्षित थी, बल्कि मुंबईवाला तो ऐसे शहर में होने का गर्व महसूस करता था जो राजनीतिक दखलंदाजी, अफवाहों, हिंसा और परिवर्तन-शीलता से मुक्त है, जो नंबर-एक रैंक के साथ जुड़ी रहती है। मुंबईवाला गर्व से यह बात कह सकता था कि मुंबई की स्थिरता और कार्य-संस्कृति पूरे भारत में बेजोड़ थी। इन्हीं खूबियों के कारण ही वह भारी भीड़, गंदी बस्तियों और शोरगुल (कोलाहल) को भी अनदेखा करने को तैयार था, और ऐसा करते-करते वह खुद भी आत्म-संतुष्टि के खतरे का सामना करने लगा था।

इसी आत्म-संतुष्टि के कारण ही किसी को कभी आभास ही नहीं हुआ कि शहर जिंदा रहने की सभी हदें पार कर चुका है। कोई गणितज्ञ कह सकता था कि स्थिति अब विनाश के सिद्धांत का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर रही थी : अब यह कगार के निकट था। दुर्भाग्य और विध्वंस अब अवश्यंभावी थे। कोई चिकित्सक शहर की दशा की तुलना मधुमेह के रोगी से कर सकता था, जो उच्च रक्तचाप और कमजोर दिल से पीड़ित हो, लेकिन अपने खान-पान को नियंत्रित करने और दवाइयाँ लेने की सलाह पर कोई ध्यान न देता हो।

□

पर न तो गणितज्ञ और न ही चिकित्सक भविष्यवाणी कर सकते थे कि विनाश कब और कैसे हो। इसलिए जब 10 अक्तूबर, 2041 को शहर का अंत आया भी तो इसमें उस दिन का कोई खास हाथ नहीं था।

उस विनाशलीला की शुरुआत बेहद मामूली सी घटना से हुई, जो राजेश के कफ परेड स्थित उसके दफ्तर में घुसने के कुछ देर बाद घटी। सुबह साढ़े नौ बजे से कुछ मिनट ही ऊपर हुए होंगे। राजेश ने एक चिट्ठी डिक्टेट करनी शुरू ही की थी कि मशीन ने काम करना बंद कर दिया। तभी उसे महसूस हुआ कि बत्तियाँ और एयर कंडीशनर भी बंद हो चुके थे।

बिजली गुल हो जाना असामान्य बात तो नहीं, पर अप्रत्याशित जरूर थी; लेकिन बिजली गुल होते ही जेनरेटर चालू हो जाता था कि ऑफिस का काम चलता रहे; पर जेनरेटर भी चालू नहीं हुआ यानी कुछ ज्यादा गंभीर

होनेवाला था।
''संभवत: शॉर्ट सर्किट होगा, मुझे देखने दो।'' राजेश का सहकर्मी गुरबक्श सिंह बोल उठा। वह बिजली तथा यांत्रिक उपकरणों का काम जानता था।

जब सिंह दौड़ गया तो राजेश भी बाहर गलियारे में निकल आया। तुरंत ही उसने धुएँ की गंध महसूस की। हालाँकि धुएँ का पता लगानेवाले अत्याधुनिक उपकरण खामोश थे। वे उपकरण कुछ घटिया किस्म के थे और उन्हें कभी जाँचा भी नहीं गया था। उस दिन घटी घटनाओं से साफ हो गया था कि वे उपकरण भ्रष्टाचार की घनी होती झाड़ियों के केवल मामूली से प्रतिनिधि थे। कई चीजें उस वक्त काम नहीं करतीं जब उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है।

परंतु राजेश ने अपनी नाक का भरोसा किया और भगदड़ शुरू होने से पहले ही इमारत से बाहर निकल जाने का फैसला कर लिया। लिफ्ट को छोड़कर राजेश सीढ़ियों से भागता हुआ नीचे उतर आया। उस फर्म में काम शुरू करने के बाद यह पहला मौका था जब वह चौदहवीं मंजिल से सीढ़ियों के रास्ते नीचे उतरा था। नीचे उतरते-उतरते धुआँ घना हो गया था। लेकिन फिर भी वह बिल्डिंग से सुरक्षित बाहर निकल आया। पर जैसे ही वह बिल्डिंग से बाहर आया, उसके सामने एक अद्‍भुत नजारा था। उसे चारों ओर बनी ऊँची-ऊँची इमारतों के बीच-बीच में लाइन से झुग्गियाँ बनी हुई दिखाई दीं। भला हो गंदी बस्तियों की बेरोक-टोक बसावट का, कुछ झुग्गियों में, जो गैर-कानूनी रूप से बिजली चुराते थे, शॉर्ट सर्किट के कारण आग लग गई थी। आग की लपटें एक इमारत से दूसरी इमारत तक ऐसे फैल रही थीं जैसे दीवाली की रात में पटाखों की लड़ियाँ जलती हैं। राजेश के दफ्तरवाली इमारत समेत कई गगनचुंबी इमारतें आग की लपटों में घिरी हुई थीं, जबकि कई अन्य इमारतें आग से घिरनेवाली ही थीं।

□

राजेश भौचक्का-सा अग्निलीला को देख रहा था। जंगल की आग जैसे एक के बाद एक पेड़ों को लीलती जाती है वैसे ही यह आग भी एक-एक कर झुग्गी-बस्तियों को लीलती जा रही थी। जंगल की आग भी पेड़ों को इतनी जल्दी नहीं जलाती होगी जितनी तेजी से यह आग झुग्गियों को जला रही थी; क्योंकि झुग्गियाँ बनी ही थीं तेजी से आग पकड़नेवाली सामग्रियों से। किसी ने भी झुग्गीवासियों को इस खतरे के बारे में चेताने की जरूरत नहीं समझी थी।

'अभी तक दमकलवाले क्यों नहीं आए'—राजेश ने सोचा। कुछ खाली जगहों पर लोगों की भारी भीड़ लग गई थी। इक्कीसवीं सदी के मध्य में संचार व्यवस्था इतनी उन्नत तो होगी ही कि अग्निशामक उपकरणों को कुछ मिनटों में लाया जाए। दमकलवालों के न पहुँचने का कारण वह नहीं जानता था, अनेक परिस्थितियों के कारण देरी हो रही थी—अपर्याप्त पूर्व सावधानियों के कारण टेलीफोन लाइनें तोड़ दी गई थीं। एक आदमी मोटरसाइकिल दौड़ाकर दमकल केंद्र पहुँचा तो स्वागत डेस्क खाली पड़ा था। कर्मचारियों को इकट्ठा करने और अग्निकांड स्थल तक रवाना होते-होते सड़कों पर जबरदस्त ट्रैफिक हो गया था। और फिर जब दमकल की गाड़ियाँ आग से घिरी सबसे नजदीकी इमारत तक पहुँचीं और आग बुझाने लगीं तो उन्हें पता चला कि उनके पास पानी बहुत कम है।

नागरिक व्यवहार के नियमों के बारे में माना जाता है कि इन्हें सामाजिक ताने-बाने की रक्षा के उद्देश्य से गढ़ा गया है। पर एक भ्रष्ट समाज में उनकी भूमिकाएँ अलग हो जाती हैं। प्रत्येक नियम के लिए 'क' जैसे किसी व्यक्ति की तरफ से काररवाई जरूरी होती है। पर 'क' अपने कर्तव्य से बचना चाहता है और वह इसकी कीमत चुकाने को भी तैयार है। लेकिन यह कीमत उस खर्च से कम होती है जो 'क' को नियम का पालन करने में उठाना पड़ता। 'क' द्वारा चुकाई गई कीमत अधिकारी 'ख' की जेब में जाती है। अगर नियम का पालन होता तो शायद 'ख' को कुछ न मिलता। एक तरह नियम तोड़ने से 'क' और 'ख' दोनों का फायदा होता है और जो भी नुकसान होता है

वह समाज को होता है; और आज समाज को कीमत चुकानी पड़ रही थी—और कीमत भी एक थी।

मंत्रालय की पाँचवीं मंजिल पर अपने कार्यालय से मुख्यमंत्री असहाय-से अग्निकांड को देख रहे थे। उन्होंने नागरिक प्रशासन और मंत्रिमंडल की आपातकालीन बैठक बुलाई थी। पर बहुत कम लोग ही आ सके, क्योंकि हर कोई आपातस्थिति से निबटने में लगा था या मीडिया को अपनी सफाई दे रहा था।

''मैं हेलीकॉप्टर से हवाई सर्वे करूँगा।'' मुख्यमंत्री ने घोषणा की। मंत्रालय भवन की छत पर एक हेलीकॉप्टर उनके लिए हमेशा तैयार रहता था। मुख्यमंत्री का पी.ए. चालक दल को सावधान करने छत पर दौड़ गया।

''क्या कोई मेरे साथ आ रहा है?'' हेलीकॉप्टर में सवार होने से पहले मुख्यमंत्री ने पूछा।

सभी ने अपने हाथ उठा दिए; क्योंकि सभी सोच रहे थे कि मुख्यमंत्री हेलीकॉप्टर से भाग जाएँगे, इसलिए हर कोई तैयार हो गया।

''परंतु मैं इस उड़ान की सलाह नहीं दूँगा।'' पायलट ने कहा, ''लपटें आसमान तक ऊँची उठ रही हैं और अगर हमारी ईंधन की टंकी आग...''

''पर मुझे यह खतरा उठाना पड़ेगा, चलो आओ! जब तक मौका है, आओ चलें।''

अब मुख्यमंत्री के साथ केवल आधे लोग ही आए। पायलट की चेतावनी से शेष के होश उड़ गए। हेलीकॉप्टर दक्षिण मुंबई के ऊपर एक सुरक्षित ऊँचाई पर उड़ान भर रहा था। नीचे जहाँ तक नजर जाती थी, लाल-नारंगी लपटों का ही नजारा था। इन लपटों के बीच से ही लोगों की भीड़ उत्तर दिशा की ओर भागी जा रही थी। लेकिन आग की रफ्तार लोगों से तेज थी। झुग्गी-बस्तियों के रास्ते आग एक के बाद एक इमारतों को आगोश में लेती जा रही थी। रेलगाड़ियाँ पटरियों पर असहाय-सी खड़ी थीं और बसें यहाँ-वहाँ जल रही थीं।

''इन परिस्थितियों में फायर ब्रिगेड क्या कर सकता है? यह तो चार्ज ऑफ द लाइट ब्रिगेड है।'' मुख्यमंत्री ने कहा, जिन्हें मराठी व अंगे्रजी साहित्य की अच्छी समझ थी। ''यह तो रोम जलने के समान है, जब नीरो बाँसुरी बजा रहा था। मैं नीरो से कुछ बेहतर नहीं हूँ।''

''पर श्रीमान, आप खतरों का सामना कर स्थिति का जायजा तो ले रहे हैं।'' एक चापलूस ने कहा।

''नहीं, मैं भी सारे समय खिलवाड़ ही करता रहा। केवल मैं ही नहीं, मेरे पूर्ववर्ती मुख्यमंत्री भी खिलवाड़ करते रहे और यह महान् शहर बद-से-बदतर होता गया। हम ऐसी समस्याओं का लीपा-पोतीवाला समाधान ढूँढ़ते रहे जिन पर नए दृष्टिकोण से सोचने की जरूरत थी। हमारी सभी स्वार्थ नीतियाँ सुनिश्चित करती गईं कि शहर का ज्यादा-से-ज्यादा नुकसान हो। अब मुंबई ने भी जवाब दे दिया : अब और नहीं, बस और नहीं। पर अब बहुत देर हो चुकी है।'' मुख्यमंत्री ने चालक दल को निर्देश दिया कि हेलीकॉप्टर को मंत्रालय की छत पर वापस उतारा जाए। आग की लपलपाती लपटों के बीच हेलीकॉप्टर को उतारना बेहद दु:साहस का कार्य था। कार्यालय पहुँचने पर मुख्यमंत्री को वायरलेस संदेश मिले कि आग दादर तथा वडाला अन्य उपनगरीय इलाकों तक पहुँच गई है और उसका आगे बढ़ना भयावह रूप से जारी था। भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर को खाली करा लिया था और उसके रिएक्टरों को न्यूट्रलाइज कर दिया गया। मुख्यमंत्री को जल्द ही मंत्रालय भी खाली करना था।

चार बजे शाम तक करीब 80 प्रतिशत मुंबई आग की भेंट चढ़ चुकी थी या जल रही थी और किस्मत से बच गया असहाय जनसमूह बांद्रा से आगे उत्तर या पूरब की ओर बढ़ने के लिए हाथ-पाँव मार रहा था। लेकिन राजेश इस भेड़चाल में शामिल नहीं हुआ। उसमें न तो इच्छाशक्ति थी और न ही उत्साह कि वह भी भाग-दौड़ करे।

उसने चुपचाप मच्छीमार नगर का रास्ता पकड़ा, जो उस वक्त निर्जन लग रहा था। चारों ओर काफी गरम और उमस भरा माहौल था, लेकिन खाड़ी से आती ठंडी हवा उसे काफी राहत दे रही थी। पहली बार उसने मछुआरों की

बस्ती का शुक्रिया अदा किया—इसलिए कि उसके कारण ही खाड़ी का वह भाग सुरक्षित रह पाया था। उसने कितनी बार इच्छा की कि काश, वह भी समुद्र में मछुआरों की किसी नौका में सवार होता!

उसे महसूस हुआ जैसे उस पर बेहोशी छाती जा रही है। पर यह किसी भयानक सपने की शुरुआत नहीं थी बल्कि हकीकत थी। इससे बचने का कोई रास्ता न था। मेढक की तरह वह भी इस महान् शहर के साथ मर जानेवाला था। तभी ठंडी हवा के तेज झोंके से उसकी बेहोशी दूर हो गई। धरती पर आग और उन्माद के मुकाबले यह स्वर्ग हो सकता था; पर तभी उसे अपने ऊपर झाँकता एक जाना-पहचाना चेहरा दिखाई दिया।

''हमने तुम्हें समय पर ढूँढ़ लिया!'' धोंदिबा ने कहा, ''तुम काफी दूर जा चुके थे, खुशकिस्मत रहे थे कि मैं कुछ भूले-बिसरे दस्तावेज लेने वापस आया था—मुंबई के बारे में अपने पुराने रिकॉर्ड लेने।''

यह दिन का कौन सा समय था? मुंबई का क्या हुआ? राजेश के मन में घुमड़ रहे सवालों के जवाब तुरंत ही मिल गए। सूरज अपनी पूरी गरिमा के साथ डूब रहा था। दक्षिण व पूर्व दिशा में देखा तो मुंबई आग की लपटों में घिरी नजर आई। इस मरते हुए शहर की आखिरी शाम का सूरज डूब रहा था।

जैसे उसके मन में उठ रहे विचारों को पढ़ते हुए धोंदिबा ने उत्तर दिया, ''मुंबई को अभी से खारिज मत करो। फिलहाल हम वापस मच्छीमार नगर जा रहे हैं, हमारी प्राचीन बस्ती। लेकिन इसकी राख से नवनिर्माण करते हुए हमें इतिहास से सबक सीखना होगा और पुरानी गलतियों से बचना होगा।''

''भगवान् करे ऐसा ही हो!'' राजेश ने मानो अपने आपसे कहा। निष्ठावान् मुंबईवालों की तरह उसे भी तमाम समस्याओं के बावजूद अपने शहर से प्यार था। धोंदिबा की तरह उसने भी एक आशावादी सपना सँजोया था। एक तरह से शहर को पुनर्जन्म का अवसर मिला था। नष्ट होने से वह अपनी तमाम समस्याओं से छुटकारा पा गया था।

राजेश यह भी जानता था कि वह दु:स्वप्न दोबारा कभी नहीं आएगा।

❑

3

साहसिक कार्य

पुणे-मुंबई मार्ग पर जीजा माता एक्सप्रेस सरपट दौड़ी जा रही थी। उसकी रफ्तार डेक्कन क्वीन से भी तेज थी । पुणे के बाहरी इलाकों में कोई औद्योगिक क्षेत्र नहीं था। चालीस मिनट के भीतर ही पहला स्टॉप लोनावाला आ गया। उसके बाद पड़नेवाला घाट भी उसके लिए जाना-पहचाना था। करजत में अल्प विराम के बाद ट्रेन और भी तेजी से दौड़ने लगी। और कल्याण स्टेशन भी दहाड़ते हुए पार कर गई।

रेलगाड़ी में सफर कर रहे प्रो. गाइतोंडे का दिमाग रेलगाड़ी से भी तेज चल रहा था। मुंबई में एक कार्ययोजना को अंजाम देने का खाका उनके मन में बन चुका था। एक इतिहासकार के नाते वे महसूस करते थे कि इस पर उन्हें पहले ही सोचना चाहिए था। योजना के अनुसार उन्हें किसी बड़े पुस्तकालय में जाकर इतिहास की किताबों को खँगालना था। वही सबसे पक्का तरीका था, यह पता लगाने का कि किन रास्तों से गुजरकर समाज आज के हालात में पहुँचा है। अंत में उनकी योजना थी पुणे लौटकर राजेंद्र देशपांडे के साथ विस्तार से बातचीत करने की, जो निश्चित तौर पर घटनाओं को समझने में उनकी मदद कर सकता था।

यानी वे यह मानकर चल रहे थे कि इस दुनिया में राजेंद्र देशपांडे नाम का कोई व्यक्ति है! एक लंबी सुरंग के पार रेलगाड़ी रुक गई। यह 'सरहद' नाम का कोई स्टेशन था। एक वरदीधारी एंग्लो-इंडियन रेलगाड़ी में यात्रियों के परमिट जाँच रहा था।

''यहाँ से ब्रिटिश राज शुरू होता है। मुझे लगता है कि आप पहली बार जा रहे हैं?'' साथ बैठे खान साहब ने पूछा।

''हाँ।'' उनका जवाब सचमुच में ठीक था। गंगाधर पंत इससे पहले कभी मुंबई नहीं आए थे। उन्होंने भी खान साहब से सवाल किया, ''और खान साहब, आप पेशावर कैसे जाएँगे?''

''यह रेलगाड़ी विक्टोरिया टर्मिनस तक जाती है। मैं आज रात ही सेंट्रल (मुंबई) से फ्रंटियर मेल पकड़ूँगा।''

''यह कहाँ तक जाती है और किस रास्ते से जाती है?''

''मुंबई से दिल्ली, फिर लाहौर और अंत में पेशावर। बहुत लंबा सफर है। पेशावर तक मैं परसों पहुँचूँगा।''

उसके बाद खान साहब देर तक अपने कारोबार के बारे में बताते रहे। गंगाधर पंत को भी उनकी बातें सुनने में आनंद आ रहा था। इस तरह से उन्हें भारत के जीवन के बारे में जानकारी मिल रही थी, जो बिलकुल अलग था।

अब रेलगाड़ी उपनगरीय रेल यातायात के बीच से गुजर रही थी। रेलगाड़ी के नीले डिब्बों के पीछे ये शब्द लिखे थे—'जी बी एम आर'।

''ग्रेटर बॉम्बे मेट्रोपोलिटन रेलवे।'' खान साहब ने बताया, ''देखिए, प्रत्येक डिब्बे पर छोटा सा यूनियन जैक बना हुआ है। यह हमें याद दिलाता है कि हम ब्रिटिश राज में हैं।''

दादर के बाद रेलगाड़ी की गति धीमी पड़ने लगी। आखिरी स्टेशन वीटी पर जाकर रेलगाड़ी रुक गई। स्टेशन असाधारण रूप से साफ-सुथरा दिख रहा था। स्टेशन पर काम करनेवाले कर्मचारियों में ज्यादातर एंग्लो-इंडियन और पारसी लोग थे। कुछ एक ब्रिटिश अफसर भी थे।

स्टेशन से बाहर निकलने पर गंगाधर पंत ने स्वयं को एक शानदार इमारत के सामने पाया। इमारत पर लिखे अक्षर उन लोगों को उस इमारत के बारे में बताते थे जो मुंबई की इस पहचान से अपरिचित थे—

ईस्ट इंडियन हाउस
हेडक्वार्टर्स ऑफ दि
ईस्ट इंडिया कंपनी।

इस तरह के सदमों के अभ्यस्त हो चुके प्रो. गाइतोंडे को इसकी जरा भी उम्मीद नहीं था कि सन् 1857 की घटनाओं के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी तो अपना बोरिया बिस्तर बाँधकर जा चुकी थी—कम-से-कम इतिहास की पुस्तकों में तो यही लिखा है। लेकिन फिर भी कंपनी यही थी। न केवल थी बल्कि फल-फूल भी रही थी। यानी इतिहास ने दूसरा ही रास्ता अपना लिया था, वह भी शायद 1857 से पहले—ऐसा कब और कैसे हुआ? यही तो उन्हें पता लगाना था।

जिस सड़क पर वे चल रहे थे उसे हॉर्न बी रोड नाम से पुकारा जाता था। उस सड़क पर बनी दुकानें और कार्यालयों की इमारतें भी बिलकुल अलग दिख रही थीं। ओ.सी.एस.बिल्डिंग की मीनार विक्टोरियाई इमारतों से ऊँची उठी थी। हैंडलूम हाउस की इमारत भी नहीं थी। उसके बजाय वुट्स और वुलवर्थ डिपार्टमेंट स्टोर थे, लॉएड्स बर्क्लेज और अन्य ब्रिटिश बैंकों के शानदार कार्यालय थे, ठीक वैसे ही जैसे इंग्लैंड में किसी शहर के रईसाना इलाके में होते हैं।

होम स्ट्रीट के साथ वे दाईं ओर घूम गए तथा फोर्ब्स बिल्डिंग में प्रवेश कर गए।

वहाँ बैठे अंग्रेज रिसेप्शनिस्ट से उन्होंने कहा, ‘‘मैं विनय गाइलना से मिलना चाहता हूँ।’’

रिसेप्शनिस्ट ने टेलीफोन की सूची में ढूँढ़ा, स्टाफ लिस्ट खँगाली और फर्म की तमाम शाखाओं में काम करनेवाले कर्मचारियों की डायरेक्टरी भी छान मारी। अंत में सिर हिलाते हुए उसने कहा, ‘‘मुझे खेद है कि यह नाम यहाँ या हमारी किसी शाखा में नहीं मिला। क्या आपको पूरा विश्वास है कि ये हमारे यहाँ ही काम करते हैं?’’

यह भी एक आघात था, हालाँकि पूरी तरह अप्रत्याशित नहीं था। अगर वे इस दुनिया में स्वयं मृत होते तो इस बात की क्या गारंटी थी कि उनका पुत्र जीवित ही होगा। सचमुच, हो सकता है कि वह पैदा ही न हुआ हो!

रिसेप्शनिस्ट को सभ्यता के साथ धन्यवाद देते हुए वे बाहर आ गए। यह उनकी चारित्रिक विशेषता थी। उन्हें रुकने या ठहरने की चिंता नहीं होती थी। इस समय उनकी मुख्य चिंता थी कि किसी तरह एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय का रास्ता पकड़ा जाए और इतिहास की इस पहेली को सुलझाया जाए। रेस्टोरेंट में जल्दी-जल्दी दोपहर का भोजन कर उन्होंने टाउन हॉल का रुख किया।

उन्हें यह देखकर बड़ी राहत महसूस हुई कि टाउन हॉल अपनी जगह मौजूद था और उसके भीतर पुस्तकालय भी। वाचनालय में जाकर उन्होंने कर्मचारी को इतिहास की पुस्तकों की सूची थमा दी, जिसमें उनकी लिखी पुस्तकें भी शामिल थीं।

जल्द ही उनकी लिखी पुस्तकों के पाँच खंड उनकी मेज पर आ गए। उन्होंने पुस्तकें पढ़नी शुरू कीं। पहले खंड में सम्राट् अशोक के काल तक का इतिहास था, दूसरे खंड में समुद्रगुप्त तक, तीसरे में मुहम्मद गोरी तक तथा चौथे खंड में औरंगजेब की मौत का इतिहास था। इस काल तक का इतिहास तो वही था जिसे वह जानते थे। हाँ, पाँचवें खंड में दर्ज इतिहास कुछ अलग ही था।

पाँचवें खंड को दोनों छोरों से पढ़ते हुए गंगाधर पंत जब बीच में पहुँचे तो उन्हें वह दौर मिल ही गया जहाँ से इतिहास ने बिलकुल अलग मोड़ ले लिया था।

पुस्तक के उस पृष्ठ पर पानीपत की लड़ाई का जिक्र था और यह लिखा गया था कि उस लड़ाई को मराठों ने बड़े आराम से जीत लिया था। अब्दाली को रौंद डाला गया था। वह जान बचाकर भागा तो विजयी मराठा सेना ने

सदाशिव भाऊ और उनके नौजवान भतीजे विश्वासराव के नेतृत्व में काबुल तक उसका पीछा किया।

पुस्तक में लड़ाई के जमीनी दाँवपेंच के स्तर तक का वर्णन नहीं था। बल्कि इस लड़ाई के परिणाम का भारत में सत्ता-संघर्ष पर असर की विस्तार से चर्चा की गई थी। गंगाधर पंत बड़ी उत्सुकता से पढ़ रहे थे। लेखन शैली निस्संदेह उन्हीं की थी। पर वे उक्त वर्णन को पहली बार पढ़ रहे थे। उस लड़ाई में मिली जीत से मराठों के केवल हौसले ही बुलंद नहीं हुए, बल्कि उत्तर भारत में उनकी सत्ता भी स्थापित हो गई। बाहर खड़ी सारे घटनाक्रम को देख रही ईस्ट इंडिया कंपनी को भी लड़ाई के नतीजे समझ में आ गए और उसने अपनी विस्तार योजनाओं को अस्थायी तौर पर ताक पर रख दिया।

लड़ाई के बाद पेशवाओं के बीच भाऊ साहब और विश्वासराव का रुतबा काफी बढ़ गया। सन् 1780 में विश्वासराव ने पिता की सत्ता विरासत में हासिल की। गड़बड़ी फैलानेवाले दादा साहब को नेपथ्य में फेंक दिया गया, जहाँ से उन्होंने आखिरकार सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया।

ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए निराशाजनक बात यह थी कि मराठा शासक विश्वासराव के आगे उनकी एक नहीं चलती थी। विश्वासराव एवं उनके भाई माधवराव ने वीरता और राजनीतिक सूझ-बूझ को मिलाकर सुनियोजित तरीके से समूचे भारत पर अपना सिक्का जमा लिया। कंपनी का प्रभाव अपने यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों—पुर्तगालियों व फ्रांसीसियों—की तरह मुंबई, कोलकाता और चेन्नई के निकटवर्ती इलाकों तक ही सिमटकर रह गया।

राजनीतिक कारणों से पेशवाओं ने दिल्ली में मुगलों के कठपुतली शासन को जारी रखा। उन्नीसवीं सदी में पुणे में बैठे असली शासकों को यूरोप में तकनीकी युग के उदय होने के महत्त्व का भान हो गया था। उन्होंने भी विज्ञान व तकनीकी विकास के लिए अपने केंद्र स्थापित किए। यहाँ पर ईस्ट इंडिया कंपनी को अपना प्रभाव बढ़ाने का अवसर नजर आया। उन्होंने भी सहायता और विशेषज्ञता उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा। उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया; लेकिन केवल इनके केंद्रों को आत्मनिर्भर बनाने तक।

बीसवीं सदी में पश्चिम से प्रेरित और भी ज्यादा परिवर्तन आए। भारत ने भी लोकतंत्र को अपना लिया था। तब तक पेशवा भी अपना सामर्थ्य खो बैठे थे और उनकी जगह लोकतांत्रिक तरीके से चुने गए निकायों ने ले ली थी। दिल्ली की सल्तनत इस संक्रमण के दौर में बच गई थी। इसका बड़ा कारण यह था कि सल्तनत का कोई विशेष प्रभाव नहीं था। दिल्ली के शहंशाह की हैसियत रबड़ की मुहर से ज्यादा नहीं रह गई थी, जो केंद्रीय संसद् द्वारा भेजी गई अनुशंसाओं पर लगाई जाती थी।

जैसे-जैसे गंगाधर पंत पढ़ते गए वैसे-वैसे वे उस भारत की सराहना करने लगे जिसे उन्होंने देखा था। यह एक ऐसा देश था जो कभी भी श्वेत लोगों का गुलाम नहीं रहा, बल्कि उसने अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा और जानता था कि स्वाभिमान क्या चीज है। अपनी मजबूत स्थिति और विशुद्ध व्यावसायिक कारणों से भारत ने अंग्रेजों को मुंबई में इस उपमहाद्वीप के लिए इकलौती चौकी (आउटपोस्ट) बनाने की अनुमति दे रखी थी। सन् 1908 में की गई एक संधि के अनुसार यह पट्टा सन् 2001 तक चलना था।

गंगाधर पंत का माथा ठनक गया। कौन सा देश असली था—जिसे वह जानता था—वह या वह, जिसे वह चारों ओर देख रहे थे।

पर साथ ही उन्हें लगा कि उनकी तमाम जाँच-पड़ताल अधूरी थी। मराठों ने लड़ाई कैसे जीती? जवाब जानने के लिए जरूरी था कि वे लड़ाई के विवरण को ही देखें।

उन्होंने फिर अपने सामने पड़ी किताबों और पत्रिकाओं को खँगालना शुरू किया। अंत में पुस्तकों के बीच उन्हें एक ऐसी पुस्तक मिली, जिसने उन्हें कुछ सुराग दिया। यह किताब थी—भाउसाहेबबांची बखर (बखार)।

हालाँकि ऐतिहासिक सबूतों के लिए वे कभी-कभार ही बखारों पर भरोसा करते थे, पर उन्हें पढ़ने में उन्हें आनंद आता था। कभी-कभार चित्रों-चार्टों, लेकिन मनमाने तरीके से लिखे गए विवरणों तले दबे सच के अंकुर भी मिल जाते। ऐसा ही सच का एक अंकुर उन्हें मात्र तीन पंक्तियों के विवरण में मिला कि विश्वासराव मौत के कितने करीब पहुँच गए थे—

''और फिर विश्वासराव को भीड़ के करीब ले गए। वहाँ पर अभिजात वर्ग के सैनिक लड़ रहे थे। विश्वासराव ने उन पर धावा बोल दिया। उस दिन भगवान् उन पर दयालु था। एक गोली सनसनाती हुई कान को छूकर निकल गई, तिल बराबर भी गोली इधर-उधर होती तो उनकी जान जा सकती थी।''

कब शाम के आठ बज गए, पता ही नहीं चला। लाइब्रेरियन ने बड़ी शराफत से प्रोफेसर को याद दिलाया कि लाइब्रेरी बंद की जा रही है। तभी जाकर उनका ध्यान भंग हुआ। उन्होंने चारों ओर नजर दौड़ाई। बड़े से वाचनालय में केवल वही रह गए थे।

''ओह! माफी चाहता हूँ श्रीमान, पर आपसे प्रार्थना है कि इन पुस्तकों को यहीं रखी रहने दें, ताकि कल सुबह मैं दोबारा इन्हें पढ़ सकूँ। सुबह लाइब्रेरी कितने बजे खुलती है?''

''सुबह आठ बजे श्रीमान!'' लाइब्रेरियन ने मुसकराकर बताया।

धुन का पक्का अन्वेषक उसके सामने खड़ा था।

मेज छोड़ने से पहले प्रोफेसर ने कुछ नोट अपनी दाईं जेब में डाल लिये। अनजाने में ही उन्होंने बखर को अपनी बाईं जेब में ठूँस लिया।

एक गेस्टहाउस में उन्हें रहने का ठिकाना मिल गया और उन्होंने थोड़ा सा भोजन किया। खाना खाकर वे आजाद मैदान की ओर टहलने चले गए।

मैदान में उन्होंने देखा कि लोगों की भीड़ एक पंडाल की ओर चली जा रही है। आदत से मजबूर प्रो. गाइतोंडे के कदम भी पंडाल की ओर बढ़ चले। गरम भाषण चल रहा था, हालाँकि लोगों का आना-जाना जारी था; लेकिन प्रो. गाइतोंडे का ध्यान श्रोताओं की भीड़ की तरफ नहीं था। वे तो मंत्रमुग्ध से मंच की ओर ही ताके जा रहे थे। मंच पर एक मेज और एक कुरसी थी, जो खाली पड़ी थीं।

'यह क्या? अध्यक्षीय पद खाली पड़ा है।' इस दृश्य ने उन्हें भीतर तक हिला दिया। फिर जैसे लोहे का टुकड़ा चुंबक की ओर खिंचा चला जाता है वैसे ही वे भी कुरसी की ओर तेजी से खिंचे चले गए। वक्ता भाषण देते-देते बीच में ही रुक गया, जैसे उसे साँप सूँघ गया हो। लेकिन श्रोतागण चीखने-चिल्लाने लगे—

''कुरसी खाली करो!''

''इस भाषण का कोई चेयरमैन नहीं।''

''मंच से उतरिए, जनाब!''

''यह कुरसी केवल नाम की है, क्या तुम जानते नहीं?''

क्या बेवकूफी है? क्या किसी ने कभी ऐसा आम भाषण सुना है जिसमें कोई अध्यक्ष न हो? प्रो. गाइतोंडे ने माइक सँभाला और अपने विचार प्रकट करने लगे, ''देवियो और सज्जनो, चेयरमैन के बगैर भाषण वैसे ही है जैसे डेनमार्क के राजकुमार के बगैर शेक्सपीयर का 'हेमलेट'। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि...''

लेकिन दर्शक सुनने के मूड में बिलकुल नहीं थे।

''हमें कुछ मत बताओ। अध्यक्ष की टीका-टिप्पणी, धन्यवाद ज्ञापन और लंबे-लंबे परिचय सुनते-सुनते हम तंग आ चुके हैं!'' वे चिल्लाए।

''हम केवल वक्ता को सुनना चाहते हैं।''
''हम पुरानी परंपरा को बहुत पहले ही छोड़ चुके हैं।''
''मंच खाली रखिए, प्लीज!''

लेकिन गंगाधर पंत को 999 सभाओं में बोलने का अनुभव था और वे पुणे के गरममिजाज श्रोताओं को भी सफलतापूर्वक झेल चुके थे। उन्होंने बोलना जारी रखा।

जल्द ही उन पर टमाटर, अंडे और अन्य सड़ी-गली चीजें बरसने लगीं; पर वे बड़ी बहादुरी के साथ इस गड़बड़ी को ठीक करने में लगे रहे। अंत में श्रोताओं की भीड़ मंच पर चढ़ आई और उन्हें जबरन मंच से नीचे उतार दिया।

और फिर भीड़ के बीच में गंगाधर पंत कहीं भी नजर नहीं आ रहे थे।

''मुझे केवल यही सब राजेंद्र को बताना है। मैं केवल यही जानता हूँ कि मैं सुबह के वक्त आजाद मैदान में पाया गया था। लेकिन तब मैं वापस उस दुनिया में था, जिससे मैं परिचित था। तब फिर मैंने वे दो दिन कहाँ बिताए, जब मैं वहाँ से लापता था?''

इस कहानी से राजेंद्र भी भौचक्का रह गया। उसे तुरंत कोई जवाब नहीं सूझा।

''प्रोफेसर, ट्रक से टकराने से ठीक पहले आप क्या कर रहे थे?'' राजेंद्र ने पूछा।

''मैं महाविपत्ति के सिद्धांत पर विचार कर रहा था और सोच रहा था कि इतिहास पर इसका क्या असर होगा।''

''ठीक मैंने भी ऐसा ही सोचा था।'' राजेंद्र ने मुसकराकर कहा।

''इस तरह संतुष्ट भाव से मत मुसकराओ। अगर तुम सोच रहे हो कि केवल मेरा दिमाग चल गया था और मेरी कल्पना बेकाबू होकर दौड़ लगा रही थी तो देखो।'' इतना कहकर प्रो. गाइतोंडे ने सबूत पेश किया—पुस्तक से फाड़ा गया पन्ना।

उस छपे हुए पृष्ठ को राजेंद्र ने पढ़ा और पढ़ते-पढ़ते उसके चेहरे का रंग बदलने लगा। चेहरे से मुसकराहट गायब हो गई। उसकी जगह संजीदगी छा गई।

अब गंगाधर पंत की बात वजनदार हो गई थी। ''लाइब्रेरी से निकलते वक्त मैंने बखर अपनी जेब में ही ठूँस लिया था। खाने का बिल चुकाते वक्त मुझे इस गलती का अहसास हुआ। मेरा इसे अगली सुबह लौटा देने का इरादा था; पर ऐसा लगता है कि आजाद मैदान में संभ्रांत जनों की भीड़ में धक्का-मुक्की के दौरान पुस्तक गायब हो गई, केवल यही फटा पृष्ठ बच गया। खुशकिस्मती से इसी पन्ने पर सबसे मुख्य सुराग है।''

राजेंद्र ने पन्ना दोबारा पढ़ा। पन्ने पर लिखा था कि किस तरह विश्वासराव गोली से बाल-बाल बच गए और किस तरह मराठा सेना ने इस घटना का अच्छा शकुन मानते हुए लहर का रुख अपने पक्ष में मोड़ दिया।

''और अब इसे देखो।'' गंगाधर पंत ने भाऊ साहब बखर की अपनी प्रति निकाली, जिसमें काम का पृष्ठ पहले से ही खुला हुआ था; उस पर कुछ इस तरह लिखा था—

''...और फिर विश्वासराव अपने घोड़े को भीड़-भाड़वाली जगह पर लाए, जहाँ आभिजात्य वर्ग के सैनिक लड़ रहे थे, और उन्होंने सैनिकों पर धावा बोल दिया, लेकिन उनके काम से ईश्वर नाराज हो गया, एक गोली आकर उन्हें लगी।''

''प्रो. गाइतोंडे, आपने मुझे विचारों की अच्छी-खासी खुराक दे दी है। इस सबूत को देखने से पहले मैं आपके अनुभव को कपोल-कल्पना ही समझ रहा था। लेकिन अब मुझे लगने लगा कि तथ्य कल्पना से भी ज्यादा विचित्र हो सकते हैं।''

''तथ्य! तथ्य क्या है? मैं जानने के लिए मरा जा रहा हूँ।'' प्रो. गाइतोंडे ने कहा।

राजेंद्र ने उन्हें चुप रहने का इशारा किया और कमरे में चहलकदमी शुरू कर दी। वह अत्यंत मानसिक तनाव में लग रहे थे। आखिरकार वे मुड़े और बोले, ''प्रो. गाइतोंडे, मैं आज ज्ञात दो वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर आपके अनुभव का सिर-पैर तलाशने की कोशिश करूँगा। अब यह सच्चाइयों के विषय में आपको संतुष्ट कर पाया या नहीं, आप ही फैसला कर सकते हैं; क्योंकि आप सचमुच में एक अद्भुत अनुभव से गुजरे हैं या यों कहें कि आपने महाविपत्ति का अनुभव किया है तो ज्यादा ठीक होगा।''

''बताओ-बताओ, राजेंद्र, मैं सुन रहा हूँ।'' प्रो. गाइतोंडे ने कहा।

राजेंद्र ने चहलकदमी करते हुए बोलना जारी रखा—

''आपने उस सेमिनार में महाविपत्तिकारी सिद्धांत के बारे में बहुत कुछ सुना है। आइए, इसे पानीपत की लड़ाई पर लागू करके देखें। खुले मैदानों में सैनिकों द्वारा एक-दूसरे से लड़ी गई आमने-सामने की लड़ाइयाँ इस सिद्धांत के शानदार उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। पानीपत में मराठा सेना अब्दाली के सैनिकों का सामना कर रही थी। मराठा सेना और अफगान सेना के बीच कोई बड़ा अंतर नहीं था। उनके अस्त्र-शस्त्र भी बराबरी के थे। इसलिए हार-जीत बहुत कुछ सेना-प्रमुखों की रणनीतियों और सैनिकों के हौसले पर निर्भर थी। जब विश्वासराव, जो पेशवा का बेटा और उत्तराधिकारी भी था, मारा गया तब लड़ाई का पासा ही पलट गया। इतिहास में दर्ज है कि उसका चाचा भाऊ साहब भी भीड़ की ओर दौड़ गया था। उसके बाद वह कहीं नहीं दिखा। उस महत्त्वपूर्ण समय में सेनानायकों के खात्मे से सैनिकों को गहरा धक्का लगा। उनके हौसले पस्त हो गए और उनमें लड़ने की हिम्मत नहीं रही।''

''बिलकुल ठीक, प्रोफेसर! और फटे हुए पृष्ठ पर मुझे आपने जो दिखाया है, वह बताता है कि जब विश्वासराव गोली खाने से बच गए तो लड़ाई का पासा ही पलट गया। इस घटना से पूरा इतिहास ही बदल गया और सैनिकों पर इसका असर भी एकदम उलटा था। उनके हौसले बुलंद हो गए और उनमें लड़ाई लड़ने का नया जोश भर गया, जिससे बहुत बड़ा अंतर आ गया।'' राजेंद्र ने कहा।

''हो सकता है। वाटरलू की लड़ाई के बारे में भी ऐसी ही बातें कही जाती हैं, जिसे नेपोलियन जीत सकता था; लेकिन हम एक अनोखी दुनिया में रहते हैं, जिसका इतिहास भी अनोखा है। 'ऐसा हो सकता था' का विचार अटकलबाजी के लिए तो ठीक है, लेकिन वास्तविकता से इसका क्या लेना-देना!'' गंगाधर ने कहा।

''मैं इसी बात पर आ रहा हूँ। दरअसल, यही चीज मुझे दूसरे बिंदु पर लाती है, जो आपको कुछ आश्चर्यजनक लग सकता है; पर मेहरबानी कर मुझे सुनिए तो!'' राजेंद्र ने कहा।

गंगाधर पंत उत्सुकता के साथ दोबारा सुनने लगे।

''वास्तविकता से आप क्या अर्थ लगाते हैं? हम इसे अपनी संवेदनाओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं या उपकरणों के जरिए अप्रत्यक्ष रूप से। लेकिन क्या यह हमारी दृष्टि तक ही सीमित है? क्या यह अन्य रूपों में प्रकट नहीं हो सकती है?''

''बहुत ही छोटी प्रणालियों—अणुओं और उनके संघटकों पर परीक्षणों से पता चला है कि वास्तविकता अनोखी नहीं हो सकती है। इन प्रणालियों के साथ काम करते हुए भौतिकशास्त्रियों ने कुछ चौंकानेवाली खोज कर डाली। इन प्रणालियों के व्यवहार की कभी भी निश्चित तौर पर भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है, भले ही इन प्रणालियों को चलानेवाले तमाम भौतिक नियम ज्ञात हों।''

''एक उदाहरण लें—मैं किसी स्रोत से एक इलेक्ट्रॉन दागता हूँ। यह कहाँ जाएगा? अगर बंदूक से गोली चलाऊँ किसी भी दिशा में, किसी खास गति के साथ, तो मैं जानता हूँ कि कितने समय बाद गोली कहाँ पर होगी? लेकिन इलेक्ट्रॉन के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती है। यह यहाँ भी हो सकता है, वहाँ भी और कहीं भी। मैं ज्यादा-

से-ज्यादा इसके लिए उदाहरण ही दे सकता हूँ कि किसी खास समय पर यह किसी खास स्थिति में मिलेगा।''

''क्वांटम सिद्धांत में इस निश्चितता का अभाव है। मेरे जैसे अज्ञानी इतिहासकार ने भी इसके बारे में सुना है।'' प्रो. गाइतोंडे ने कहा।

''तो दुनिया की अनेक तसवीरों की कल्पना करें—एक दुनिया में इलेक्ट्रॉन यहाँ मिलता है तो दूसरी में वहाँ। किसी और दुनिया में यह कहीं और मिलता है। एक बार शिक्षक पता लगा ले कि यह कहाँ है! हम जान जाते हैं कि किस दुनिया के बारे में बात हो रही है। लेकिन वे सभी वैकल्पिक दुनिया एक साथ भी मौजूद हो सकती हैं।'' इतना कहकर राजेंद्र चुप हो गया, जैसे अपने विचारों की कवायद कर रहा हो।

''लेकिन क्या इन अनेक दुनियाओं के बीच में भी कोई संबंध है?'' प्रो. गाइतोंडे ने पूछा।

''हाँ भी और नहीं भी! दो दुनियाओं की कल्पना कीजिए। दोनों में एक इलेक्ट्रॉन अणु के नाभिक की परिक्रमा कर रहा है।''

''जैसे कि ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।'' गाइतोंडे ने टोका।

''वैसे नहीं। हमें ग्रह के परिक्रमा-पथ का पता होता है, लेकिन इलेक्ट्रॉन अपनी अनगिनत अवस्थाओं में से किसी एक में परिक्रमा कर सकता है। इन अवस्थाओं का दुनिया को पहचानने में इस्तेमाल किया जा सकता है। एक नंबर की अवस्था में इलेक्ट्रॉन ऊँची ऊर्जा के क्षेत्र में हो सकता है। दूसरे नंबर की अवस्था में यह निम्न ऊर्जा अवस्था में होता है। यह कूदकर ऊँची ऊर्जावाली अवस्था से निम्न ऊर्जा में आता है और विकिरण छोड़ता है या विकिरण इलेक्ट्रॉन को कम ऊर्जावाली अवस्था से ऊँची ऊर्जावाली अवस्था में पहुँचा सकती हैं। ऐसे संक्रमण सूक्ष्मदर्शी प्रणालियों में आम हैं, लेकिन अगर स्थूल स्तर पर ऐसा होने लगा तो क्या हो?'' राजेंद्र ने कहा।

''तुम्हारी बात मेरी समझ में आ गई। तुम यही कहना चाह रहे हो न कि मैं एक दुनिया से दूसरी दुनिया के बीच डोलता रहा?'' गंगाधर पंत ने पूछा।

''हाँ, भले ही यह कपोल-कल्पित लगे, लेकिन यही एक कारण है जो मैं बता सकता हूँ। मेरा सिद्धांत यह है कि विप्लवकारी परिस्थितियाँ दुनिया को आगे बढ़ाने के लिए बुनियादी तौर पर अलग-अलग विकल्प देती हैं। सभी विकल्प सच्चे होते हैं, लेकिन प्रेक्षक एक समय में केवल एक का ही अनुभव कर सकता है।''

''लेकिन इलेक्ट्रॉन की तरह डोलकर तुम दोनों दुनियाओं का अनुभव कर सकते हो, यानी कि अभी तुम इस दुनिया में हो और दूसरी वह जहाँ तुमने दो दिन बिताए। हालाँकि ये अनुभव भी अलग-अलग वक्त पर होते हैं। इन दो दुनियाओं में से एक का इतिहास तो हम सब जानते हैं। दूसरी का इतिहास अलग हो जाता है। यह अलगाव पानीपत की लड़ाई से शुरू हुआ। आप न तो अतीत में गए और न ही भविष्य में। आप वर्तमान में ही थे, पर एक दूसरी दुनिया का अनुभव कर रहे थे। अवश्य ही काल के विभिन्न पड़ावों पर होनेवाले बदलावों के कारण कई और दुनियाओं का भी जन्म हो रहा होगा।''

राजेंद्र द्वारा विस्तार से समझाए जाने के बाद गंगाधर ने वह सवाल पूछा जो उन्हें सबसे ज्यादा परेशान करने लगा था, ''लेकिन मैं इस तरह से डोला ही क्यों?''

''अगर मैं इसका जवाब जानता तो शायद एक समस्या सुलझा चुका होता! दुर्भाग्य से विज्ञान में अनेक अनसुलझे सवाल हैं और यह उन्हीं में से एक है। लेकिन इससे मेरा अनुमान लगाना बंद नहीं होगा।'' राजेंद्र ने मुसकराते हुए कहा।

''लेकिन इस तरह एक दुनिया से दूसरी में आने-जाने के लिए किसी परस्पर क्रिया का होना जरूरी है। शायद जब आपको टक्कर लगी तब आप विप्लवकारी सिद्धांत और लड़ाइयों में इसकी भूमिका के विषय में सोच रहे होंगे। हो

सकता है कि आप पानीपत की लड़ाई के बारे में सोच रहे हों। शायद आपके मस्तिष्क में न्यूरॉनों ने ट्रिगर का काम किया।''

''आपका अनुमान बिलकुल सटीक है। मैं सचमुच में यही सोच रहा था कि अगर लड़ाई में मराठों की जीत हुई होती तो इतिहास किस ओर करवट लेता।'' प्रो. गाइतोंडे ने कहा, ''दरअसल, मेरे हजारवें अध्यक्षीय भाषण का विषय ही यही था।''

''तब तो आपको खुश होना चाहिए कि अब आपके पास मात्र कल्पनाओं से ज्यादा जिंदगी के अनुभव हैं। इनसे आप अपने भाषण में जान डाल सकेंगे।'' राजेंद्र ने हँसते हुए कहा।

मगर गंगाधर पंत गंभीर बने रहे।

''नहीं राजेंद्र, मैंने अपना हजारवाँ भाषण आजाद मैदान में दिया था; लेकिन भीड़ ने मुझे जबरन मंच से नीचे उतार दिया। प्रो. गाइतोंडे मंच पर अपनी कुरसी बचाते हुए अदृश्य हो गया, वह अब किसी भी सभा में दुबारा कभी भी नजर नहीं आएगा । मैंने पानीपत सेमिनार के आयोजकों को अपनी क्षमा-याचना भेज दी है।''

❑

4

हरे आक्रमणकारी

टॉम रॉरिच ने डैश बोर्ड पर उड़ती सी नजर डाली और मन-ही-मन कुछ हिसाब लगाया—अल पासो अभी भी सैंतीस मील दूर था। टेक्सास एक बहुत बड़ा राज्य है। भूगोल की किताबों में पढ़ना और बात है तथा इसके आर-पार गाड़ी चलाना और। इससे पहले भी टॉम हजारों मील की दूरियाँ गाड़ी चलाते हुए तय कर चुका था। पर आज उसे किसी साथी की कमी बहुत खल रही थी, जो सीधे-सपाट हाइ-वे पर गाड़ी चलाते वक्त उसके अकेलेपन को दूर कर सकता। दूर-दूर तक पसरे बड़े-बड़े खाली मैदान भी एकदम सुनसान थे। टॉम की ऊब को दूर करने में उनसे भी कोई मदद नहीं मिल रही थी।

पिछले एक घंटे से उसपर थकान हावी हो रही थी। पर रात घिरने से पहले ही उसे अल पासो पहुँच जाना था और भोजन व आराम की इच्छा को भी तब तक दबाकर रखना होगा। पर क्या वह समय पर अल पासो पहुँच पाएगा? उसे अपने आप पर शक होने लगा कि वह गाड़ी चलाते हुए मन एकाग्र नहीं कर पा रहा है। तो क्या वह रुक जाए और आँखें मूँदकर दस मिनट झपकी ले ले? पर कहीं उसे गहरी नींद आ गई और वह देर तक सोता रहा तो?

किंतु तभी अचानक उसे रुकने का फैसला करना पड़ा। सीधी सड़क पर वह एक छोटे से मोड़ को नहीं देख पाया और अगले ही पल उसने एक झटके के साथ खुद को सड़क किनारे रेत में धँसा पाया। आखिर टॉम ने मान लिया कि फिलहाल वह गाड़ी चलाने की स्थिति में नहीं है और उसने गाड़ी को सड़क के किनारे लगा दिया।

शाम के झुटपुटे में पश्चिमी आसमान में रंगों की एक से बढ़कर एक छटा बिखर रही थी। टॉम को अपने स्कूली दिनों में पढ़ी उन 'पश्चिमी' महानायकों की याद ताजा हो गई, जिन्हें घोड़ों पर सवार खुले मैदानों को रौंदते हुए डूबते सूरज की ओर जाते दिखाया जाता था। पर इस वक्त उनकी हकीकत पर यकीन करना मुश्किल लग रहा था—कि धरती पर ऐसे निर्जन प्रदेश अभी भी मौजूद हैं। खासकर अभी एक सप्ताह पहले ही भारी भीड़भाड़ के वक्त मैनहटन शहर में गाड़ी चलाने के बाद तो ऐसे वीरानों की कल्पना करना और भी कठिन था। यह कल्पना क्यों नहीं करते कि तुम्हें किसी दूसरे ग्रह पर भेज दिया गया है? आखिरकार टॉम विज्ञान-कथाओं का दीवाना जो ठहरा! उस विचित्र परिवेश में उसकी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने लगी थी।

दूसरे ग्रहों के डिजाइनवाले अंतरिक्ष यान, अजीबो-गरीब बाहरी दुनिया के जीव, उन्नत महासभ्यताएँ, क्या वास्तव में उनका कोई अस्तित्व है? या इनसान इस विशाल ब्रह्मांड में एकदम अकेला है, जैसे कि अभी टॉम उस विशालकाय, लेकिन निर्जन प्रदेशों में निपट अकेला था।

अचानक ही टॉम को लगा कि वह एकदम अकेला नहीं था। पश्चिमी क्षितिज पर उसे एक सफेद धब्बा नजर आया। शायद वह शुक्र ग्रह था, जो सूर्य डूबने के बाद चमक रहा था। लेकिन वह धब्बा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। टॉम के थके-हारे दिमाग को सबकुछ अजीबो-गरीब लग रहा था; पर अचानक ही उसकी चेतना जाग उठी : वह जो भी 'चीज' थी, उसके निकट आ रही थी। पर वह 'चीज' कितनी बड़ी थी!

जिंदगी में पहली बार टॉम को लगा कि वह सुनसान जगह पर किसी वस्तु के सही आकार का सही अंदाजा नहीं लगा पा रहा था...क्या वह मुसीबत में फँसा कोई हवाई जहाज था, जो आपात स्थिति में उतरने की तैयारी कर रहा था? लेकिन फिर उस 'वस्तु' की ऊँचाई कम नहीं हो रही थी, हालाँकि वह निकट आ रही थी और फिर वह हवाई

जहाज तो कतई नहीं लग रहा था।

जैसे-जैसे वह चीज पास आती गई, टॉम को एक अजीब सा शोर सुनाई देने लगा। वह शोर ज्यादा-से-ज्यादा असहनीय होता जा रहा था। आखिरकार अपनी कार में घुसकर टॉम ने शीशे चढ़ा लिये। इससे शोर कुछ कम तो हो गया, लेकिन तब टॉम को महसूस हुआ कि उसे उस शोर से परेशानी नहीं थी बल्कि वह उसके तीखेपन से घबरा रहा था।

अपनी सीट पर गिरने से पहले टॉम ने अपने कानों पर ठूसने के लिए टिशू पेपर खोजने की असफल कोशिश जरूर की पूरे होश-हवाश में...।

□

राज्य परिवहन की बस से उतरकर अपने खेत तक सफर शुरू करने तक शिवा चलने की हालत में नहीं था। सतारा में उसका दिन अच्छा शुरू हुआ था। कई महीनों बाद आज पहली बार उसे जुए में मोटा पैसा हाथ लगा था। लेकिन दुर्भाग्यवश उसने जितना पैसा जीता था उस सबकी शराब खरीदकर पी गया।

इसलिए जब बस के कंडक्टर ने उसे उसके गाँव के स्टॉपपर धक्का देकर उतार दिया तो शिवा ने पैसे बचाने के लिए पैदल चलना ही बेहतर समझा। वह गाँव तक जानेवाला छोटा रास्ता जानता था, जिससे जाने पर कुछ किलोमीटर की दूरी बच जाती। उस छोटे रास्ते पर वह कई बार चला था, लेकिन केवल दिन के उजाले में और अगर इस वक्त वह नशे में धुत्त न होता तो उस रास्ते पर अमावस की इस रात में गाँव हरगिज नहीं जाता; क्योंकि सारे गाँव को यकीन था कि उस रास्ते पर भूतों का आतंक छाया हुआ था।

पर आज रात शिवा बिलकुल भी भयभीत नहीं था। शराब के नशे में भूत तो क्या, भूत के बाप का डर भी नहीं रहता। इसलिए लड़खड़ाता हुआ वह उस डगर पर चला जा रहा था। उसकी एक ही मंजिल थी—अपने खेत पर जल्द-से-जल्द पहुँच जाना।

अचानक ही वह जमीन पर पड़ी किसी बड़ी सी चीज से जा भिड़ा। उसके मुँह से गालियाँ निकल पड़ीं—इस सुनसान, भूतों भरे रास्ते पर आधी रात को कौन मूर्ख आया होगा?

पर शिवा ज्यादा देर अँधेरे में नहीं रहा। अचानक ही रोशनी की एक तेज चमक पैदा हुई और शिवा को नजर आया कि वह किस चीज से टकराया था, और जो कुछ उसने देखा उससे उसका नशा छू-मंतर हो गया।

असल में वह जमीन पर पड़े एक आदमी से टकरा गया था। हाँ, था तो वह आदमी ही, पर एकदम हरे रंग का! शिवा के देखते-ही-देखते हरे रंग का वह आदमी चमकने लगा और आसमान की ओर उड़ने लगा। जैसे ही शिवा ने यह देखने के लिए ताका कि आखिर 'वह' जा कहाँ रहा है, उसे अजीब सा दिखनेवाला अंतरिक्ष यान नजर आया।

डर के मारे शिवा की बोलती बंद हो गई। उस दिशा से आते अजीब से शोर से उसके कान फटने लगे।

फिर क्या हुआ? उसे कुछ पता नहीं।

□

किसी को उसका असली नाम मालूम नहीं था। सब उसे सिस्टर मारिया कहते थे। वह सिसली के एक कॉन्वेंट में नन थी। कोई उसे कॉन्वेंट के दरवाजे पर लावारिस छोड़ गया था। उसी दिन से वह गूँगी और बहरी थी, लेकिन दूसरों के साथ वह अपनी सुंदर लिखावट तथा विविध तसवीरों को बनाकर बिना किसी दिक्कत के संवाद कर सकती थी।

मारिया बहुत ही शर्मीली और अपने में मगन रहनेवाली लड़की थी। इस नाते वह मदर सुपीरियर से तभी मिलती थी जब बहुत जरूरी हो। उस दिन भी मारिया रोजाना की तरह शाम की प्रार्थना के बाद सैर के लिए गई थी। पर सैर से लौटने पर आज वह कुछ ज्यादा ही उत्साहित लग रही थी।

‘‘क्या बात है, मेरे बच्चे?’’ मदर ने प्यार करते हुए उससे पूछा। साथ ही उन्होंने मारिया को एक राइटिंग पैड और पेंसिल भी दी।

मारिया के पास बताने को बहुत कुछ था। उसने ढेर सारे चित्र बनाए और कुछ पंक्तियाँ भी लिखीं।

पन्नों पर लगातार दृष्टि गड़ाए देख रही मदर सुपीरियर को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। उन्हें यकीन था कि मारिया कभी भी काल्पनिक तसवीरें नहीं बनाएगी। उसने जो कुछ देखा और जिसके बारे में अब वह खबर दे रही थी, उसके पीछे कोई-न-कोई सच्चाई तो जरूर होगी। उन सबका क्या मतलब था?

मारिया से और ज्यादा सवाल-जवाब करते वक्त मदर ने अपने क्रॉस को कसकर पकड़ रखा था।

□

पार्टी अपने पूरे शबाब पर थी। नासा (NASA) के गोडार्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर और मैरीलैंड विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक गोडार्ड के रोजर बकलैंड का विदाई समारोह मनाने के लिए उनके अपार्टमेंट पर जुटे थे।

रोजर बकलैंड को नई पीढ़ी के वैज्ञानिकों में सबसे करामाती समझा जाता था, जिसने नासा के स्काइलैब, स्पेस लैब शटल आदि अभियानों में अग्रणी भूमिका निभाई थी। दरअसल, एक दशक के भीतर वह इतना मशहूर हो गया था कि किसी भी नई परियोजना को शुरू करने से पहले उसे खोजा जाता था। और रोजर उन गिने-चुने वैज्ञानिकों में से एक था जो अपनी व्यस्तताओं के कारण किसी भी उत्साहजनक परियोजना में काम करने की पेशकश ठुकरा सकते थे। जब कभी वह नया काम अपने हाथ में लेता, स्वयं से यही कहता—‘यह मेरी अंतिम वैज्ञानिक परियोजना है। इसके बाद मैं केवल गोल्फ खेलूँगा और नाव चलाऊँगा।’ लेकिन उसके सहकर्मी जानते थे कि यह संकल्प केवल सप्ताहांत के लिए है। सोमवार आते ही रोजर दुबारा अपनी मेज पर दिखाई देता।

ड्राई मार्टिनी का घूँट भरते हुए एक सहकर्मी ने टिप्पणी की, ‘‘मैं शर्त लगा सकता हूँ रोजर, कि इस बार तुम पूरे दो महीने की छुट्टियाँ बिताकर ही काम पर लौटोगे!’’ उस मित्र को ऐसी विदाइयों से कोई परहेज नहीं था, बशर्ते कि उनके लिए ऐसी ही पार्टियाँ आयोजित होती रहें।

‘‘मगर जॉन, मान लो कि जिस अभियान पर मुझे भेजा जा रहा है, वहाँ से मैं लौटूँ ही नहीं। तब तुम्हारी शर्त का क्या होगा?’’ रोजर ने आँखों में चमक लाते हुए पूछा।

‘‘हमारे ऐसे भाग्य कहाँ! हमें पक्का यकीन है कि तुम योयो की तरह वापस आ जाओगे। आखिरकार, अंतरिक्ष यात्रा आज यात्रा करने का सबसे सुरक्षित तरीका है।’’

‘‘हाँ, क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है?’’ एक और वैज्ञानिक उनकी बातचीत में शामिल हो गया—‘‘अंतरिक्ष यात्रा हवाई यात्रा से सुरक्षित है और हवाई यात्रा अपनी खुद की कार में चलने से ज्यादा सुरक्षित है।’’

‘‘और इसी तर्क को आगे बढ़ाया जाए तो यात्रा का सबसे खतरनाक तरीका है पैदल चलना, खासकर सड़क पार करना। अगर तुम्हें यकीन न हो तो मुंबई आकर देखो। वहाँ अगर सड़क पार कर जाओ तो मान जाऊँ।’’ विली बोन्स ने कहा, जो अभी हाल ही में भारत का दौरा करके लौटा था।

कुमार मराठे, जो पहले मुंबई में रहता था, ने इस मामले को स्पष्ट करना अपना कर्तव्य समझा, ‘‘विली, तुम एक अहम चीज भूल रहे हो! मुंबई में जेब्रा क्रॉसिंग सिर्फ सड़कों को सजाने के लिए होती है। कोई भी वाहन चालक पैदल चलनेवालों को उन पर से सड़क पार करने के लिए नहीं रुकता। तुम अनपढ़ पश्चिमी लोग इतनी मामूली बात भी नहीं समझते।’’

इतना सुनते ही वहाँ हँसी का फव्वारा फूट पड़ा। पर बोन्स ने गौर किया कि रोजर उनकी हँसी में शामिल नहीं था। विली बोन्स वैज्ञानिक नहीं था। चूँकि वह रोजर के घर पर ठहरा हुआ था, इसलिए वह भी पार्टी में शरीक था। लेकिन लोगों को देखना, उनके हाव-भाव को परखना ही उसका काम था।

पार्टी खत्म हो गई और रात के दो बजे आखिरी मेहमान भी चला गया। रोजर ने दस गंदे गिलास डिश वॉशर में डाल दिए और बोतलों को क्रेट में रख दिया।

''काली या सफेद?'' विली शांत नहीं बैठा था। उसने कॉफी बना ली थी और जानता था कि वह खुद तथा रोजर दोनों उसका स्वागत करेंगे।

''काली, धन्यवाद!'' कृतज्ञतापूर्वक कॉफी का मग लेते हुए रोजर सोफे में धँस गया।

विली भी रॉकिंग चेयर पर बैठ गया था। काली कॉफी की चुस्कियाँ लेते हुए वह कुरसी पर अच्छी तरह पसर गया और फिर उसने वह प्रश्न पूछा, जो काफी समय से पूछना चाह रहा था।

''रोजर, अब मुझे बताओ कि क्यों किसी अंतरिक्ष वैज्ञानिक को एफ.बी.आई. एजेंट की मदद चाहिए?'' कुछ पल खामोशी छाई रही। रोजर चुपचाप कॉफी की चुस्कियाँ लेता रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ से अपने जवाब शुरू करे। विली धैर्य के साथ विचार करता रहा।

अंतत: रोजर ने बोलना शुरू किया, ''विली, तुम जानते हो कि आज की पार्टी मेरे सहकर्मियों को मेरा 'अलविदा' कहने का तरीका है, क्योंकि मैं अपने अंतरिक्ष अभियान पर जा रहा हूँ।''

''पर इसमें नया कुछ भी नहीं है! मैं बाहरी व्यक्ति होते हुए भी देख सकता था कि तुम्हारे साथियों को तुम्हारे वापस लौटने की पूरी उम्मीद है और वे इसे अंतिम विदाई नहीं मान रहे हैं। अरे, यह तुम्हारा पहला अभियान तो है नहीं।''

''सच है, मगर मुझे यकीन है कि यह मेरा अंतिम अभियान जरूर होगा।'' विली के चेहरे पर मासूमियत भरे अविश्वास के भाव देखकर रोजर अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। वह अपनी डेस्क के ड्रॉवर में से कागजों का बंडल निकाल लाया और उन्हें विली के सामने रख दिया।

विली ने बंडल खोला और पाया कि उसमें अखबारों की कतरनें भरी हुई हैं। 'टेक्सास में उड़न-तश्तरियाँ देखी गईं', 'भारतीय ग्रामीण उड़नेवाले हरे आदमी से टकराया', 'इतालवी नन से फरिश्ते मिलने आए'।

''तुमने कब से इन बेवकूफी भरी बातों पर यकीन करना शुरू कर दिया?'' विली बोन्स जानता था कि उसका वह लड़कपन का दोस्त उड़न-तश्तरियों और अन्य अलौकिक घटनाओं का मजाक ही उड़ाया करता था।

लेकिन इस वक्त रोजर संजीदा था।

''विली, मैं जानता हूँ कि तुम बेहतर जानते हो कि मैं अखबारों में छपी अपुष्ट खबरों में यकीन नहीं करता। पहले भी कई अवसरों पर मैंने सनकी लोगों द्वारा बाहरी दुनिया के जीवों को देखने या उनसे मिलने के दावों का सार्वजनिक तौर पर खंडन किया है।''

''मैं जानता हूँ कि रोजर...''

लेकिन अपने उत्साह में रोजर ने विली को बोलने का मौका नहीं दिया।

''उड़न-तश्तरियों का यह सारा पागलपन सन् 1947 में शुरू हुआ, जब शौकिया विमान चालक केनेथ आर्नोल्ड ने दावा किया था कि उसने चकती जैसी चीजों को अपने हवाई जहाज का पीछा करते देखा था। उसके बाद से तो ऐसे दावों की झड़ी लग गई।''

जैसे ही रोजर कॉफी की चुस्कियाँ लेने के लिए रुका, विली ने बोलना शुरू कर दिया, ''मैं जानता हूँ, लेकिन वैज्ञानिकों ने इन दावों की जाँच-पड़ताल करके उन्हें गलत साबित कर दिया था।''

''बिलकुल प्रोजेक्ट ब्लू बुक, प्रोजेक्ट साइन—इस तरह की लंबी-चौड़ी जाँच-पड़ताल है। और इन सबने क्या खुलासा किया?''

''कुछ भी नहीं! ऐसा कुछ भी नहीं जो इस दावे की पुष्टि कर सके कि कोई 'अज्ञात उड़न वस्तु' (यू.एफ.ओ.)

बाहरी अंतरिक्ष से आती है। लोग अकसर शुक्र ग्रह को उड़न-तश्तरी समझ लेते हैं। हो सकता है कि उन्होंने मानव निर्मित हवाई जहाजों या अंतरिक्ष यानों को देखा हो। कुछ को रोशनी के कारण भ्रम हो गया हो। कुछ लोग तो पागल किस्म के गवाह रहे, जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। और सबसे बुरे तो वे गवाह हैं जो अपनी तरफ से सबूतों को गढ़ते हैं।''

''हाँ रोजर, मैंने भी एक अनाड़ी आदमी की तरह इस विवादित विषय पर नजर रखी है और मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ, इसलिए मुझे आश्चर्य है कि तुम भी इन खबरों को गंभीरतापूर्वक ले रहे हो।'' बोन्स ने बोलना जारी रखा, जो अब रोजर से अपनी बात मनवाने पर तुला था—''उदाहरण के तौर पर टेक्सास की इस घटना को ही लो, गवाह ने खुद माना है कि वह बहुत थका हुआ था। मानसिक रूप से चौकन्ना नहीं था और वह भारतीय देहाती, उसने तो ढेर सारी शराब पी रखी थी। जहाँ तक सिस्टर मारिया का ताल्लुक है, मुझे उनकी पूर्व विश्वसनीयता का पता नहीं है। अगर तुम मेक्सिको, कंबोडिया और ऑस्ट्रेलिया से मिली खबरों को देखो तो अविश्वास की यही समस्याएँ उनमें भी नजर आएँगी। जाहिर है कि आँखों को जो दिखता है, उससे भी कुछ ज्यादा है; क्योंकि तुम मुझे ये सब चीजें दिखा रहे हो।''

''बिलकुल ठीक विली, इनमें से कोई भी खबर या गवाह यकीन करने योग्य नहीं है। अगर कानूनी तौर पर उन्हें जाँचा-परखा जाए तो वे टिक नहीं पाएँगे। लेकिन मेरे पास इससे भी कहीं ज्यादा...''

रोजर दोबारा अपनी मेज तक गया और ताला खोलकर दराज से एक लिफाफा निकाला। उस पर लिखा था —'अत्यधिक गोपनीय'। लिफाफा खोलकर उसने उसमें से एक फोटोग्राफ निकाला। पहले तो विली ने तसवीर को अच्छी तरह जाँचा-परखा और फिर लेंस से देखा, जो हमेशा उसकी जेब में मौजूद रहता था। उसके चेहरे पर तरह-तरह के भाव आ-जा रहे थे और रोजर उसके चेहरे के बदलते रंग को देखकर मन-ही-मन खुश हो रहा था। उसे उसकी उम्मीद भी थी।

और अंत में वह पल आया जिसकी उसे उम्मीद थी। विली के मुँह से अनायास ही सीटी की आवाज निकली। रोजर ने आगे बताया, ''जो तुम लेंस में से देख रहे थे, उसे हम कंप्यूटर की मदद से हजार गुना बड़ा कर पहले ही देख चुके हैं; लेकिन तुम्हें इस तसवीर का निचोड़ समझ में आ जाना चाहिए।''

''तुम्हें यह तसवीर कहाँ से मिली?''

''यह तसवीर मेरे सहकर्मी डिक फ्रॉस्ट ने मुझे भेजी है, जिसे उसने अपने अंतरिक्ष अभियान के समय लिया था। शायद यह उसकी जिंदगी का आखिरी मिशन था, क्योंकि उसके बाद हमें नहीं मालूम कि उसका या उसके यान का क्या हुआ।''

''क्या बात करते हो? इतना बड़ा अंतरिक्ष यान खो जाए और किसी को पता भी न चले। मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने कहीं इस घटना के बारे में पढ़ा हो।'' विली के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था।

रोजर ने सहमति जताई।

''मुझे तुम्हें ये सब बातें नहीं बतानी चाहिए थीं? लेकिन यह चौथा अंतरिक्ष यान था जो गुम हो गया। पहला अंतरिक्ष यान सेना का था, दूसरा सी.आई.ए. का और तीसरे पर वैज्ञानिक परीक्षण करनेवाले उपकरण लदे थे। फ्रॉस्ट को यह पता लगाने भेजा गया था कि तीसरा यान क्यों गुम हुआ था? उसे निर्देश थे कि जो कुछ अनोखा या असाधारण दिखे उसकी टेलीविजन तसवीर तुरंत भेज दे। अगर किसी कारणवश प्रेक्षक हाथ-पाँव न हिला सके तो वह आपातकालीन बटन दबाकर तसवीर को स्वचालित तरीके से भेज सकता था।''

''और हुआ भी यही। अपने होशो-हवास में काम करने के लिए फ्रॉस्ट के पास केवल पाँच सेकंड थे। उसने

आपातकालीन बटन तब दबाया था जब वह मौखिक संदेश भेजने की कोशिश कर रहा था। उस बटन से इस जैसी हजारों तसवीरें हमारे पास पहुँच गईं।'' रोजर ने अपनी बात खत्म की।

''और वह संदेश? फ्रॉस्ट ने क्या कहा था?'' विली ने पूछा।

''विली, तुमने मुझसे वही पूछा है जो कोई वैज्ञानिक किसी एफ.बी.आई. जाँचकर्ता से उम्मीद करता है। अच्छा, तो तुम्हारे सवाल का जवाब है फ्रॉस्ट के अंतिम शब्द क्या थे?''

''अंतरिक्ष यान...हरे मनुष्य उसमें से बाहर आ रहे हैं...मगर...''

□

विली ने अपना पाइप सुलगाया। उसके लिए पाइप सुलगाना किसी अनुष्ठान से कम नहीं था और इसका सबसे बड़ा फायदा तब होता जब उसे सोचने के लिए वक्त चाहिए होता। पाइप सुलगाने और दो-चार गहरे कश लगाकर, हवा में धुएँ के छल्ले उड़ाकर उसने बोलना शुरू किया, ''इस आदमी का क्या नाम है? फ्रॉस्ट की क्या खासियत है? क्या वह भी खयाली दुनिया में उड़ान भरता है?''

''मुझे नहीं लगता कि इस हादसे के बाद वह जिंदा बचा होगा। पता नहीं वह कहाँ गया! नहीं, मैं उसे खयाली आदमी नहीं कह सकता, बल्कि वह तो बहुत ही हठी और जमीन से जुड़ा व्यक्ति था। उसे जो कहा गया, वह सब उसने बड़ी दक्षता के साथ पूरा किया। लेकिन हमें उससे कभी भी नए-नए विचारों या सुझावों की उम्मीद नहीं रही।'' रोजर ने समझाया।

''हमारे जैसे स्वच्छंद समाज में तुम किसी चीज को लंबे समय तक दबाकर नहीं रख सकते। मैं ये सारी बातें सीनेटर ब्लैकमैन को बताऊँगा।'' विली ने मुँह बनाकर मुसकराते हुए कहा।

सीनेटर ब्लैकमैन इस बात की जोरदार वकालत करता था कि यू.एफ.ओ. बाहरी आक्रमण के उदाहरण हैं। बाहरी—यानी जो धरती से दूर अंतरिक्ष से आए हों। वह हमेशा वैज्ञानिकों पर आरोप लगाता कि वे सबूतों को जान-बूझकर दबाते हैं, ताकि जनता को गुमराह किया जा सके।

''ठीक है, लेकिन आखिरी उपाय के तौर पर मैं एक खोज-मिशन पर जा रहा हूँ, यह पता लगाने कि फ्रॉस्ट को क्या हुआ! इस मिशन में पाँच आदमी मेरी सहायता करेंगे। अगर हम लौटकर नहीं आए...''

''...तो भानुमती के पिटारे को खोलना ही पड़ेगा, ब्लैकमैन हो या न हो।'' विली ने कहा, ''लेकिन रोजर, इस प्रकरण को तुम खुद किस तरह देखते हो?''

''विली, मैंने तुम्हें सलाह-मशविरे के लिए बुलाया है, क्योंकि मैं इसका कोई मतलब नहीं निकाल पा रहा हूँ। ऐसा लगता है कि ये हरे मानव सारी धरती पर फैले हुए हैं और ऊपर इसके वायुमंडल में भी। जब तक फ्रॉस्ट का प्रकरण नहीं हुआ था, मैं यू.एफ.ओ. को बेवकूफी भरी बात मानकर खारिज कर देता था। पर तुमने खुद तसवीर देखी। इसमें सिगार की शक्ल के अंतरिक्ष यान के आस-पास छोटे-छोटे हरे मानव साफ नजर आते हैं। यह तसवीर कल्पना की उड़ान भरनेवाली किसी नन द्वारा नहीं बनाई गई है। यह विशुद्ध इलेक्ट्रॉनिक्स है, जिसे धोखा नहीं दिया जा सकता। न ही फ्रॉस्ट ने शराब पी रखी थी, न ही उसका दिमाग थका हुआ था। हमारे भूस्थित मॉनीटर द्वारा दर्ज की गई उसकी दिमागी ताकत एकदम दुरुस्त थी। असल में मुझे जो सबसे ज्यादा हैरान करता है विली, वह है फ्रॉस्ट का अंतिम शब्द—'मगर'। जाहिर है कि उसने जो कुछ देखा उसे लेकर उसके मन में कुछ शक था। वह क्या था?

''जहाँ तक जमीन से जुड़े अपराधों के मामले में मेरे अनुभव का संबंध है, तो वह तुम्हारी सेवा में हाजिर है, रोजर। मैं अपनी तरफ से इसके सिर-पैर का पता लगाने की कोशिश करता हूँ; लेकिन बुरा मत मानना, मुझे भी कोई खास उम्मीद नहीं है; फिर भी, अगर मेरा दिमाग कुछ काम करे तो मैं तुम्हें कहाँ संपर्क करूँ?'' विली बोन्स ने

अपनी डायरी निकाल ली और सारी सूचनाएँ उसमें तेजी से लिखने लगा।

''लो, यह एक अधिकृत फोन नंबर है।'' रोजर ने उसे एक नंबर दिया और बोला, ''इस नंबर पर फोन करना और मि. बी के बारे में पूछना। वह मेरा बॉस है। हालाँकि मैं उससे कभी मिला नहीं हूँ और न ही यह जानता हूँ कि वह कौन है! लेकिन अगर तुम्हारे पास कुछ सुझाव हुए तो वह जरूर उचित काररवाई करेगा।''

''रोजर, मेरी एक विनती है।'' विली ने तसवीर देखते हुए कहा।

रोजर ने एक शब्द कहे बिना वह तसवीर उसे दे दी।

□

विली अगले दिन फिर आया। अब भी उसके पास हरे मानवों के बारे में कोई और जानकारी नहीं थी। रोजर की तरह उसे भी यकीन नहीं हो पा रहा था कि वे बाहरी दुनिया के जीव थे। लेकिन फिर दुनिया के कोने-कोने से एकत्र सबूतों को कैसे झुठलाया जा सकता है? इन सबसे बढ़कर फ्रॉस्ट द्वारा भेजी तसवीर को कैसे नकारा जा सकता है?

उसने यू.एफ.ओ. के बारे में नकली तसवीरोंवाले सबूतों की बात जरूर सुनी थी, जिनकी बाद में कलई खुल गई थी। पर यहाँ जो तसवीर थी, उसे नासा के वैज्ञानिक ने खुद लिया था और उसी संगठन की सबसे अच्छी प्रयोगशालाओं द्वारा प्रोसेस किया गया था। इसलिए तसवीर के असली होने में शक की जरा भी गुंजाइश नहीं थी।

फिर भी विली इस बारे में पूरी खोजबीन कर लेना चाहता था। चूँकि वह तसवीर बहुत ही गोपनीय थी, इसलिए वह एफ.बी.आई. में अपने दक्ष सहकर्मियों की मदद भी नहीं ले सकता था। उससे इस बात की उम्मीद भी नहीं थी। इसलिए उसने निजी तौर पर एक विशेषज्ञ की मदद लेने का फैसला किया, जो उसका भरोसेमंद दोस्त भी था।

इस काम के लिए जॉर्ज बाल्डविन सबसे उपयुक्त व्यक्ति था। वह एक खगोलशास्त्री था और अंतरिक्ष के बारे में टेलीस्कोप से मिलनेवाली सूक्ष्म-से-सूक्ष्म सूचना की इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा व्यापक छानबीन करता था। उसे पूरा विश्वास था कि जॉर्ज तसवीर के बारे में जरूर उसकी मदद करेगा। तो वेस्ट कोस्ट पर बनी जॉर्ज की प्रयोगशाला में विली ने लंबी दूरी की कॉल लगाई।

''जॉर्ज! मैं विली बोन्स बोल रहा हूँ...कैसे हो, सुनो, क्या तुम मेरे लिए एक तसवीर का विश्लेषण कर सकते हो? यह बहुत जरूरी है।''

''तुम्हारी सारी बातें जरूरी होती हैं। ठीक है, पर आज मैं जा रहा हूँ। पालोमर में दो रातों तक तारों को देखूँगा। उसके बाद मुझे हाइकिंग ट्रिप पर मेक्सिको जाना है।''

''हाइकिंग को भूल जाओ। मैं दो दिनों में तुमसे लॉस एंजिल्स में मिलूँगा।'' इतना कहकर उसने फोन रख दिया, ताकि जॉर्ज जरा भी अगर-मगर न कर सके।

विली ने मन-ही-मन हिसाब लगाया। रोजर का मिशन केप केनेडी से दस दिन में शुरू होगा। दो दिन जॉर्ज के प्रेक्षण कार्यक्रम में नष्ट हो जाएँगे, फिर बचे आठ दिन। उसे एक दिन तो मि. बी से संपर्क साधने और अपनी खोजों के बारे में उन्हें बताने के लिए चाहिए। अगर वास्तव में कुछ निकलता है तो इस तरह सच्चाई का पता लगाने के लिए उसके पास मुश्किल से एक सप्ताह का समय बचेगा।

दो दिन बाद जब वह जॉर्ज से उसकी प्रयोगशाला में मिला तो वह ऊँघ रहा था। शुरुआती अभिवादनों और गाली-गलौज के बाद विली ने जॉर्ज को तसवीर दिखाई। तसवीर के पीछे लगी आधिकारिक मुहरों को वह पहले ही मिटा चुका था।

''क्या यह कोई मजाक है? तुम इस तसवीर को किसी वैज्ञानिक पत्रिका में छपवा सकते थे।'' जॉर्ज ने शिकायत की।

''तुम यह देखकर बताओ कि तुम इससे क्या पता लगा सकते हो—विज्ञान कथा है या तथ्य? असली या नकली? इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है, जॉर्ज।''

''यह तसवीर किसी साधारण कैमरे से नहीं खींची गई है, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक विधि से ली गई है। अवश्य ही मुझे तुम्हें यह बताने की जरूरत नहीं; लेकिन इसमें जितना हमारी आँखों को दिखता है, उससे कहीं ज्यादा और कुछ भी हो सकता है। पर तुम असल में क्या पता लगाना चाहते हो?'' जॉर्ज ने पूछा।

''काश कि मैं जान पाता! जाहिर है कि तुम्हें इस तसवीर के एक-एक टुकड़े की बारीकी से जाँच करनी है। इस काम में तुम्हारे साहब की तरफ से कितना वक्त लग जाएगा?'' विली ने बेचैनी से पूछा।

''एक सप्ताह, और अगर मैं अपनी नींद की कुर्बानी करूँ तो हो सकता है कि कम समय लगे!'' जॉर्ज ने बताया।

मुसकराते हुए विली ने गोलियों से भरी एक शीशी बाहर निकाली।

''ये गोलियाँ शर्तिया तुम्हारी नींद की जरूरत को आधा कम कर देंगी। नींद में होनेवाली इस कमी को तुम काम निपटाने के बाद पूरी कर लेना।''

□

जॉर्ज सलीके के साथ तथ्यपरक काम करने के लिए प्रसिद्ध था, लेकिन विली के लिए उससे काम कराने का यह पहला अनुभव था। वह जॉर्ज के उपकरणों की ऊँची आवर्द्धन क्षमता देखकर हैरान था। उनकी सहायता से विली तसवीर में हरे मानवों की एक-एक उँगली तक देख सकता था।

''क्या इस तरह के कई उपकरण दुनिया में हैं?'' विली ने प्रशंसा के साथ पूछा।

''मैं किसी और उपकरण के बारे में नहीं जानता। यह उपकरण मैंने खुद बनाया था—अपने इस्तेमाल के लिए।'' जॉर्ज ने बताया।

लेकिन हाथों में इतनी कुशलता के होते हुए भी जॉर्ज पल-पल गुजरते वक्त को नहीं रोक पाया। घंटे दिनों में बदल गए और जल्द ही विली द्वारा निर्धारित एक हफ्ता भी पूरा होने को आया। लेकिन उसे तसवीर से कुछ भी ठोस तथ्य नहीं मिला—ऐसा कुछ जो फ्रॉस्ट के अंतिम शब्द 'मगर' पर कुछ प्रकाश डाल सके। जाहिर है कि उसके पास मि. बी को बताने के लिए कुछ नहीं था।

सातवें दिन उनकी प्रयोगशाला में एक नन्हा मेहमान आया। यह था जॉर्ज बाल्डविन का दस वर्षीय बेटा जॉर्ज जूनियर। जूनियर बहुत ही होशियार और जिज्ञासु था। आते ही उसने विली पर सवालों की झड़ी लगा दी, जिनका जवाब देना कठिन हो रहा था। जैसे ही वह थोड़ी देर के लिए चुप हुआ, विली ने अपना सवाल दाग दिया, ''जॉर्ज जूनियर, मेरे पास भी तुम्हारे लिए एक सवाल है। तुम आज क्यों आए हो और यहाँ कितनी देर टँगे रहोगे?''

''ये तो दो सवाल हुए।'' जूनियर ने जवाब दिया, ''मैं यहाँ पापा की मदद करने आया हूँ और जब तक वे अपना काम निबटा नहीं लेते, मैं इंतजार करूँगा; क्योंकि तब मैं उन्हें हाइकिंग पर ले जाऊँगा। मैं पहले ही एक हफ्ते पीछे चल रहा हूँ।''

शाम होते-होते जॉर्ज ने अपना काम निबटा लिया। फिर उसने विली को अपने कंप्यूटर के पास बुलाया और समझाया कि वह कैसे काम करता है।

''अब तुम तसवीर के किसी भी भाग को स्क्रीन पर खोल सकते हो और कंप्यूटर की सीमाओं के भीतर जितना चाहे, बड़ा कर सकते हो। मैं जो कुछ सूचनाएँ निकाल सकता था, उन्हें मैंने टेप पर डाल दिया है। गुड लक।''

जॉर्ज तरोताजा होने के लिए चला गया और विली हताशा में वहीं बैठ गया। वह जानता था कि उसके अध्ययन से कुछ भी अनोखा नहीं निकलेगा। अगर कुछ अनोखा होता तो क्या वह जॉर्ज को नजर नहीं आता? फिर भी वह

कंप्यूटर चालू करके बैठ गया। उसे कुछ नया पता चलने की उम्मीद नहीं थी; लेकिन जॉर्ज जूनियर के सवालों से बचने के लिए वह कंप्यूटर पर तसवीर के विभिन्न पहलुओं को देखने लगा। पर जल्द ही जॉर्ज जूनियर ने कंप्यूटर पर कब्जा जमा लिया और तसवीर को अलग-अलग कोणों से देखने लगा। रह-रहकर उसके मुँह से हैरानी भरी आवाजें निकल रही थीं—''वाह! क्या ये आदमी असली हैं? यह किस तरह का जहाज है?''... वगैरह।

''देखो-देखो, लगता है, वह आदमी हैमबर्गर खा रहा है।'' अचानक ही जॉर्ज जूनियर जोर से चिल्लाया, ''काश कि मेरे पास भी एक होता!''

''बिलकुल ठेठ अमरीकी बच्चा!'' विली ने सोचा, जिसे हैमबर्गर और अन्य 'जंक-फूड' से चिढ़ थी। तभी अचानक उसे जूनियर की बात की अहमियत का अहसास हुआ।

वह दौड़कर कंप्यूटर के पास पहुँचा और जूनियर को लगभग धक्का देकर हटा दिया—''किधर? तुमने वह कहाँ देखा?''

जूनियर ने उस हरे आदमी की ओर इशारा किया, जो सैंडविच जैसी चीज कुतर रहा था।

''तुम मुझे बुद्धू नहीं बना सकते, बिगमैक को मैं देखते ही पहचान जाता हूँ।'' जूनियर ने गर्व के साथ कहा।

''तब तो जूनियर, तुमने मेरी एक बड़ी समस्या सुलझा दी। अगर तुम सही हो तो तुम्हें एक नहीं बल्कि दो बिगमैक मिलने चाहिए।'' एक हफ्ते में विली पहली बार इतना फूला नहीं समा रहा था।

□

लॉस एंजिल्स से वाशिंगटन डी.सी. की अंतिम उड़ान में विली अपनी सीट पर धँसा हुआ था। उसके मन में पिछले तीन घंटों के दौरान घटी घटनाएँ किसी सिनेमा की रील की तरह चल रही थीं। किस तरह जब बाथरूम से लौटने पर जॉर्ज को उसके बेटे की खोज के बारे में बताया गया? किस तरह इस बात की अहमियत उसकी समझ में आ गई? किस तरह उसने सैंडविच की उच्च आवर्द्धनवाली तसवीर निकाली, जिसे जूनियर ने विश्वास के साथ बताया था कि वह वाकई बिगमैक था? किस तरह उसने मि. बी को फोन लगाया और किस तरह अंतिम उड़ान में उसके लिए सीट की व्यवस्था की गई? हालाँकि उस उड़ान में सारी सीटें भर चुकी थीं।

तो वे हरे मानव दरअसल बाहरी दुनिया के जीव नहीं थे। वे अमरीकन थे। क्या वे 'स्पेस जैकर्स' थे? हाइजैकरों की नई जमात, जिनमें ऊँचे दर्जे के प्रशिक्षित वैज्ञानिक शामिल थे, जो सरकार से फिरौती की मोटी रकम वसूलते थे। पर फिर भी वे सारी दुनिया में क्या कर रहे थे?... शायद मि. बी इस रहस्य पर कुछ रोशनी डाल सकें।

दलास हवाई अड्डे पर एक नौजवान विली की राह देख रहा था। फोन पर मि. बी द्वारा बताए गए हुलिए के अनुसार उसने फूलदार टाई बाँध रखी थी।

''मैं जोनाथन हूँ।'' उसने अपना परिचय दिया।

''मैं विली हूँ।''

''आइए चलें, मि. बी इंतजार कर रहे हैं।''

जोनाथन ने विली का सामान उठा लिया और उसे काले रंग की एक लिमोजिन तक ले गया, जहाँ एक वरदीधारी ड्राइवर उनका इंतजार कर रहा था।

''कितनी अजीब किस्म की कार है!'' कार में घुसते ही विली हैरानी से चिल्लाया। हालाँकि बाहरी लोग कार के भीतर झाँक सकते थे, पर उन्हें कार से बाहर का कुछ भी नजर नहीं आ रहा था, जो एक्सप्रेस-वे पर भागी जा रही थी।

''मि. बी बहुत ही शर्मीले व्यक्ति हैं। जहाँ वे काम करते हैं, वे चाहते हैं कि उन्हें कोई न जाने।'' जोनाथन ने समझाया।

विली वाशिंगटन के इलाके को अच्छी तरह जानता था और उस वक्त वह रास्ते का पता लगाने की कोशिश कर रहा था। शहर के गिर्द बेल्ट-वे पर आते ही वे वर्जीनिया की ओर मुड़ गए। कुछ मील चलने के बाद वे मुख्य सड़क छोड़कर छोटी सड़क पर मुड़े, जिसका अंदाजा विली को आसानी से हो गया। पर उसके ड्राइवर ने आगे-पीछे की दिशा में इतनी बार मोड़ काटे कि विली को रास्ते का कोई अंदाजा नहीं रह गया। अंतत: कार एक भूमिगत कार पार्क में जाकर एक लिफ्ट के पास रुक गई। जोनाथन ने जल्दी से विली को खींचकर बाहर निकाला और उसे लिफ्ट में ले गया, ताकि विली को आस-पास की जगह का अंदाजा न होने पाए। उसके बाद वे बारहवीं मंजिल पर जाकर रुके।

लंबे गलियारे से चलकर जोनाथन ने एक मामूली से दरवाजे पर दस्तक दी जिस पर 'बी' लिखा था।

दरवाजा खुला। जोनाथन ने आहिस्ता से धक्का देकर किवाड़ खोले, विली को भी अंदर धकेला और दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। विली ने उम्मीद से चारों ओर नजर दौड़ाई, पर निराशा ही उसके हाथ लगी।

कमरा खाली था।

□

कमरे के अंदर एक टेबल थी और उसके सामने एक कुरसी। विली अभी भी सोच-विचार में ही था कि आगे क्या करना है कि तभी उस मेज के पीछे से शब्द उभरे—''विली, कृपया स्थान ग्रहण करें।''

शायद मेज के पीछे स्पीकर लगा हुआ है। कुरसी पर बैठते वक्त विली ने सोचा और आगे के घटनाक्रम का इंतजार करने लगा।

''मुझे खेद है कि अपने शर्मीलेपन के कारण मैं व्यक्तिगत तौर पर तुमसे नहीं मिल सकता। लेकिन मैं तुम्हें अच्छी तरह देख सकता हूँ। अगर तुम मुझे कुछ दिखाना चाहते हो तो कृपया उसे मेज पर रख दो।'' आवाज का स्वर बहुत ही कोमल था।

''मि. बी, मैं आपको ऐसा कुछ दिखाना चाहता हूँ जो रोजर बकलैंड और उनके दल को अपनी जान की बाजी लगाकर गैर-जरूरी अंतरिक्ष यात्रा नहीं करनी पड़ेगी।'' विली की आवाज में आग्रह का स्वर था। लेकिन मि. बी की आवाज में न तो आश्चर्य का भाव था और न ही बेचैनी का।

''कृपया बोलना जारी रखें, मैं सुनने के लिए तैयार हूँ। अगर तुम मुझे यकीन दिला दो कि तुम्हारे पास बहुत ही महत्त्वपूर्ण सूचना है, तो हो सकता है कि इस आखिरी घंटे में भी मैं इस अंतरिक्ष अभियान को रुकवा दूँ।''

''रोजर ने मुझे हरे मानवों की घुसपैठ के बारे में बताया था। उसने मुझे यह भी बताया कि वह कल उनके बारे में पता लगाने के लिए इस अभियान पर जा रहा है। वे कौन हैं, और किस दूर-दराज के ग्रह से आए हैं? उसने मुझसे इस मामले की अलग से पूछताछ करने के लिए कहा था। उसने मुझे डिक फ्रॉस्ट द्वारा लिया गया फोटोग्राफ भी दिया था।'' विली ने बोलना जारी रखा।

लेकिन मि. बी की आवाज ने उसे बीच में ही रोक दिया, ''इतनी दगाबाजी! रोजर को अधिकृत सूचना किसी पर जाहिर नहीं करनी चाहिए थी। चलो, माफ किया। मैं मानता हूँ कि रोजर ने तुम्हें मेरा टेलीफोन नंबर भी दिया, पर तुमने क्या पता लगाया?''

''मैंने इस तसवीर का एक विशेषज्ञ द्वारा विश्लेषण कराया और शायद मैंने वह पता लगा लिया जो आपके विशेषज्ञ नहीं देख पाए थे।'' विली ने तसवीर मेज पर रख दी और विस्तार से बताया कि तसवीर का विश्लेषण किस तरह किया गया था। अंत में उसने कहा, ''यह तथ्य कि इस रहस्यमय अंतरिक्ष यान का एक यात्री अमरीकी जंक फूड की आम चीज खाते हुए देखा गया था, यह साबित करता है कि वे आक्रमणकारी हमारे अपने ही ग्रह के बाशिंदे हैं और शायद हमारे अपने देश के ही वासी हैं और वे शायद हमारे ही वैज्ञानिकों एवं तकनीशियनों को

अगवा कर रहे हैं—जाहिर है, किसी बुरी नीयत से। इसलिए मेरी तो यही सलाह है कि कल वैज्ञानिकों की इस टीम को मत भेजिए। उनकी बजाय सशस्त्र सेना की टुकड़ी भेजिए, जो उन बदमाशों को पकड़ सके।''

फिर काफी देर तक खामोशी छाई रही। मि. बी बात का अर्थ लगाते रहे। अंत में बोले, ''बधाई हो विली! तुमने एक बहुत बड़े रहस्य का पर्दाफाश कर दिया है। अवश्य ही मुझे रोजर का मिशन रोक देना चाहिए। लेकिन इसका श्रेय मैं तुम्हें देना चाहता हूँ। कृपया कुछ देर बाहर इंतजार करो, मैं तुम्हें फ्लोरिडा भिजवाने की व्यवस्था करता हूँ। तुम तुरंत जाओ और रोजर को अपनी खोजों के बारे में बताओ।''

रोजर के अपार्टमेंट में से निकलने के बाद विली ने पहली बार राहत की साँस ली।

□

मि. बी ने अपने काले रंग के टेलीफोन का रिसीवर क्रेडल पर रख दिया। यही वह फोन था जिसका इस्तेमाल वह अपने सहायकों से बातचीत करने में करता था और अभी-अभी उसने जोनाथन को निर्देश दिया था कि आगे क्या करना है। फिर उसने अपनी टेबल पर रखा हरा टेलीफोन उठाया। मेज पर एक और टेलीफोन रखा था लाल रंग का।

''मि. ए?'' उसने भेदपूर्ण स्वर में पूछा।

''हाय बी, कैसा चल रहा है? क्या सबकुछ तैयार है?''

''हाँ, सारी तैयारी हो गई थी; पर अब एक समस्या खड़ी हो गई है। अभी-अभी मेरे पास एफ.बी.आई. एजेंट विली बोन्स आया था। उसने पता लगा लिया है कि ये हरे मानव हमारे ही देश के बाशिंदे हैं।''

दूसरे छोर से गालियाँ सुनाई दीं। पर ए जानता था कि खुद पर कैसे काबू किया जाए। उसने उन बातों के बारे में पूछा जिन्हें विली ने बी को विस्तार से बताया था। पूरी कहानी सुनने के बाद ए ने टिप्पणी की—

''वह जरूर माइक होगा! जंक फूड आते ही उस पेटू से रुका नहीं जाता। पिछले महीने मैंने उसे हैमबर्गर खाते देखा और मैं गिन नहीं सका कि वह कितने हैमबर्गर खा गया। वह केवल यही कहता रहा कि एक और बर्गर उसे नुकसान नहीं पहुँचाएगा। ऐसा लगता है कि उसने एक ही बर्गर कई बार खाया।''

कुछ पल के लिए खामोशी छा गई। फिर बी ने कुछ अफसोस के साथ कहा, ''अब हमें क्या करना चाहिए? ऐसा लगता है कि सारी दुनिया पर निगरानी करने की हमारी योजना किसी नतीजे पर नहीं पहुँची। और वह भी ऐसे वक्त में जब इसने अच्छी तरह कार्य करना शुरू कर दिया था। रोजर और उसके दल के अपहरण के बाद बाहरी दुनिया के जीवों का चारों ओर आतंक फैल जाता और सीनेटर ब्लैकमैन आसमान सिर पर उठा लेता। इसकी पूरी उम्मीद भी थी। उस जाँच-पड़ताल में बड़े-बड़े वैज्ञानिक इस बात का सबूत दे देते कि बाहरी दुनिया के कोई भी जीव नहीं हैं। और इस पूरे विवाद के दौरान हरे मानव बेरोक-टोक अपने जासूसी मिशनों को जारी रखते। बड़े कमाल की योजना थी; पर सब गुड़ गोबर हो गया, क्योंकि माइक को अपना हैमबर्गर चाहिए-ही-चाहिए!''

''बी, तुम तो ऐसे बोल रहे हो जैसे कि यह योजना बीत गई हो! यह योजना अभी भी जिंदा है।'' ए ने शांत भाव से जवाब दिया।

''पर हम इसे कैसे जारी रख सकते हैं, जबकि विली इसके बारे में बोलता रहेगा? वह इस वक्त फ्लोरिडा के रास्ते पर है।'' बी और ज्यादा संयम नहीं रख पा रहा था।

''बहुत अच्छे! मैंने खुद भी इस बात की सिफारिश की होती। हम उसे भी रोजर के साथ उनकी उस बस्ती में भेज देंगे। वहाँ वह बेशक सारी जिंदगी अपनी जाँच-पड़ताल करता रहे।''

बी की बात में दम नजर आया। विली को भी अगवा किए गए वैज्ञानिकों और तकनीशियनों की बस्ती में डाल दो, फिर कोई इतना दिमाग चलाने की नहीं सोचेगा। लेकिन तभी उसके मन में संदेह सिर उठाने लगा और इसे

उसने ए के सामने कुछ इस तरह बयान किया—''लेकिन किसी ऐसे देश के लिए यह कितना उचित होगा जो अपने नागरिकों, मानवाधिकारों और ऐसी समस्त चीजों पर गर्व करता है कि वह खुद अपने नागरिकों को अगवा कर समाज से अलग-थलग कर दे?''

लेकिन ए के पास इन तमाम संदेहों का जवाब था। उसने आराम से कहा, ''किसी देश पर अपने नागरिकों का अपहरण करने का आरोप नहीं लगाया जा सकता। और फिर वे सभी वैज्ञानिक तथा तकनीशियन, जिन्हें हमने अलग-थलग कर दिया है, मजे की जिंदगी जी रहे हैं और साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा की समस्याओं पर कार्य करते हुए पूरी संतुष्टि का अनुभव कर रहे हैं। दस साल बाद जब हमारी परियोजना पूरी हो जाएगी तो उन्हें वापस लौटा दिया जाएगा।''

बी को भी संतुष्टि हो गई। आखिरकार उनके पास अपनी परियोजना को पूरा करने का और कोई तरीका नहीं था, जिसमें देश के उत्कृष्ट मस्तिष्क लगे हुए थे। यह परियोजना पूरी गोपनीयता के साथ चलाई जाएगी और बाहर किसी को शक भी नहीं होगा। वह जान गया कि 'अगवा' किए गए सभी वैज्ञानिक बस्ती में एक मिशन के साथ खुशी-खुशी काम कर रहे थे। यहाँ तक कि फ्रॉस्ट ने भी अपने नए कार्य को उत्साह के साथ अपना लिया था।

उसके विचारों को ही जैसे शब्द देते हुए ए ने आगे बताया, ''याद करो कि मैनहटन परियोजना में बड़े-बड़े वैज्ञानिक अपने समय के सबसे घातक हथियार बनाने के लिए पूरे समर्पण भाव से काम कर रहे थे, क्योंकि उन्हें विश्वास दिला दिया गया था कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए कार्य कर रहे हैं। हमने अपने वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को यकीन दिला दिया है कि इस अंतरिक्ष युग में चारों ओर अंतरिक्ष पर कब्जा जमाना धरती पर जमीन जीतने से अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए वे हमारी जमीनी परियोजना पर खुशी-खुशी काम कर रहे हैं।''

''अच्छा,'' बी ने गहरी साँस ली, ''इसे ऐसा ही होना चाहिए, इसे ऐसा ही होना चाहिए।'' वह खुद भी कभी वैज्ञानिक था और उसे यह देखकर दुःख होता था कि किस तरह वैज्ञानिकों को राजनीति के खेल में प्यादा बनाया जा रहा था। इसे रोकने के लिए वह कुछ नहीं कर सकता था। आखिरकार यह सब पहले भी हो चुका था।

लेकिन फिर व्यावहारिक पहलुओं पर लौटते हुए वह बोला, ''ठीक है, लेकिन अभी हमें एक औपचारिकता और पूरी करनी है।''

''वह क्या?'' ए ने पूछा।

''विली मेरे संगठन में काम नहीं करता है। उसे अगवा कराने के लिए मुझे सर्वोच्च अधिकारियों से अनुमति लेनी होगी।''

''उसका बंदोबस्त मैं कर लूँगा। अच्छा, अलविदा!'' ए ने सीधे-सपाट लहजे में उत्तर दिया।

बी ने हरे टेलीफोन रिसीवर को पटकते हुए मन-ही-मन विली को भी अलविदा बोल दिया। ए की कार्य करने की चुस्ती को देखकर उसे जल्द ही काररवाई की उम्मीद थी और ए ने भी उसे निराश नहीं किया।

उसकी मेज पर रखा लाल रंग का टेलीफोन फिर घनघनाने लगा।

❑

5

वायरस

बाल्टीमोर में जॉन्स हॉकिंस यूनिवर्सिटी का खुशनुमा कैंपस। कैंपस में ही एक मामूली सी दिखनेवाली इमारत और इस इमारत में है स्पेस टेलीस्कोप साइंस इंस्टीट्यूट, जिसे सन् 1981 में बनाया गया था। इस इंस्टीट्यूट ने हबल स्पेस टेलीस्कोप को विकसित करने में अहम भूमिका निभाई थी। अनेक बार टालने के बाद आखिरकार सन् 1990 में हबल टेलीस्कोप को अंतरिक्ष में छोड़ा गया था। स्पेस टेलीस्कोप साइंस इंस्टीट्यूट अब 75 साल का हो चुका है और हबल शृंखला में तीसरी पीढ़ी के टेलीस्कोप एच.एस.टी. III के विकास में जुटा हुआ है। सन् 1609 में गैलीलियो ने खगोलशास्त्र का टेलीस्कोप से परिचय कराया था, जिससे ब्रह्मांड को देखने के कार्य में क्रांति आ गई थी। पहले हबल टेलीस्कोप को बनाते समय भी वैज्ञानिकों ने आशा प्रकट की थी कि इससे भी वैसी ही क्रांति आ जाएगी। उम्मीद को याद कर जूलियो रैंजा के चेहरे पर मुसकान आ जाती थी। वास्तव में हबल टेलीस्कोप अंतरिक्ष के अनेक रहस्यों का पर्दाफाश करने में एक बड़ा उपकरण साबित हुआ। इसके आकार और तकनीकी की तुलना में गैलीलियो का एक इंच का टेलीस्कोप बच्चा लगता था और आज एच.एस.टी. III से तुलना करने पर 1990 का हबल टेलीस्कोप भी बाबा आदम के जमाने का लगता है। तकनीकी की तीव्र गति यात्रा के कारण ही यह मुमकिन हो पाया है।

रैंजा अपने टर्मिनल के सामने बैठा हुआ था। टर्मिनल, जो एक बड़े परदे की तरह था, की-बोर्ड पर एक कमांड द्वारा ही तुरंत उसको कार्यालय के रूप में बदला जा सकता था। इस परदे की सफाई और रेजलूशन के आगे पिछली सदी के अंत में उपलब्ध सबसे अच्छे मॉनीटर भी शरमा जाएँ। की-बोर्ड पर कुछ और बटन दबाकर रैंजा एच.एस.टी. III से संपर्क कर सकता था और इस वक्त वह ठीक यही कर रहा था। उसका उद्देश्य था बृहस्पति के आस-पड़ोस में घट रही घटनाओं को वास्तविक रूप में देखना।

दोपहर बाद करीब तीन बजे का वक्त था। 'रात्रिकालीन आकाश' की धारणा अंतरिक्ष टेलीस्कोपों के आगमन से इतिहास बन चुकी थी। अब खगोलीय प्रेक्षणों के लिए रात का इंतजार नहीं करना पड़ता था। दिन हो या रात, किसी भी वक्त प्रेक्षण कर सकते थे, क्योंकि टेलीस्कोप वायुमंडल से ऊपर अंतरिक्ष में ऐसी जगह पर लगाया गया था जहाँ हमेशा अँधेरा रहता था। केवल सूर्य के आस-पास ही रोशनी का छोटा सा घेरा नजर आता था। उतनी ऊँचाई पर वायुमंडल की गैसों और धूल-कणों का अभाव रहता है, जो वायुमंडल की रोशनी को छितरा देते हैं और जिसके कारण आसमान नीला नजर आता है। इस तरह यह प्रेक्षक के लिए फायदे की बात थी।

रैंजा का टर्मिनल फोटोनिक तकनीकी से चलता था। इस तकनीकी ने बीसवीं सदी की इलेक्ट्रॉनिक तकनीक को काफी हद तक विस्थापित कर दिया था। इलेक्ट्रॉनों की तुलना में फोटॉन से काम लेना कहीं अधिक सुविधाजनक था। एक बार आप जान जाएँ कि इनसे कैसे काम लिया जाता है, तो ढेर सारी सूचनाएँ पल भर में एकत्रित कर सकते थे। रैंजा के आगे कॉपी के आकार का टर्मिनल बॉक्स आधी सदी पहले आनेवाले सुपर-कंप्यूटरों के मुकाबले कहीं ज्यादा कार्यकुशल था।

'बीप-बीप', टर्मिनल से आनेवाले खतरों के संकेतों से रैंजा की नींद उड़ गई। भारी इतालवी खाना खाने से वह कुछ उनींदा-सा हो रहा था। कंप्यूटर उसे यू.एफ.ओ. की मौजूदगी के बारे में चौकन्ना कर रहा था। यू.एफ.ओ. यानी उड़नेवाली अनजानी चीजें, यह उसका अपना प्रोग्राम था जो संकेत भेज रहा था।

एक समय था जब कोई अनुभवी प्रेक्षक आसमान में असाधारण वस्तु को केवल देखकर ही पहचान सकता था, जो आम आदमी की नजर में नहीं आती। ऐसे ही प्रेक्षकों ने बिलकुल सही पहचाना था कि आसमान में अस्पष्ट-सी दिखनेवाली चीज असल में धूमकेतु था या कोई चमकदार धब्बा अथवा असल में कोई फटता हुआ सितारा! लेकिन मनुष्य की आँखों और उनकी पहचानने की शक्ति की भी सीमाएँ होती हैं, जिन्हें यांत्रिक, इलेक्ट्रॉनिक और अब फोटोनिक डिटेक्टर आसानी से पार कर सकते हैं। इसलिए रैंजा ने एक डिटेक्टर प्रणाली स्थापित की थी, जो किसी ऐसे यू.एफ.ओ. को भी खोज निकाले, जिसे सबसे अच्छी तरह प्रशिक्षित मानव पे्रक्षक भी न देख सके।

बीप-बीप कर आनेवाले संकेत बता रहे थे कि आसमान में कोई अनजाना सा घुसपैठिया है। रैंजा ने कमांड दी—

'सर्च डी डी।' (SEARCH DD)

इस कमांड से कंप्यूटर सक्रिय हो गया और आसमान में घुसपैठिए की तलाश करने लगा। जल्द ही जूलियो के सामने परदे पर दिख रही आसमान में एक खिड़की खुल गई। उस चौरस खिड़की के भीतर घुसपैठिए की तलाश कर ली गई थी। अब जूलियो ने 'एम' वाला बटन दबाया, यानी कि घुसपैठिए को बड़ा करके दिखाओ। चौरस खिड़की ने फैलकर पूरे परदे को घेर लिया, लेकिन उसके भीतर वैसी ही एक छोटी खिड़की और खुल गई।

जूलियो ने दोबारा बटन दबाया। उसके चेहरे पर जिज्ञासा के भाव साफ झलक रहे थे। बटन दबाते ही दूसरी खिड़की भी पूरे परदे पर फैल गई। अब परदे पर एक-दूसरे की ओर मुँह किए चार तीर नजर आने लगे। इनमें एक पूरब-पश्चिम वाले तीरों की जोड़ी थी और दूसरी उत्तर-दक्षिणवाले तीरों का फर्क इतना था कि चारों तीरों का मुँह एक-दूसरे की ओर था। इनके बीचोबीच कोई चीज रह-रहकर चमक रही थी। कंप्यूटर ने अपनी पूरी ताकत के साथ यू.एफ.ओ. को खोज निकाला था। इसे चारों तीरों के बीच कहीं होना चाहिए था।

मगर वह चीज अभी भी जूलियो की नजरों से ओझल थी। अब इसे बनावटी तरीकों से चमकदार बनाना था, ताकि वह नजर आ सके। उसके की-बोर्ड पर एक ओर उपकरण लगा था। उपकरण को चालू करते ही परदे पर एक रंगीन तसवीर उभर आई। जूलियो जानता था कि तसवीर में रंग कैमरे के फोटोग्राफ की तरह असली नहीं हैं। तसवीर साफ भी नहीं दिख रही थी। वे रंग असल में तीव्रता के सूचक थे। अगली कमांड में जूलियो के सामने कुछ अंक प्रकट हुए, जिनसे वह चमक की गणना कर सकता था।

उस अनजानी वस्तु की स्थिति बृहस्पति के दूसरे और तीसरे चंद्रमा के बीच में पता चली थी। क्या वह चीज बृहस्पति का ही एक और चंद्रमा था, जो बहुत छोटा होने के कारण अंत तक देखा नहीं गया था या कोई क्षुद्र ग्रह था, जो बृहस्पति के गुरुत्वाकर्षण में फँस गया? रैंजा का मन एक तीसरी संभावना पर भी विचार कर रहा था कि शायद वह चीज कोई छोटा सा धूमकेतु है। ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें सूरज की ओर गमन करते धूमकेतु बृहस्पति के गुरुत्वाकर्षण में फँस जाते हैं या अपना रास्ता बदल लेते हैं।

जूलियो ने कंप्यूटर पर सभी ज्ञात धूमकेतुओं की जाँच-पड़ताल की, पर यह यू.एफ.ओ. उनमें नहीं मिला। इसका क्या मतलब है कि जूलियो ने कोई नया धूमकेतु खोज निकाला?

कॉमेट रैंजा या कॉमेट जूलियो? किसी भी नतीजे पर पहुँचने से पहले उसे किस चीज की बारीकी से जाँच-पड़ताल करनी पड़ेगी, इसलिए उसने कंप्यूटर को निर्देश दिया—'मॉनीटर डीडी।' अब टेलीस्कोप अगले 24 घंटे तक यू.एफ.ओ. के मार्ग पर कड़ाई से नजर रखेगा और शायद इस तरह वह बृहस्पति के नए चंद्रमा, जिसे जूलियस कहा जाए या एक छुद्र ग्रह एस्टीरॉयड...रैंजा या कॉमेट जूलियो खोज निकाले?

रैंजा को नतीजों का बेसब्री से इंतजार होने लगा। इन तीनों में से कोई भी चीज निकली तो उसका नाम खगोलशास्त्रियों के इतिहास में दर्ज हो जाएगा। फिलहाल उसके दिमाग में कोई चौथी संभावना नहीं थी, जो कि

वास्तव में सच होने जा रही थी, हालाँकि वह इसे कपोल-कल्पना ही मानता।

□

''मामा मिया!'' 24 घंटे बाद जूलियो रैंजा ने अपने कंप्यूटर पर नतीजों को पढ़ा तो उसका मुँह हैरानी से खुला रह गया।

''निगरानी की जा रही वस्तु बृहस्पति के पास से आगे निकल गई है। इसके मार्ग पर पक्की तौर पर बृहस्पति के गुरुत्वाकर्षण बल का कोई असर नहीं पड़ रहा है, इसलिए अगले चौबीस घंटों तक या तब तक जबकि इस वस्तु की गति का नियंत्रण करनेवाले बल का पता नहीं चल जाता, उसकी निगरानी की जाएगी।''

जूलियो रैंजा की समझ से बाहर था कि कोई चीज बृहस्पति के इतना करीब होने के बावजूद उसके गुरुत्वाकर्षण बल से बेअसर कैसे रह सकती है! उसकी सोची हुई तीनों संभावनाएँ यहाँ गलत सिद्ध हुईं। यानी यहाँ एक चौथी संभावना है कि वह वस्तु अपनी स्वयं की ताकत से चल रही है, जो बृहस्पति के गुरुत्व बल का भी मुकाबला कर सकती है। इसका मतलब यह है कि वह चीज कोई अंतरिक्ष यान है जो अपनी शक्ति से चल रहा है।

और चौबीस घंटे के भीतर ही कंप्यूटर ने इस नई संभावना पर अपनी मुहर लगा दी। अब मामला गंभीर हो गया था। उसे आशंका थी कि कोई अंतरिक्ष यान इतना छोटा होगा कि बृहस्पति जितनी दूरी पर हबल स्पेस टेलीस्कोप एच.एस.टी. III भी उसे न देख पाए और उसी कारण से उसने इस संभावना को पहले खारिज कर दिया था। पर अब लगता है कि यह कोई विशाल अंतरिक्ष यान है या अंतरिक्ष यानों का पूरा बेड़ा। आगे के प्रेक्षणों ने इस दूसरी संभावना की पुष्टि की। कंप्यूटर ने खबर दी कि उस वस्तु ने अपना आकार बदल लिया है। मोटी गणनाओं से जूलियो ने निष्कर्ष निकाला कि उसमें करीब सौ अंतरिक्ष यान शामिल हो सकते हैं और अब वे मंगल की कक्षा के निकट पहुँच गए थे।

तो क्या वे पृथ्वी की ओर आ रहे थे? जूलियो इस नतीजे पर पहुँचा कि अब इस मामले से निपटना अकेले उसके वश की बात नहीं है। उसे अपने से ऊँचे वैज्ञानिकों को इन तमाम जानकारियों से अवगत कराना होगा। उसने कम्युनिकेटर बटन दबाया और अपनी पहचान बताई—''मैं निदेशक से बात करना चाहता हूँ, अभी! यह बेहद जरूरी है।''

एस.टी. एस.सी.आई. में काम करते हुए यह पहला मौका था जब जूलियो निदेशक से बात कर रहा था।

□

संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् में एक गोपनीय बैठक बुलाई गई। जब से रैंजा ने निदेशक को अपनी खोज के बारे में सूचित किया था, तब से बमुश्किल पाँच घंटे ही बीते होंगे, लेकिन उसके बाद से तमाम चीजें आनन-फानन में ही हो गईं।

सुरक्षा परिषद् में बीस सदस्य थे। हालाँकि उनके प्रतिनिधि नियमित रूप से चलनेवाली बैठकों के लिए न्यूयॉर्क में ही थे, मगर अत्यधिक संवेदनशील मसलों पर आयोजित बैठकों में राष्ट्र प्रमुखों का शामिल होना जरूरी था। यह और बात है कि विभिन्न राष्ट्र प्रमुख अपने देश में ही अपने-अपने दफ्तरों में बैठे-बैठे ऐसी बैठकों में शरीक हो सकते थे। यहाँ उन्हें डिस्टेंस कॉन्फ्रेंसिंग का लाभ मिलता था। यहाँ परदे पर इन राष्ट्र प्रमुखों की तसवीरों को जोड़-जोड़कर एक बड़ी तसवीर बनाई गई, जिसमें प्रत्येक भागीदार उसी वक्त बैठक में शरीक हो सकता था। यही परदा प्रत्येक भागीदार को अपने दफ्तर में भी दिखाई देता। इस तरह वे बैठक में ऐसे शरीक होते जैसे एक ही छत के नीचे इकट्ठा हो गए हों।

सुरक्षा परिषद् में प्रत्येक महाद्वीप से तीन-तीन सदस्य थे और कुल मिलाकर बीस सदस्य थे। ये सदस्य राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने की बजाय राष्ट्र संघों का प्रतिनिधित्व करते थे। किसी संघ में शामिल राष्ट्र मिलकर अपने राष्ट्र

प्रमुखों में से किसी एक का चुनाव करते थे। भारतीय उपमहाद्वीप से अमरजीत सिंह वर्तमान में चेयरमैन थे।

इस गोपनीय बैठक का आरंभ भी अमरजीत सिंह के इन शब्दों के साथ हुआ—''दोस्तो, अपनी परिषद् के इतिहास में हम पहली बार सुरक्षा के ऐसे मसले पर चर्चा कर रहे हैं जिसका संबंध हमारी समूची धरती से है। यह चर्चा है—बाहरी आक्रमण के बारे में। आपको ताजा घटनाक्रमों की जानकारी तो मिल ही गई होगी। कुछ घंटे पहले ही वैज्ञानिक जूलियो रैंजा ने अंतरिक्ष में तैरते हुए अंतरिक्ष यानों के बेड़े के बारे में सावधान किया था। अंतरिक्ष में तैनात दूरबीन एच.एस.टी. III ने इस बेड़े को देखा था, तब से हम अपने रेडियो और शीशेवाली दूरबीनों से इस बेड़े की प्रगति पर लगातार नजर रख रहे हैं। पृथ्वी-चंद्रमा रेडियो आधार-रेखा का उपयोग कर उस तैरते हुए बेड़े के उच्च आवर्द्धनवाले नक्शे निकाले जा रहे हैं। ये तमाम विस्तृत जानकारियाँ मिलते ही हमें इनके बारे में सूचित किया जाएगा। पर हमें तब तक इंतजार नहीं करना है : हमें अपनी संभावित काररवाई के बारे में अभी से चर्चा शुरू कर देनी चाहिए।''

बैठक के नियमों के अनुसार जो कोई भी पहले लाल बटन दबा देता उसे पहले बोलने का मौका मिलता। लेकिन जिन लोगों की शारीरिक प्रतिक्रियाएँ कुछ मंद थीं, उन्हें भी बोलने का मौका देने के लिए हरे बटन लगे थे, जिन्हें दबाकर वे चेयरमैन के सामने अपनी 'हस्तक्षेप करने की इच्छा' को प्रकट कर सकते थे। फिर चेयरमैन उपयुक्त अवसर पर संबंधित प्रतिनिधि को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देता।

आज रूस के स्टारोबिंस्की ने लाल बटन सबसे पहले दबाया। उन्होंने अपनी विचारणीय मुद्रा में बोलना शुरू किया, ''क्या ये लोग सीधे हमारी ओर आ रहे हैं? अगर हाँ, तो क्या हमें तनिक भी आभास है कि वे हमारे दोस्त हैं या दुश्मन? अगर हम अभी कुछ भी नहीं जानते तो इन जानकारियों को जल्द-से-जल्द हासिल करने के लिए हम क्या कर रहे हैं?''

''अगर उनका रुख दोस्ताना है तो ज्यादा जानकारी हासिल करने के लिए जल्दबाजी नहीं मचानी चाहिए।'' मध्य-पूर्व के अबुल हसन ने दखल दिया, ''पर जब तक पक्के तौर पर पता न चल जाए, हमें अपनी फौज को चौकस कर देना चाहिए।''

''जैसा कि मैं समझता हूँ, सबसे बढ़िया हथियारों से लैस हमारी बहुक्षेत्रीय फौजें धरती से 200 किलोमीटर दूर ऐसी जगह पर तैनात हैं, जहाँ से बाहरी घुसपैठिए गुजरेंगे। हमारी फौज के पास सबसे बढ़िया हथियार हैं।'' तभी रोशनी की चमक से चेयरमैन को रुकना पड़ गया। उन्होंने रिसीवर उठाया और कुछ देर सुनते रहे। उनकी गंभीरता बढ़ती जा रही थी। रिसीवर रखकर उन्होंने दोबारा बोलना शुरू किया, ''हमें स्टारोबिंस्की के पहले सवाल का जवाब मिल गया। अंतरिक्ष यानों का बेड़ा मंगल के पास से अपनी रफ्तार और दिशा बदलकर सीधे पृथ्वी की ओर आ रहा है। उस बेड़े की रफ्तार भी चकरानेवाली है। अनुमान है कि इस रफ्तार से तो वे तीस घंटे के भीतर यहाँ पहुँच जाएँगे।''

स्टारोबिंस्की ने फुरती से हिसाब लगाया। धरती का कोई भी अंतरिक्ष यान इस रफ्तार का मुकाबला नहीं कर सकता था। धरती से मंगल को भेजे गए तथाकथित अत्याधुनिक उच्च तकनीकी यान ने भी यह यात्रा एक पखवाड़े में पूरी की थी।

''आप कहते हैं कि हमारी सेनाएँ अच्छी तरह हथियारों से लैस हैं। उनके पास कौन-कौन से हथियार हैं?'' जर्मनी के बैटन फ्रिट्जहॉफ ने सवाल उठाया। बेशक उनका मतलब था कि फौजें किस हद तक हथियारों से लैस हैं।

चेयरमैन ने अपने नोट्स को देखा और जवाब दिया, ''हमारी फौज के पास नाभिकीय हथियार हैं; प्रत्येक एक-एक मेगा टन शक्ति का और 10,000 किलोमीटर तक मार कर सकनेवाला। मेरा मानना है कि बाहरी घुसपैठियों के

एक-एक जहाज से निपटने के लिए तीन-तीन हथियार हैं। लेकिन याद रखिए कि यह पहला मौका है जब शायद इनके इस्तेमाल की जरूरत पड़े।''

''उम्मीद करनी चाहिए कि इन हथियारों पर जंग नहीं लगी होगी।'' यह टिप्पणी थी अमरीका के एल्सवर्थ जॉन की। यह इस बात की ओर इशारा था कि धरती पर पिछले पच्चीस वर्षों से कोई जंग नहीं लड़ी गई थी। और धरती पर रह रही नई पीढ़ी के लिए जंग एवं झड़प इतिहास की बातें थीं।

यह बैठक करीब एक घंटे तक चली। उसके बाद बैठक स्थगित कर दी गई, इस सूचना के साथ कि आपात स्थिति की गंभीरता के मद्देनजर बैठक किसी भी समय दोबारा बुलाई जाएगी।

□

लेकिन दोबारा बैठक बुलाने की नौबत नहीं आई, क्योंकि चौबीस घंटों के भीतर ही अंतरिक्ष यानों का बेड़ा धरती से केवल 20, 000 किलोमीटर के दायरे में आ गया। अब भी वह आसमान में तैनात धरती की सेनाओं के घातक हथियारों की मार से बाहर सुरक्षित था। अंतरिक्ष यानों ने खुद को एक विशालकाय त्रिकोण में तैनात कर लिया। इस त्रिकोण की नोक पर उनमें से सबसे प्रभावशाली यान था।

धरती के यानों में टेलीविजन के परदों पर यह तसवीर साफ दिखाई दे रही थी। एलन ब्रॉडबेंट, जिन्हें सभी ए.बी. कहते थे, धरती के तमाम अंतरिक्ष यानों के कमानदार थे। वे चुपचाप त्रिकोण को बनते देख रहे थे। अब क्या होगा? कि तभी इंटरकॉम बज उठा। उन्होंने बटन दबाया।

''ए बी, मैं वायरलेस रूम से जॉनी बोल रहा हूँ, ओवर!''

उस तनावपूर्ण माहौल में भी ए बी को मजाक सूझा यह शब्द 'ओवर', जो बाबा आदम के जमाने से वायरलेस संवाद की प्रगति से चिपका हुआ है।

''बोलते जाओ, मैं सुन रहा हूँ, ओवर!''

''वे 21 सें.मी. वेवबैंड पर कुछ संदेश भेज रहे हैं। कोई कोलाहल नहीं, बिलकुल साफ; लेकिन वे क्या कह रहे हैं, मुझे एक भी शब्द समझ में नहीं आ रहा है, ओवर!''

''तुम्हें क्यों कर समझ आने लगा? तुम क्या सोचते हो कि वे तुम्हारी ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी बोलेंगे!'' एलन जॉनी की ऑक्सफोर्ड डिग्री को लेकर उसकी टाँग खींचने का कोई भी मौका ए बी हाथ से जाने नहीं देते थे। उन्होंने आगे कहना जारी रखा, ''अलबत्ता तुम उनके संदेशों को रिकॉर्ड करते रहो। मेरा सुझाव है कि लिटिल मास्टर को बुला लो और उसे संदेश सुनाओ।''

लिटिल मास्टर शिवरामकृष्णन का कद मुश्किल से पाँच फीट होगा। गूढ़-से-गूढ़ सूचनाओं को समझने में वह माहिर था। कुछ लोगों का कहना है कि उसके कंधों पर सिर नहीं बल्कि सुपर कंप्यूटर रखा है। अंतर केवल इतना है कि यह सोच सकता है।

जॉनी ने लिटिल मास्टर को तलब किया। छह फुटा जॉनी लिटिल मास्टर से झुककर बात करता था। अपने साथियों की तरह ही वह भी लिटिल मास्टर की लाजवाब बौद्धिक क्षमता का कायल था।

''शिवा, तुम्हारे दिमाग के लिए अच्छी-खासी खुराक है।'' संदेशों को रिकॉर्ड कर रहे उपकरण की ओर इशारा करते हुए जॉनी ने कहा।

''मैं तो समझा था कि आपने मुझे अपने खिलौनों की साफ-सफाई करने के लिए बुलाया है।'' शिवा ने कंप्यूटर का मजाक उड़ाते हुए कहा।

''यह कोई मामूली मसला नहीं है। ये संदेश एलियन लोगों से मिल रहे हैं। तुम हमें बताओगे कि वे क्या कह रहे हैं।''

''वाह! यह है न काम की बात। चलो, दिखाओ मुझे।'' शिवा की-बोर्ड के सामने जमकर बैठ गया।

अगले एक घंटे तक लिटिल मास्टर चुपचाप अपने काम में डूबा रहा। एक बार उसने जॉनी से ट्रांसमीटर चालू कर अंतरिक्ष में इंतजार कर रहे एलियन लोगों तक एक संदेश भेजने को कहा। उसके बाद वह कंप्यूटर के परदे पर गोले जैसे बनाने लगा।

''क्या? तुम्हारा दिमाग फिर गया?'' जॉनी ने पूछा।

''जरा रुको और देखो तो सही।'' शिवा ने जवाब दिया।

थोड़ी देर इंतजार करने के बाद जॉनी अपने नियमित कामकाज में जुट गया। बीच-बीच में वह शिवा पर उड़ती नजर डाल लेता। लगता था जैसे शिवा गहरी नींद में डूबा हो। क्या वह ध्यानमग्न था?

अचानक ही करीब आधे घंटे बाद कंप्यूटर के परदे पर जैसे जान आ गई हो। इस बार जो संदेश था, जॉनी उसे समझ सकता था, क्योंकि यह अंग्रेजी में था—'अभिवादन धरतीवासियो, हमारे पास तुम्हारे लिए संदेश है।'

□

अब सुरक्षा परिषद् की दूसरी बैठक बुलाई गई। सभी के मन में एक अजीब किस्म का डर समाया हुआ था। बैठक बुलाते वक्त चेयरमैन ने सबको चेता दिया कि हालात अच्छे नहीं हैं। दरअसल, हालात विनाश के कगार पर पहुँच चुके थे।

सभी राष्ट्र प्रमुखों के अपने-अपने आसन पर बैठ जाने के पश्चात् चेयरमैन ने बोलना शुरू किया—''दोस्तो, हमारे सामने अजीबो-गरीब हालात बन गए हैं। अपने पूरे अस्तित्व के दौरान धरती पर मनुष्य ने ऐसे हालात नहीं देखे थे।

''आप सभी जानते हैं कि एलियन अंतरिक्ष यानों का पूरा बेड़ा हमारे सामने खड़ा है। वे हमसे क्या चाहते हैं? पिछले तीन घंटों से वे 21 सें.मी. वेवबैंड पर संदेश भेज रहे हैं। हालाँकि उनके संदेश साफ-साफ सुनाई दे रहे हैं; पर हमारा स्टाफ उनकी भाषा नहीं समझ पा रहा था, इसलिए उन्होंने हमारे बेहतरीन विशेषज्ञ डॉ. शिवरामकृष्णन को बुलाया। गूढ़ संदेशों को समझने में उनका कोई जवाब नहीं है। उनके साथी उन्हें 'लिटिल मास्टर' के नाम से पुकारते हैं।

''अपने आम तरीकों को नाकामयाबी के साथ आजमाने के बाद लिटिल मास्टर के दिमाग में शानदार विचार आया। उन्हें महसूस हुआ कि गूढ़ संकेत भेजनेवालों के इतिहास, संस्कृति और पर्यावरण के बारे कुछ जानने से बात बन सकती है। पर चूँकि उन एलियन के बारे में तो ये सब जानकारियाँ नहीं थीं, इसलिए उनका तरीका विफल हो ही जाता। तभी उन्हें खयाल आया कि क्यों न इन एलियन को अपनी भाषा सिखाई जाए!

''इसलिए उन्होंने पूरा विश्वकोश, एक बड़ा शब्दकोश और तसवीरवाली एक बड़ी सी किताब, जिसमें तसवीरों के नाम और अन्य जानकारियाँ दी गई थीं, हमारे ट्रांसमीटर के जरिए उन एलियन को मेल कर दी। अपने बेहतरीन दिमाग और बेहतर तकनीकी के बल पर वे बेशक इस जानकारी से कुछ काम की चीजें निकाल सकते थे, इसलिए लिटिल मास्टर सब्र के साथ उनके उत्तर का इंतजार करने लगे।

''परंतु उन्हें लंबा इंतजार नहीं करना पड़ा। करीब आधे घंटे के भीतर ही पहले अंग्रेजी लिखित और फिर मौखिक संदेश आने लगे। लेकिन शुरुआती अभिवादनों और शुभेच्छाओं के बाद उन्होंने जो इरादे जाहिर किए उन्हें नेक तो नहीं कहा जा सकता है।

''हमारे कमांडर एलन ब्रॉडबेंट यानी ए बी ने उनके अभिवादनों का जवाब दिया और उनसे उनके ठिकाने, स्थिति एवं धरती के पास आने का कारण पूछा तो उन्हें ये सूचनाएँ मिलीं—वे मैंडा नामक ग्रह से आए हैं, जो मिराड नामक तारे का चक्कर लगाता है। इस तारे को हम 'बर्नार्ड तारे' के नाम से जानते हैं। यह हमसे छह प्रकाश

वर्ष की दूरी पर है। हमारे एच.एस.टी. II ने ही करीब बीस साल पहले उस ग्रह को खोजा था। इस ग्रह तक अंतरिक्ष यान भेजने की योजना भी बनाई थी। लेकिन खर्चीला होने के कारण उसे ताक पर रख दिया गया। इस ग्रह तक की यात्रा बहुत लंबी है और उस वक्त की तकनीकी सीमा से कहीं बाहर थी।

''लेकिन पिछली दो सदियों से हमने जो उन्नति की, उस पर मैंडावासियों ने अपने ग्रह से पूरी निगरानी रखी। अपने प्रेक्षणों के आधार पर उन्होंने तय किया कि यहाँ आने का एकदम सही समय है। धरती के पच्चीस साल के बराबर समय में उन्होंने यहाँ तक की यात्रा पूरी की है।

''यह समय मैंडा पर औसत जीवन काल का करीब आठवाँ भाग है। वे मिराड से प्राप्त की गई ऊर्जा पर जिंदा रहते हैं। यही ऊर्जा उस बेड़े को चला रही है, जो वे यहाँ लेकर आए हैं। रास्ते में उन्होंने कुछ ऊर्जा बृहस्पति से भी ली। इन सबको देखकर लगता है कि ज्ञान और ऊर्जा-स्रोतों के लिहाज से वे हमसे कहीं आगे हैं। उनके मुकाबले हम अभी उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दौर में ही हैं।

''उनका इस धरती पर स्वागत कर हमें खुशी ही होती; पर बदकिस्मती से वे यहाँ पर कब्जा जमाने के इरादे से आए हैं। वे हमारी धरती को अपने जैविक परीक्षणों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। इस मकसद से वे चाहते हैं कि हम अफ्रीका महाद्वीप को पूरी तरह खाली कर दें। अगर हमने ऐसा किया और उस इलाके से दूर रहे तो वे भी वादा करते हैं कि वे हमसे छेड़छाड़ नहीं करेंगे।

''उन्होंने हमें विचार-विमर्श करके जवाब देने के लिए सात दिनों का समय दिया है। अगर हम मान गए तो ठीक, वरना...''

इन शब्दों में छिपी धमकी किसी भी साफ शब्द से ज्यादा साफ थी। कुछ देर तक सारे प्रतिनिधि खामोश बैठे रहे, जैसे इन शब्दों में छिपे मतलब को हजम करने की कोशिश कर रहे हों। अंत में मध्य अफ्रीका के प्रतिनिधि संडे वांपा ने बोलना शुरू किया, ''तो हमें एक बार फिर से दो सदी पहलेवाले औपनिवेशिक दिनों में फेंका जा रहा है। इस बार हमें गुलाम बनानेवाली ताकतें दूसरे ग्रह से आई हैं। हमारी भारी-भरकम अंतरिक्ष सेना इस पिद्दी से बेड़े को नष्ट क्यों नहीं कर पा रही है?''

''हमें अपने कमांडर से पूछना चाहिए।'' चेयरमैन ने कुछ बटन दबाए और सभी प्रतिनिधियों के सामने मौजूद परदों पर ए बी प्रकट हुआ। चेयरमैन ने उसे वांपा के विचारों से अवगत कराया और उससे उसकी प्रतिक्रिया माँगी।

ए बी खोखली सी हँसी हँसा और बोला, ''मि. वांपा, मैं आपके गुस्से से सहमत हूँ। लेकिन आपका सुझाव मुझे मंजूर नहीं। इन बाहरी दुनिया के लोगों की कद-काठी बहुत कमजोर है, लेकिन उनके सिर बहुत बड़े-बड़े हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि उनका दिमाग हमसे ज्यादा बड़ा और दक्ष है। वे शारीरिक श्रम करने के आदी नहीं हैं। उन्होंने हमारे मिसाइल छोड़नेवाले सभी रॉकेटों को बेकार कर दिया है। हम अभी यह पता लगा रहे हैं कि उन्होंने बिना किसी प्रयास के ऐसा कैसे किया? पक्के तौर पर उनकी सूचना-प्रौद्योगिकी हमसे कहीं आगे है; इसलिए इस बात का तो सवाल ही नहीं उठता कि हम उनका बाल भी बाँका कर सकें।''

''और अगर हम उनकी शर्तें मान लें तो?'' स्टारोबिंस्की ने पूछा।

''उन्होंने अभी जाहिर नहीं किया है कि वे क्या करेंगे। लेकिन उनकी ताकत देखकर लगता है कि हमारे पास कोई और चारा नहीं है।''

''तो क्या हम कायरों की तरह उनकी शर्तें मान लें?'' चीन के ली झाओ ने पूछा। आमतौर पर झाओ शांत रहता था, लेकिन इस वक्त वह गुस्से में उबल रहा था।

चेयरमैन ने बीच में ही टोका, ''अभी हमारे पास सात दिनों का समय है। कल हमारे जिनेवा कार्यालय में मैंडा के

तीन प्रतिनिधि हमसे मिलेंगे। यह फैसला करने के लिए कि क्या किया जा सकता है। अभी भी मोल-भाव करने की काफी गुंजाइश है।''

''वे अपनी शर्तें हम पर थोपने जा रहे हैं और वे शर्तें हमें माननी ही पड़ेंगी!'' झाओ ने तीखे अंदाज में कहा।

''हो सकता है कि हम इन सात दिनों में अपनी इस समस्या का कोई समाधान ढूँढ़ लें।'' चेयरमैन ने संयत होने की नाकामयाब कोशिश की। उन्होंने ए बी से पूछा, ''ए बी, क्या तुम्हारे पास कोई सुझाव है?''

''श्रीमान, मनुष्य इस ब्रह्मांड का सबसे बड़ा बुद्धिमान प्राणी नहीं रह गया है। लेकिन मनुष्य की समझदारी पर मुझे अब भी भरोसा है। हमें कोशिश जारी रखनी चाहिए।'' ए बी ने उत्तर दिया। हालाँकि उसके पास किसी तरह का कोई तरीका नहीं था कि इसे कैसे हल किया जाए!

''एक सवाल है, श्रीमान चेयरमैन!'' बैरन फीट्जऑफ ने पूछा।

''हाँ बैरन, बोलो!''

''अभी तक हमने इस घटनाचक्र से मीडिया को दूर रखा है। लेकिन मेरा सुझाव है कि हम सच्चाई बताते हुए एक औपचारिक प्रेस रिलीज जारी कर दें। मगर उसमें ऐसे शब्द रखें जिससे जनता में भगदड़ न मच जाए।''

''मैं बैरन फ्रीट्जऑफ के सुझाव का समर्थन करता हूँ।'' ऑस्ट्रेलियाई प्रतिनिधि ने कहा।

''ठीक है। हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे; पर मुझे कोई खास उम्मीद नहीं है।'' चेयरमैन ने कहा और प्रेस रिलीज लिखवाने लगा। उन तनावपूर्ण क्षणों में भी सदस्य चेयरमैन की भाषा व शैली की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके।

□

'धरती पर दूसरे ग्रह के प्राणियों का आक्रमण।'

'मनुष्य की नस्ल अपने पूरे अस्तित्व पर गंभीर खतरे का सामना कर रही है।' वगैरह-वगैरह। एक बार तो चीजों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की मीडिया की कलाबाजी भी सच्चाई को उजागर करने में कम पड़ गई। ऐसी सच्चाई, जिससे कुछ मुट्ठी भर लोग ही परिचित थे। अलबत्ता इसके बाद से विशेषज्ञों और जानकारों के बीच लंबी चर्चाओं का सिलसिला शुरू हो गया कि आगे क्या होगा?

चर्चा के लिए तीन मैंडावासियों को छिपाकर ले जाने की जिम्मेदारी ए बी को सौंपी गई। उसने यह काम इतनी सफाई से किया कि मीडिया के लोगों को कुछ भी पता नहीं चला। यह बात अलग है कि बातचीत में उसकी कोई भूमिका नहीं थी।

पाँच घंटे तक बातचीत चलती रही। उसके बाद ए बी को सभागार में बुलाया गया। सुरक्षा परिषद् के सदस्य दस मीटर लंबी मेज के एक तरफ बैठे थे और उनके सामने बैठे थे तीन मैंडावासी। तीन मैंडावासी बीस धरतीवासियों पर भारी पड़ रहे थे और तुरुप के सभी पत्ते उनके हाथों में थे। बातचीत में शामिल हुए बिना ए बी इस बात को भाँप गया।

चेयरमैन ने मेज के एक सिरे पर उसके लिए लगाई गई खाली कुरसी की ओर इशारा करते हुए कहा, ''बैठो ए बी, और सुनो कि अंत में हम किस नतीजे पर पहुँचे हैं।''

चेयरमैन ने बोलना जारी रखा। मगर उनके साथियों के चेहरों से ए बी ने अनुमान लगाया कि जो कुछ भी सहमति हुई है, वह दरअसल फिजूल की बात है। ''मैंडावासी अफ्रीका पर चरणबद्ध तरीके से नियंत्रण स्थापित करने को सहमत हो गए हैं, एक ही बार में नहीं। महाद्वीप को चरणों में खाली किया जाएगा, पूरे दो साल में...।''

'क्या समझौता है!' ए बी ने मुँह बिचकाते हुए सोचा और शर्तों को सुनता रहा।

''पहले सात दिनों में वे नील घाटी माँगते हैं, ताकि वहाँ अपने बेड़े को उतार सकें। आगे का काम सुनियोजित

और समय सारणी के अनुसार पूरा किया जाएगा। हमारी तरह वे भी इस बात पर चिंतित हैं कि इतनी बड़ी आबादी को अच्छी तरह से और बिना किसी परेशानी के दूसरी जगह बसाया जाए। लेकिन यह पक्का करने के लिए कि हम अपनी ओर से समझौते का पालन करने में कोई कोताही न बरतें, मैंडावासियों ने दो बंधकों की माँग रखी है।'' यह कहकर चेयरमैन चुप हो गए। जाहिर है कि अब कोई अप्रिय बात आ गई थी, जिसे वे ए बी को बताने में हिचक रहे थे।

चेयरमैन ने खखारकर गला साफ किया और आगे बोलना शुरू किया—''पहले बंधक के रूप में वे शिवरामकृष्णन को चाहते हैं। जिस तरीके से उसने उनसे संपर्क स्थापित किया उससे वे बेहद प्रभावित हैं।''

''और दूसरे के लिए?'' ए बी को लगा कि वह जवाब जानता है और शायद इसीलिए उसे वहाँ बुलाया गया था।

''तुम स्वयं! वे तुम्हारी नेतृत्व-क्षमता से प्रभावित हैं। कल सुबह ठीक आठ बजे वे शिवा और तुम्हारे लिए एक अंतरिक्ष यान भेज देंगे।''

इन शब्दों के साथ चेयरमैन ने इशारा किया कि बैठक खत्म हो गई। मैंडावासियों ने भी सिर हिलाया।

''घुटने टेक दिए। हमारी मानव जाति में जरा भी साहस नहीं है, बिलकुल भी संघर्ष की क्षमता नहीं बची है।'' शिवा ने तीखे शब्दों में कहा, जब उसे इस एकतरफा बातचीत की सूचना दी गई।

पर ए बी सहमत नहीं था—''देखो शिवा! उन्होंने सहज ही हमें निहत्था बना दिया। हम उन्हें किसी भी तरीके से नष्ट नहीं कर सकते हैं, और मुझे भी इस एकतरफा जंग में शहीद होने का शौक नहीं चढ़ा है। हाँ, अगर हम जिंदा रहे तो कुछ कर भी सकते हैं।''

''हाँ, गुलामों की तरह जिंदा रहने की उम्मीद तो कर ही सकते हैं।''

''एक पल के लिए सोचो तो सही! हो सकता है, आखिरकार हमें वहाँ से बाहर निकलने का रास्ता मिल जाए।''

''जैसे कि हमारे तेज दिमाग हमसे कहीं ज्यादा इन बुद्धिमान प्राणियों को मूर्ख बना देंगे।'' शिवा ने कटाक्ष किया।

''बुद्धिमान भले ही हों, मगर क्या वे चालाक भी हैं?'' ए बी ने पूछा।

''ठीक है, तुम चालाक बनते रहो। हम भी देखते हैं कि तुम कहाँ तक जा पाते हो। जहाँ तक मेरा संबंध है, तो मुझे किसी मशहूर विज्ञान कथा लेखक की दो सौ या सौ साल पुरानी लिखी कहानी याद आती है, जिसे मैंने काफी पहले पढ़ा था। उसमें मंगलवासियों ने धरती पर हमला किया था। तब भी मनुष्यों में भगदड़ मच गई थी और उन्होंने जल्द ही घुटने टेक दिए थे।'' शिवा ने कहा।

''वह लेखक था एच.जी. वेल्स। परंतु कहानी का अंत भी याद करो, अंत में मंगलवासियों की हार हुई थी।'' ए बी ने याद दिलाया।

''वह इसलिए, क्योंकि मंगलवासी धरती के जीवाणुओं और विषाणुओं के आगे टिक नहीं सके थे। उसमें मनुष्यों की चालाकी ने कौन सा तीर मार लिया था।'' शिवा ने कहा।

ए बी ने कोई जवाब नहीं दिया। पर अचानक ही वह खामोशी के साथ कमरे में तेज कदमों से चहलकदमी करने लगा।

शिवा समझ गया कि ए बी का महान् दिमाग अपनी पूरी ताकत से काम कर रहा है।

''हाँ, शायद यह काम कर जाए, इसे आजमाना चाहिए।'' अचानक ही ए बी जोर से चिल्लाया।

शिवा मुसकराया—''हाँ, अनुमान लगा सकता हूँ कि तुम्हारी सोचनेवाली मशीन किस प्रकार काम कर रही है। पर मैं बता दूँ कि इससे काम बननेवाला नहीं। तुम्हारा विचार प्रारंभ से ही विफल होनेवाला है।''

''क्या काम नहीं करेगा?'' ए बी ने पूछा। वह अब भी सोच-विचार में डूबा हुआ था।

''तुम यही सोच रहे हो न कि धरती के सूक्ष्म जीवों की चपेट में आकर मैंडावासी भी धराशायी हो जाएँगे। पर यह मत भूलो कि उनमें से तीन जिनेवा तक हो आए हैं और उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। इसलिए अपने विचार को भूल जाओ।'' शिवा उठकर खड़ा हो गया। अब एक घंटे बाद ही उन्हें बंधकों के रूप में अपनी भूमिकाएँ शुरू करनी थीं।

मगर ए बी प्रसन्नचित्त और तनावमुक्त लग रहा था। उसने शिवा की पीठ ठोंकी और बोला, ''मैं भी इतना मूर्ख नहीं हूँ, मेरे प्यारे वॉटसन! मेरे पास वह नायाब तरकीब है जो केवल तुम्हीं चला सकते हो। आओ, अभी भी कुछ उम्मीद बाकी है।''

और जब उसने अपनी तरकीब समझानी शुरू की तो शिवा के चेहरे की रंगत बदलने लगी। अब वह बहमी कम और खुद पर भरोसा रखनेवाला ज्यादा लग रहा था।

□

शिवा और ए बी को बंधक बनाकर मैंडा के अंतरिक्ष यान में ले जाया गया। वहाँ रहते हुए उन्हें दो दिन बीत गए। उनके साथ सभ्य व्यवहार किया गया। वे विशाल अंतरिक्ष यान के भीतर अपनी मरजी से कहीं भी घूम-फिर सकते थे। जाहिर है कि मैंडावासी इन बंधकों से कोई खतरा महसूस नहीं कर रहे थे।

ए बी ने यान के चालक के साथ दोस्ती गाँठ ली, जबकि शिवा कंप्यूटर प्रणाली के इंचार्ज जोरो का दोस्त बन गया।

तीसरे दिन शिवा ने जोरो से कहा, ''जोरो, क्या तुम मुझे दिखा सकते हो कि तुम्हारा कंप्यूटर कैसे काम करता है?''

''क्यों नहीं, अगर तुम चाहो तो अभी चलें।'' जोरो ने मुसकराकर कहा। वह शिवा को अपने साथ एक आयताकार बक्से के पास ले गया, जो करीब एक मीटर लंबा, एक मीटर चौड़ा और आधा मीटर ऊँचा रहा होगा।

''यह क्या है?'' शिवा ने पूछा।

''हमारा कंप्यूटर। यह तुम्हारे सबसे अच्छे हाइपर कंप्यूटर से सौ गुना ज्यादा तेज है और इसमें दस लाख गुना ज्यादा मेमोरी है। हमारे बेड़े में यही सब चीजों पर नियंत्रण रखता है।''

''पूरे बेड़े पर?'' शिवा ने अविश्वास से पूछा।

''हाँ! और तुम्हारे सभी लोगों से भी यही निबट रहा था। यह वास्तव में एक चमत्कार है; पर हमारे ग्रह पर इससे भी बड़ी-बड़ी प्रणालियाँ हैं।'' कंप्यूटर को थपथपाते हुए जोरो गर्वीले स्वर में बोल रहा था। उसने बोलना जारी रखा—''यह 'खिलौना' हमारे ग्रह पर मास्टर कंप्यूटर से जुड़ा है।''

''लेकिन वह तो छह प्रकाशवर्ष दूर है।''

''हाँ, दुर्भाग्य से हम प्रकाश से भी तेज गति से संदेश नहीं भेज सकते हैं। मगर फिर भी यह कंप्यूटर हमारे मास्टर कंप्यूटर के संपर्क में रहता है। अगर यह आज कोई संदेश भेजे तो वह मास्टर कंप्यूटर को छह साल बाद मिलेगा—एकदम साफ और ऊँचे स्वर में। पर तुम मेरी बातों पर शक क्यों कर रहे हो?''

सवाल सुनकर शिवा के चेहरे पर संदेह के भाव तैरने लगे। उसने जल्दी से जोरो को आश्वस्त किया, ''बेशक, तुम जो बता रहे हो, उस पर मुझे विश्वास है; पर...'' वह कुछ पलों के लिए रुका और फिर दोबारा बोला, ''क्या मैं इसका इम्तहान ले सकता हूँ? मेरे पास एक समस्या है, जिसे हमारा हाइपर कंप्यूटर एक मिली सेकंड के दस लाखवें भाग में हल कर देता है। क्या मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारा यह साथी उसे कितनी देर में सुलझाता है?''

''बिलकुल, मुझे बताओ, मैं पहले तुम्हारी प्रोग्रामिंग भाषा को अपनी भाषा में बदल दूँ।'' पहले तो उसकी पेशकश पर शिवा थोड़ा ठिठक गया; लेकिन फिर अपने ब्रीफकेस तक गया और उसमें से एक गोल डिस्क निकाल लाया।

फिर बोला, ''देखें, तुम्हारा कंप्यूटर इस छोटी पहेली को हल करने में कितना वक्त लेता है।''

जोरो ने डिस्क अपने हाथ में ली और एक विशेष उपकरण से उसे स्कैन किया। यह उपकरण डिस्क की भाषा का विश्लेषण कर इसके प्रोग्राम की मैंडानी कंप्यूटर की भाषा में बदल डालता है।

उपकरण पर जलती लाल बत्ती बताती है कि काम पूरा हो गया। जोरो मुसकराया और बोला, ''अब तुम्हारा प्रोग्राम हमारी भाषा में आ गया है; हमारे कंप्यूटर के लिए इसे सुलझाना मामूली सी बात है।''

यह कहकर उसने एक बटन दबाकर कंप्यूटर को काम पर लगा दिया।

उधर शिवा ने राहत की साँस ली और आगे के घटनाक्रम का इंतजार करने लगा।

''यह रहा तुम्हारा जवाब।'' जोरो ने प्रिंटर से निकले प्रिंटआउट को लहराते हुए गर्वीले स्वर में कहा। एग्जीक्यूशन टाइम ढाई माइक्रो सेकंड, तुम्हारे मानक से यानी तुम्हारे कंप्यूटर से करीब 400 गुना ज्यादा तेज।

''ठीक है, श्रीमान! मैं हार स्वीकार करता हूँ।'' शिवा ने कुछ-कुछ पराजित स्वर में कहा। लेकिन भीतर-ही-भीतर वह उत्तेजना से काँप रहा था। क्या अंत में उसकी जीत होने वाली थी?

□

उसके बाद घटनाक्रम तेजी से बदला। कुछ रहस्यमय कारणों से एलियन बेड़े की सभी स्वचालित प्रक्रियाएँ ध्वस्त होने लगीं। कुछ भी ठीक से काम करता दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि लगता था कि सब चीजों पर नियंत्रण रखनेवाला कंप्यूटर पगला गया है। जब तक हो सका, मैंडा ग्रह पर संदेश भेजे गए। लेकिन इन संदेशों को वहाँ पहुँचने और वहाँ से किसी तरह की मदद आने में बारह साल लगेंगे। बेड़े के कमांडर ने तय किया कि अपने कंप्यूटर के बिगड़ने से उनका जिंदा बच पाना मुश्किल है। तेजी से खराब होते संदेश प्रसारण के बीच उसने धरती के बेड़े को एस.ओ.एस. यानी आपातकालीन संदेश जैसा ही कुछ भेजा।

धरती के बेड़ों ने आनन-फानन में काररवाई करते हुए सभी मैंडावासियों को पकड़ लिया और उन्हें निरस्त्र कर धरती पर ले आए।

□

''शिवा, तुमने तो कमाल कर दिया। इसका विचार तुम्हें कैसे आया?'' दोनों बंधकों के साथ निजी गुफ्तगू करते हुए अमरजीत सिंह ने पूछा।

शिवा ने ए बी की ओर देखते हुए जवाब दिया, ''यह विचार मेरा नहीं था श्रीमान, ए बी के उपजाऊ दिमाग से आया था।''

''और मुझे यह तरकीब सूझी एच.जी. वेल्स की कहानी से, जिसमें मंगल ग्रहवासी धरती पर आक्रमण करते हैं। लेकिन यहाँ पर इस मामले में थोड़ा अंतर था। मंगलवासी, जो धरती के सूक्ष्म जीवों का हमला नहीं झेल सके थे, के विपरीत मैंडावासी इन सूक्ष्म जीवों से बेअसर थे। लेकिन उनका कंप्यूटर वायरसों का अभ्यस्त नहीं था।'' ए बी ने बताया।

''कंप्यूटर में वायरस! वह क्या होता है?'' सिंह ने पूछा।

शिवा जोर से हँसा—''बहुत मामूली चीज है, श्रीमान! बीसवीं सदी के आखिरी वर्षों में कंप्यूटर प्रकट होने लगे थे। ये वायरस असल में छोटे-छोटे प्रोग्राम होते थे, जिन्हें चोरी-छिपे कंप्यूटर प्रोग्राम में डाल दिया जाता था और जो कंप्यूटर के सामान्य कामकाज में गंभीर व्यवधान पैदा कर देते थे। नतीजा? उनका कंप्यूटर सौंपे गए एक भी काम को ठीक से नहीं कर पाया।''

ए बी ने बताया, ''लेकिन हमें अपनी प्रणालियों में वायरसों की जरा भी परवाह करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अब हमारे पास सुरक्षा के तमाम उपाय हैं। लेकिन मैंने सोच-समझकर खतरा उठाया है कि हो सकता है, मैंडावासी

इस संभावना से बेखबर हों और उन्होंने इस चीज से निपटने की तैयारी न कर रखी हो।''

''तो इस तरह मैंडावासियों को जैविक वायरसों से परेशान करने के बजाय एक अदने से कंप्यूटर वायरस ने उनकी भारी-भरकम प्रणाली को ध्वस्त कर दिया!'' सिंह ने गद्‌गद होते हुए कहा, ''पर तुमने वायरस को उनकी प्रणाली में डाला कैसे?''

अपना गला साफ करते हुए शिवा ने बताया, ''करीब पचास साल पहले मुझे एक घातक वायरस का पता चला। अब यह पुराने प्रोग्रामों और वायरसों के संग्रहालय में संरक्षित है। यह काम हालाँकि गैर-कानूनी है, लेकिन फिर भी मैंने इसे अपनी आधुनिक प्रणाली में अपना लिया और गणित के एक सवाल के साथ जोड़ दिया। इस तरीके से किइसे आसानी से अलग न किया जा सके। मैंडावासियों के कंप्यूटर इंचार्ज के बड़बोलेपन को चकमा देना आसान था। उसने जोश में आकर यह पहेली अपनी प्रणाली में डाल दी और फिर जो कुछ हुआ, आपको पता ही है, श्रीमान!''

''और फिर वायरस के हमले से घबराए मैंडावासियों ने बिना जाने कि यह क्या चीज है, अपने ग्रह पर रखे मुख्य कंप्यूटर से संपर्क साध लिया। तो इस तरह शिवा का वायरस अंतरिक्ष की अनंत दूरियों को नापता हुआ छह साल में मैंडावासियों के मुख्य कंप्यूटर को भी बिगाड़ देगा।'' ए बी ने बात पूरी की।

''तो तुम दोनों ने उस भारी खतरे को टाल दिया जो हमारे सिर पर मँडरा रहा था। अब हम धरतीवासी चैन की नींद सो सकेंगे।'' अमरजीत सिंह ने कृतज्ञता से कहा। साथ ही उसने निश्चय किया कि उन दोनों बहादुर नायकों को विशेष 'विश्व सम्मान' दिया जाएगा।

लेकिन वे दोनों नायक स्वयं पूरी तरह से बेफिक्र नहीं थे। सच है कि खतरा फिलहाल टल गया था और वे छह जमा पच्चीस यानी इकतीस साल के लिए सुरक्षित थे। लेकिन यह भी तय था कि मैंडावासी इस समस्या से उबर जाएँगे और दोबारा धरती पर आक्रमण करेंगे, तब उस आक्रमण को टालने के लिए धरतीवासी क्या करेंगे?

उनके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था, कम-से-कम फिलहाल तो नहीं।

❑

6

धूमकेतु

दिसंबर के महीने में अमावस की काली रात थी। खिड़की से आता ठंडी हवा का झोंका इंद्राणी देवी की नींद उड़ाने के लिए काफी था। उनींदी अवस्था में उन्होंने बगलवाले तकिए को टटोलकर देखा। हालाँकि सच्चाई उन्हें पता थी, दत्ता दा अपने बिस्तर पर नहीं थे।

फिर उन्होंने दरवाजे की ओर देखा। अब उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया, क्योंकि दरवाजा पूरा खुला हुआ था।

''तो वह फिर उसी कमबख्त दिव्या से यारी निभाने गए हैं। कम-से-कम दरवाजा बंद करने का ध्यान तो रखना चाहिए था।'' इंद्राणी देवी ने बड़बड़ाते हुए अपनी नाराजगी जताई; पर वे अपनी मुसकान को भी नहीं दबा पाईं। जानती थीं कि उनके पति घर-गृहस्थी की समस्याओं से पूरी तरह बेखबर हैं। क्या उनके डॉक्टर ने उन्हें ठंड से बचने के लिए सावधानी बरतने को नहीं कहा था? लेकिन वे इतने भुलक्कड़ थे कि उन्हें स्वेटर पहनने का भी ध्यान नहीं रहता, जो कि बगल में कुरसी पर पड़ा रहता था। याद भी कैसे रहता, उन पर तो दिव्या का जादू चढ़ा था!

इंद्राणी देवी ने शॉल लपेटा और सफेद पुलोवर उठाकर सीधे छत का रुख किया। उद्देश्य था अपने पति और दिव्या के बीच कबाब में हड्डी बनना।

छत पर उन्होंने पाया कि वे दोनों आँखों में आँखें डाले बैठे हैं। कम-से-कम दत्ता दा तो दिव्या की आँखों में डूबे हुए थे।

इंचों में दिव्या की कमसिन फिगर 8.64 थी—यानी अपर्चर आठ इंच और फोकल लेंग्थ 64 इंच।

जब से दत्ता दा को यह टेलीस्कोप मिला, उनके रोमांच का ठिकाना नहीं है। उन्होंने इसे नाम दिया—दिव्या चक्षु। आखिर वह इस ब्रह्मांड को इनसानी आँखों से बेहतर जो देख सकता था। लेकिन इंद्राणी देवी को टेलीस्कोप अपनी सौत के समान लगता था, जिसने उनके पति को फँसा लिया था। इसलिए वे इसे 'दिव्या' कहती थीं और उसका यही नाम प्रचलित हो गया।

लेकिन दत्ता दा के लिए तो दिव्या साकार हो चुके एक सपने की तरह था। शौकिया खगोलविद् होने के नाते उनका सपना था कि उनके पास भी ढेर सारे पैसे हों, जिनसे वे एक अच्छा टेलीस्कोप खरीद सकें। उनकी यह भी इच्छा थी कि उनके पास ढेर सारा वक्त हो कि वे भी सातों आसमानों तक देख सकें। नौकरी से रिटायर होने पर उनके ये दोनों सपने साकार हो गए। अब उनके पास टेलीस्कोप खरीदने के लिए काफी पैसा था और तारों को देखने के लिए बहुत सारा वक्त भी। टेलीस्कोप को उन्होंने अच्छी तरह अपनी छत पर लगा दिया और अब वे काली लंबी रातों में टिमटिमाते तारों को देर तक निहारते रहते। कम-से-कम इंद्राणी देवी का तो यही मानना था।

''लो, यह स्वेटर पहन लो। क्या तुम चाहते हो कि नवीन बाबू कल तुम्हें बिस्तर से उठने से ही मना कर दें?''

दत्ता दा ने स्वेटर पहन लिया और वापस मुड़कर टेलीस्कोप में अपनी आँखें गड़ा दीं। हालाँकि इंद्राणी देवी जानती थीं कि उनकी बातों से दत्ता दा के कानों पर जूँ नहीं रेंगेगी। फिर भी वे ताना मारने से खुद को नहीं रोक सकीं, ''वही पुराने सितारे।''

वही पुराने सितारे! अगर दत्ता दा इस ताने को सुन भी लेते तो भी वे इसका जवाब नहीं दे पाते। कोई संगीत-प्रेमी क्यों बार-बार पुराने राग को सुनना चाहता है, जिसे बार-बार बजाया जा रहा हो? कोई कला पारखी क्यों उसी

पुरानी तसवीर को घंटों यों ही निहारता रहता है? लेकिन दत्ता दा जानते थे कि उनके सिर पर तना काला आकाश हमेशा एक जैसा नहीं रहता।

काले आसमान की तसवीर बदलती रहती है, क्योंकि धरती सूर्य का चक्कर काटती है और सूर्य भी अपनी जगह पर स्थिर नहीं रहता। सूर्य ही क्यों, ध्रुवतारा भी अटल नहीं है और ग्रहों तथा उनके उपग्रहों को क्या कहा जाए, जो उन्हीं पुराने सितारों के बीच चलते-फिरते नजर आते हैं। और धूमकेतु?

किसी भी शौकिया खगोलविद् की तरह दत्ता दा की भी दबी हुई इच्छा थी कि वे भी एक दिन किसी नए धूमकेतु को खोज निकालेंगे; क्योंकि धूमकेतु नए भी हो सकते हैं। जैसा कि वे सौर मंडल के दूर-दराज के कोनों से आते हैं। ग्रहों की तरह धूमकेतु भी सूर्य का चक्कर लगाते हैं, लेकिन उनकी कक्षाएँ बहुत ही अनियमित होती हैं, इसलिए जब कोई धूमकेतु सूर्य के निकट आता है तो इसकी लंबी सी पूँछ मिल जाती है जो सूर्य की रोशनी में चमकती हुई दिखाई देती है। उसके बाद धूमकेतु अँधेरे में कहीं लुप्त हो जाता है तथा वर्षों या कई बार तो सदियों तक नहीं दिखता।

दत्ता दा को याद है कि 1986 में जब हैली धूमकेतु दिखाई दिया था तो चारों ओर कितनी उत्तेजना फैल गई थी! यह धूमकेतु 76 साल में एक बार सूर्य के निकट आता है। वह जानते थे कि इससे भी लंबी परिक्रमा अवधिवाले धूमकेतु भी अस्तित्व हैं। और ऐसा कोई धूमकेतु, जिसका कोई इतिहास दर्ज न हो, नया माना जाएगा और खोजकर्ता के नाम पर उसको नाम दिया जाएगा तो दत्ता दा की दबी हुई इच्छा थी—'दत्ता धूमकेतु' को खोज निकालना।

लेकिन आठ इंच के दिव्या के साथ ऐसा होने की कितनी संभावना थी? पेशेवर खगोलविदों के पास तो भीमकाय टेलीस्कोप होते हैं और एक-एक चीज को दर्ज करनेवाली इलेक्ट्रॉनिक गैजिटरी भी। उनके आगे तो दिव्या टेलीस्कोप बच्चा था।

लेकिन दत्ता दा आशावादी थे। वे जानते थे कि जो पेशेवर खगोलविद् हैं वे अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार ही काम करते हैं, यानी लकीर के फकीर हैं। वे धुँधले तारों को देखेंगे, बादलों जैसी आकाशगंगाओं को देखेंगे और बहुत दूर स्थित किसी फटते हुए तारे को देखेंगे। हो सकता है कि वे धूमकेतु जैसी किसी मामूली चीज को नजरअंदाज कर दें, जिसकी कि उन्हें देखने की बिलकुल भी उम्मीद न हो। सच तो यही है कि शौकिया खगोलविदों ने ही अकसर नए-नए धूमकेतुओं को खोजा था, जिन्हें पेशेवरों ने नजरअंदाज कर दिया था।

और दत्ता दा को ऐसा लगता था कि आज की रात बहुत बड़ी रात होने जा रही है।

उन्हीं पुराने सितारों के बीच दत्ता दा ने एक धुँधले से अजनबी को खोज निकाला। वह अजनबी ही था। दत्ता दा ने अपने पास रखे चार्टों से उसका मिलान किया। दिव्या के शीशों की जाँच की कि कहीं उन पर मैल तो नहीं जम गया है और टॉर्च की रोशनी में अपने जेबी कैलकुलेटर पर जल्दी-जल्दी कुछ गणनाएँ कीं। भले ही वे घर-गृहस्थी के कामों में अनाड़ी और भुलक्कड़ हों, लेकिन अपने प्रेक्षणों के मामले में वे सूक्ष्म-से-सूक्ष्म चीजों का ध्यान रखते थे।

सचमुच कोई गलती नहीं थी। वे जिस चीज को देख रहे थे वह पहले वहाँ नहीं थी और किसी नए धूमकेतु की तरह ही लगती थी। फिर भी वे दो बजे रात तक उसकी जाँच करते रहे।

धीरे-धीरे रात बीत गई और पूर्वी आकाश में भोर का उजाला फैलने लगा। अब तारों को देखना संभव नहीं था। दत्ता दा के रोमांच का ठिकाना नहीं था। उनसे कुछ दूरी पर ही दक्षिणेश्वर मंदिर में लोगों की चहल-पहल शुरू हो गई। फिर बेलूर मठ में भी लोगों का आना-जाना चालू हो गया। जल्द ही कोलकाता की बजबजाती शहरी जिंदगी

शुरू हो जाएगी और आसमान में क्या हुआ, इसकी किसी को परवाह नहीं रहेगी।

❑

दत्ता दा ने दिव्या को किट में रखा और छत से नीचे आ गए। क्या उन्हें यह बड़ी खबर सुनाने के लिए इंद्राणी को जगाना चाहिए? उन्होंने गहरी नींद में सोती पत्नी के शांत चेहरे को देखकर उसे छेड़ना ठीक नहीं समझा। वे जानते थे कि उन दोनों का जीवन चलाने के लिए वह दिन भर कितनी कड़ी मेहनत करती है। इसलिए दत्ता दा चुपचाप अपने बिस्तर पर लुढ़क गए।

और जल्दी ही उनके संतुष्टि भरे खर्राटे कमरे में गूँजने लगे।

दो दिन बाद 'आनंद बाजार पत्रिका' में सनसनीखेज खबर छपी—

'कोलकाता निवासी ने नया धूमकेतु खोजा'

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

कोलकाता के उत्तरी उपनगर के निवासी श्री मनोज दत्ता का दावा है कि उन्होंने एक नया धूमकेतु खोजा है। पिछली दो रातों से उन्होंने इस धूमकेतु को देखा है और उसकी स्थिति के बारे में बंगलौर स्थित 'इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स' को सूचित कर दिया है। आई.आई.ए. के पास कवलूर में 90 इंच का एक टेलीस्कोप है, जो एशिया में सबसे बड़ा है। इस टेलीस्कोप ने भी दत्ता की खोज की पुष्टि की है, जो उनके शौकिया खगोलविद् के जीवन में सबसे बड़ी उपलब्धि होने जा रही थी। अपने मित्रों और प्रशंसकों के बीच 'दत्ता दा' के रूप में लोकप्रिय श्री दत्ता का अनुमान है कि अगले कुछ महीनों में धूमकेतु नंगी आँखों से दिखने लगेगा। अपनी इस खोज का सारा श्रेय वे अपने आठ इंच के टेलीस्कोप 'दिव्या' को देते हैं।

❑

उसके बाद केवल एक हफ्ते के भीतर ही 'दत्ता धूमकेतु' को सारी दुनिया में इसी नाम से मान्यता मिल गई।

आई.आई.ए. ने उन खोजों की पुष्टि की और सारी दुनिया की वेधशालाओं को सूचित कर दिया कि नए धूमकेतु को खोजने में मान्य प्रक्रिया अपनाई गई है। लिहाजा नए धूमकेतु का नाम उसके खोजकर्ता के नाम पर रख दिया गया।

इसके साथ ही अंतर्मुखी दत्ता दा दुनिया भर में मशहूर हो गए, जो उन्हें पसंद नहीं था। स्वागत और बधाई समारोहों का लंबा सिलसिला चालू हो गया, जिनमें दत्ता दा को मन मारकर उपस्थित होना पड़ता। इन समारोहों में प्राय: ऐसे लोग ही होते जिन्हें धूमकेतु के बारे में कुछ भी पता नहीं होता और जो खगोलशास्त्र को ज्योतिष विद्या समझकर लंबे-लंबे भाषण झाड़ते थे। ऐसे ही एक समारोह से लौटते समय दत्ता दा निराशा में बड़बड़ाए, ''काश, मैंने इस धूमकेतु को नहीं खोजा होता!''

उन्हें आश्चर्य हुआ कि इंद्राणी देवी भी उनकी इस इच्छा से सहमत थीं—''मैं भी चाहती हूँ, पर मेरे चाहने का कारण कुछ और है। मैं जानती हूँ कि क्यों आपके मुँह से ये शब्द निकले। आपको भीड़-भाड़ भरे समारोह से घृणा है। है कि नहीं?''

''बिलकुल ठीक, यह जरूरी है कि मुझे जो सम्मान और मान्यता मिल रही है, वह मुझे अच्छी लगती है और मैं अपने मित्रों एवं शुभचिंतकों का आभारी हूँ। पर क्या तुम नहीं सोचतीं कि हम भारतीय ऐसी चीजों में अति कर देते हैं? विज्ञान हो, खेलकूद या कला हो—अच्छे काम की प्रशंसा तो होनी ही चाहिए; लेकिन इसमें परिप्रेक्ष्य को भुला नहीं देना चाहिए।''

''हमारा समाज अभी इतना परिपक्व नहीं हुआ है कि महानता को अपने में समा सके। लेकिन मेरी तरह के बहुत कम लोग हैं जो इस तरह से महसूस करते हैं। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुमने यह क्यों कहा कि मैंने इस

धूमकेतु को नहीं खोजा होता।''

''धूमकेतु दुर्भाग्य लाते हैं और मैं चाहती हूँ कि आप जैसे अच्छे आदमी को किसी धूमकेतु की खोज से नहीं जुड़ना चाहिए था।'' इंद्राणी देवी ने चिंतातुर हो कहा।

दत्ता दा ठहाका लगाकर हँस पड़े।

''मैं देखता हूँ कि एम.ए. की डिग्री ने भी तुम्हारे अंधविश्वासों का इलाज नहीं किया है। किसी धूमकेतु के आगमन और धरती पर तबाहियों के बीच कोई संबंध नहीं है; बल्कि धूमकेतुओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया गया है और उनकी बनावट को अच्छी तरह समझा गया है।

''उनमें कुछ भी नुकसानदायक नहीं है। वे तो निष्क्रिय प्रणालियाँ हैं जो गुरुत्वाकर्षण बल में अपने आप खिंची चली आती हैं—हम मनुष्यों पर उनकी दिव्य या दानवी ताकत चलने की तो बात ही छोड़ दो! तुम जल्दी ही देखोगी कि मेरे द्वारा खोजा गया यह धूमकेतु हमारे पास से चुपचाप गुजर जाएगा और किसी के लिए कोई परेशानी पैदा नहीं करेगा।''

लेकिन अपनी इस आखिरी बात में दत्ता दा बिलकुल ठीक नहीं जा रहे थे।

कैंब्रिज के किंग्स कॉलेज के बड़े से दावतखाने में अभी-अभी रात की दावत खत्म हुई थी। कॉलेज के छात्र फेलो (प्राध्यापक) दावत में शरीक हुए थे। विद्यार्थीगण तो चुपचाप खाना खाकर जा चुके थे और अपनी-अपनी पढ़ाई या मौज-मस्ती में मशगूल थे। पर फेलो अभी-अभी दावतखाने की ऊँची मेज पर डटे हुए थे। डटकर खाने के बाद अब वे कॉलेज के तहखाने से निकाली गई शैटियू मॉण्टॉ रॉथ्स चाइल्ड जैसी पुरानी मदिरा का स्वाद ले रहे थे।

दरअसल, कॉलेज के प्राध्यापकों को कॉलेज की उत्कृष्ट मदिरा पर बहुत गर्व था। उन्हें शराब न पीनेवालों पर तरस आता था और पीकर धुत्त हो जानेवालों से घृणा होती थी। उनकी राय में ये दोनों ही तरह के पियक्कड़ शराब के नजाकत भरे स्वाद का मजा लेना नहीं जानते थे। इन शराब पारखियों में जेम्स फोटसिथ सबसे नया था। दस्तूर के अनुसार और जूनियर फेलो होने के नाते शराब, अखरोट एवं पनीर का दौर पूरा होने पर बत्तियाँ बुझाने का काम उसे ही करना पड़ता है और दस्तूर के अनुसार ही बोतलों में बची-खुची शराब भी वह घर ले जाकर पी सकता था। आज रात भी वह शराब का दौर थमने का इंतजार कर रहा था। पर आज ऐसा कुछ भी नहीं होने वाला था। शराब की खूबसूरत ट्रॉली ने लंबी मेज का एक चक्कर लगाया ही था कि रसोइए ने आकर प्रिंसिपल के कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। साथ ही चाँदी की ट्रे में उन्हें एक लिफाफा थमा दिया। प्रिंसिपल ने इशारे से जेम्स को अपने पास बुलाया और लिफाफा देते हुए कहा, ''ऐसा लगता है कि जिम, आज रात बची हुई शराब तुम्हें नहीं मिलेगी। लगता है, कमरे में तुम्हारी सख्त जरूरत है।''

□

जेम्स गिब्स द्वारा बनाई गई खूबसूरत इमारत की ओर बढ़ते हुए जेम्स ने लिफाफा खोला। इसमें एक छोटा सा संदेश था—

प्रिय डॉ. फॉरसिथ,

इस संदेशवाहक को निर्देश है कि वह आपको आज रात मेरे लंदनवाले कार्यालय में ले आए। कृपया अविलंब चले आएँ। मैं लंदन में आपके रात भर रुकने का इंतजाम कर रहा हूँ।

आपको हुई असुविधा के लिए मुझे खेद है। आपसे प्रार्थना है कि इस यात्रा को गोपनीय रखें। मेरा विश्वास करें, यह बहुत जरूरी है।

आपका विश्वसनीय,

हस्ताक्षर के नीचे करनेवाले की पदवी भी लिखी थी—

'प्रतिरक्षा विज्ञान सलाहकार', महामहिम महारानी की सरकार।'

जेम्स के कमरे में घुसते ही आतिशदान के पास बैठे, कटोरी जैसी टोपी पहने आदमी ने उनका स्वागत किया।

''मैं जॉनसन हूँ, श्रीमान। ह्वाइट हॉल में सुरक्षा अधिकारी।''

उसने अपना पहचान-पत्र दिखाया और आगे बोला, ''मैं समझता हूँ श्रीमान, आप मेरे यहाँ आने का कारण जानते हैं।''

''केवल उतना ही जितना इस संदेश में है।'' जेम्स ने उत्तर दिया। वह जानता था कि जॉनसन से और ज्यादा पूछताछ करना बेकार है—''मैं ज्यादा वक्त नहीं लूँगा, क्या तुम शेरी पीना पसंद करोगे?''

''नहीं श्रीमान! गाड़ी चलाते वक्त तो बिलकुल नहीं।''

जेम्स ने जल्दी-जल्दी अपना बैग तैयार किया और जॉनसन के पीछे-पीछे चल पड़ा। आगे का लॉन पार करते ही ग्रेट सेंट मेरी चर्च के घंटाघर ने नौ का घंटा बजाया।

लंदन तक एम 11 मोटर-वे पर जॉनसन ने अपनी फोर्ड कॉर्टिना डाल दी। डेढ़ घंटे के भीतर ही वे ह्वाइट हॉल के सामने खड़े थे। वहाँ सत्ता का गलियारा पार कर सर जॉन मैकफर्सन के कक्ष तक पहुँचने में उन्हें दस मिनट और लगे। जेम्स को सर जॉन से मिलाने के बाद गंभीर और अपने काम में होशियार जॉनसन चुपचाप वहाँ से चला गया।

''डॉ. फॉरसिथ, बेवक्त आपको यहाँ बुलाने के लिए माफी चाहता हूँ।'' सर जॉन ने कोट और स्कार्फ उतारने में जेम्स की मदद करते हुए कहा, ''और ज्यादा विलंब से बचने के लिए मैं सीधे पॉइंट पर आता हूँ।'' यह कहकर सर जॉन ने जेम्स को एक छपा हुआ परचा थमा दिया।

''यह क्या! यह तो मेरा परचा है जो मैंने 'नेचर' को भेजा था। आपको यह मूल प्रति कैसे और कहाँ से मिल गई?'' जेम्स हैरान था और कुछ-कुछ परेशान भी। क्या उसकी जासूसी की जा रही थी?

''नहीं-नहीं, यह जासूसी का मामला नहीं है।'' जेम्स की बेचैनी देखकर सर जॉन ने कहा, ''नेचर का संपादक टेलर मेरा मित्र है। हम ट्रिनिटी में साथ-साथ पढ़ते थे और अब रिफॉर्म क्लब में अकसर मिला करते हैं।'' हालाँकि सर जॉन ने साफ-साफ नहीं कहा था, पर जेम्स जानता था कि ट्रिनिटी से उनका मतलब ट्रिनिटी कॉलेज, कैंब्रिज से था।

''सर जॉन, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपको यह पांडुलिपि कैसे मिली? मैंने 'नेचर' से कहा था कि इसे अविलंब छाप दिया जाए, क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण है।'' जेम्स के चेहरे पर हैरानी के भाव झलक रहे थे।

''मैं भी मानता हूँ कि यह महत्त्वपूर्ण है। असल में यह इतना महत्त्वपूर्ण है कि इसे कभी प्रकाशित ही नहीं होना चाहिए—यानी आपने जो कहा है, अगर वह सच है तो।'' सर जॉन ने पाइप सुलगाया।

उसके काम की सटीकता पर कोई संदेह करे या कोई सच्चाई को दबाने का आदेश दे तो जेम्स को कभी भी सहन नहीं होता। पर क्योंकि सर जॉन सम्मानित वैज्ञानिक थे और उसकी बातों को सुनना भी चाहते थे, इसलिए जेम्स चुप था। दो कश खींचने के बाद सर जॉन ने बोलना शुरू किया, ''कृपया मुझे गलत न समझें, डॉ. फॉरसिथ। आज दोपहर के भोजन पर मैं टेलर से क्लब में मिला था, जहाँ उसने मुझे आपका परचा दिखाया। मेरी अभी भी खगोलशास्त्र में अच्छी-खासी रुचि है। आप जानते हैं किसी पेशेवर रेफरी के पास भेजने से पहले उसने इस पर मेरी राय माँगी है। मुझे तुरंत ही महसूस हुआ, आपने जो नतीजा निकाला है उसका बहुत गहरा असर होगा,

बशर्ते कि वह सही हो।''

''मेरा यकीन करें, सर जॉन, यह बिलकुल सही नतीजा है। मैंने इस पर अपना सारा कुछ दाँव पर लगा दिया है।'' जेम्स अपने आप पर और ज्यादा काबू नहीं रख पाया।

''हालाँकि आकाशीय यांत्रिकी में आपका बड़ा नाम है, पर मैं चाहूँगा कि इस बार आपकी गणना गलत साबित हो। आपने भविष्यवाणी की है कि धूमकेतु दत्ता धरती से टकराने जा रहा है। क्या आप जानते हैं कि इस टक्कर का नतीजा क्या होगा?''

''नतीजे तो विनाशकारी ही होंगे। इसलिए मैंने अपनी गणनाओं को जाँचने में ज्यादा सावधानी बरती। कुछ दुर्लभ परिस्थितियों को छोड़ दें तो यह टक्कर जरूर होगी।'' जेम्स के शब्दों में पूरा आत्मविश्वास झलक रहा था। तभी सर जॉन ने अप्रत्याशित सवाल दागा, ''और वे दुर्लभ परिस्थितियाँ क्या हैं?''

''हूँ, हो सकता है कि धरती पर पहुँचने से पहले ही वह किसी क्षुद्र ग्रह से टकरा जाए अथवा सूर्य के निकट आने पर फट जाए या भाप बनकर उड़ जाए।''

''लेकिन हम इन परिस्थितियों पर भरोसा नहीं कर सकते, जो खुद संयोग पर टिकी हों। हमें तो यही मानकर चलना होगा कि धूमकेतु दत्ता धरती से टकराएगा। इस तरह के धूमकेतुओं की धरती से टक्कर दस लाख वर्ष में एक बार होती है; पर अब हम जानते हैं कि अगले साल ही एक धूमकेतु धरती से टकराने जा रहा है।''

''नहीं, केवल दस महीने में।'' जेम्स ने बीच में ही टोका।

''भूल सुधार के लिए धन्यवाद! क्या तुम महसूस करते हो कि धरती पर जीव-जंतुओं की सारी प्रजातियों को बचाने के लिए हमारे पास केवल दस माह का वक्त है? क्योंकि इस सीधी टक्कर में ऐसा नहीं होगा कि धरती का केवल वही भाग तबाह हो जिससे धूमकेतु टकराएगा, बल्कि समुद्र का जल बड़े पैमाने पर भाप बनकर उड़ जाएगा। वातावरण के अभाव में वे जीव-जंतु भी नष्ट हो जाएँगे, जो टक्कर से बच जाएँगे। क्या तुम नहीं सोचते कि इस सबको रोकने के लिए हमें कुछ करना चाहिए?''

❑

जेम्स के चेहरे पर मुसकान तैर गई। 'बिलकुल सरकारी नौकर की तरह बोल रहा है! जैसे कि हमारे सामने कानून-व्यवस्था तोड़ने की कोई मामूली वारदात हो।' जेम्स ने सोचा। लेकिन प्रकट रूप में कहा, ''मैं पूछ सकता हूँ कि कैसे हम इस प्राकृतिक आपदा को टाल सकते हैं?''

''मैं नहीं जानता, पर हमारे पास कोशिश करने के अलावा और कोई चारा नहीं है। मैं सोचता हूँ कि इस मुसीबत से निपटने के लिए हमें दो से ज्यादा खोपड़ियों की जरूरत पड़ेगी। यह जरूरी है कि सारी दुनिया से विशेषज्ञों की बैठक तुरंत बुलाई जाए और इस आपदा को टालने के लिए गंभीरता से विचार-विमर्श किया जाए। यह सब काम पूरी गोपनीयता से होना चाहिए।'' जेम्स के हाथों में पकड़ी पांडुलिपि को देखते हुए सर जॉन ने कहा, ''जरा सोचो, अगर दिल दहला देनेवाली यह खबर लीक हो जाए तो दुनिया में कितनी भगदड़ मच जाएगी!''

''लेकिन मेरे इस परचे को दबा लेने से सच्चाई छुप तो नहीं जाएगी, सर जॉन!'' जेम्स ने कहा, ''दुनिया में और भी वैज्ञानिक हैं, जो देर-सबेर इसी नतीजे पर पहुँचेंगे।''

''नहीं-नहीं, इसे दबाओ नहीं, पर इसकी भाषा को जरा गोलमोल कर दो। इसमें जगह-जगह पर 'अगर-मगर' जोड़ दो, ताकि लगे कि तुम्हारा निष्कर्ष निश्चित नहीं है। इस बीच मैं अन्य देशों में अपने मित्रों पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर उन्हें भी संयम बरतने को कहूँगा।''

''पर कब तक?''

''जब तक कि यह कमबख्त धूमकेतु चुपचाप अपने रास्ते पर चला नहीं जाता है। आओ, कुछ वक्त लगाकर हम इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारी के लिए योजना बनाएँ। क्या हम इस बैठक को एक हफ्ते में बुला सकते हैं, इसी जगह?''

अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की अहम लेकिन गोपनीय बैठक, वह भी केवल एक हफ्ते के भीतर! जेम्स को कुछ संदेह था, पर सर जॉन उससे सहमत नहीं हुए और बैठक की योजना बनाने में जुट गए।

जिस वक्त तक उनकी बातचीत खत्म हुई और सर जॉन ने जेम्स को रीजेंट्स स्ट्रीट पर उनके होटल पहुँचवाया, रात के एक बज चुके थे। सड़क पूरी तरह सुनसान पड़ी थी। तभी अनायास ही जेम्स की निगाह ऊपर को उठी। खिड़की के बाहर तारों भरा आसमान उसका स्वागत कर रहा था। उन्हीं सितारों के बीच कहीं दत्ता धूमकेतु था, जो सीधे धरती से टकराने आ रहा था। ऐसी नीरवता भरी रात में यकीन करना मुश्किल था कि भविष्य में कितनी भीषण तबाही होने जा रही है। एक पल के लिए तो जेम्स को भी लगा कि उसके गुणा-भाग में कोई गलती तो नहीं हो गई।

अभी तक जेम्स के मन में सर जॉन की विद्वत्ता को लेकर जो कुछ शक था वह भी जाता रहा। जब वह बैठक में भाग लेने वहाँ पहुँचा तो देखा कि जिन विशेषज्ञों की सूची बनाई गई थी, वे सभी वहाँ मौजूद थे। खगोलशास्त्री, कंप्यूटर वैज्ञानिक, नाभिकीय भौतिकविद्, अंतरिक्ष विज्ञानी, जीव विज्ञानी—सब-के-सब बैठक में मौजूद थे और सर जॉन ने खास तौर पर उस शख्स को भी बुलाया था जिसकी खोज से इस बवाल की शुरुआत हुई—मनोज दत्ता।

सम्मेलन करीब एक सप्ताह तक चला। पूरी काररवाई की किसी को भनक तक नहीं लगी। सबसे पहले तो वरिष्ठ विशेषज्ञों ने जेम्स फॉरसिथ की गणनाओं का धूमकेतु दत्ता के ताजा प्रेक्षणों से मिलान किया। वह बिलकुल ठीक था। उसने जिस सीधी टक्कर की भविष्यवाणी की थी उससे कोई बचाव नहीं था। इस बात की मामूली सी संभावना थी कि धूमकेतु धरती से टकराकर नहीं, बस वातावरण को रगड़ता हुआ निकल जाए। वैसी सूरत में जान-माल का भारी नुकसान नहीं होता; पर यह मामूली राहत यह आश्वस्त करने को अपर्याप्त थी कि कोई काररवाई न की जाए।

किसी-न-किसी काररवाई पर फैसला लेना जरूरी था, पर काररवाई किस रूप में की जाए? जमीन के नीचे बंकर बनाने और उनमें छिपने जैसे रक्षात्मक उपायों को विशेषज्ञों ने एक सिरे से नकार दिया। तकनीकी, जीव वैज्ञानिक और राजनीतिक रूप से ऐसा करना व्यावहारिक नहीं था। इसलिए एक ही रास्ता बचता था कि पलटकर धूमकेतु पर ही वार किया जाए। गंभीर विचार-विमर्श करने के बाद विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हुए कि क्या किया जा सकता है। धूमकेतु दत्ता को धक्का देकर अपने मार्ग से कुछ विचलित किया जा सकता था।

विशेषज्ञों ने गणना करके हिसाब लगाया कि धरती पर उपलब्ध तमाम विनाशक नाभिकीय हथियारों की जरूरत पड़ेगी, तभी उस धूमकेतु को अपने पथ से बाल भर हटाया जा सकेगा। पर उसके लिए सही जगह पर, सही दिशा में और एकदम सही समय पर बेहद विशालकाय एटमी धमाका करना पड़ेगा, तभी यह तरकीब काम करेगी, वरना...इन तमाम एटमी हथियारों को किसी अंतरिक्ष यान में लादकर इस तरह रवाना किया जा सकता कि वह धरती की ओर बढ़ रहे धूमकेतु को रास्ते में ही रोक लें। तब फिर रिमोट कंट्रोल से उन हथियारों में एक साथ धमाका कराया जा सकता है। साथ ही विशेषज्ञों ने यह चेतावनी भी दी कि सफलता की बहुत कम गुंजाइश है—अगर दोनों का समय पर मिलन न हो पाया तो...? सारी-की-सारी कवायद पर पानी फिर जाएगा। परिणाम कुछ भी हो—सफलता या असफलता, पूरी गोपनीयता बरतनी जरूरी थी। आखिरकार पूरी काररवाई के लिए टाइम-

टेबल तय हो गया—

10 अक्तूबर : एटमी हथियारों से लदे अंतरिक्ष यान को रवाना किया जाएगा, बशर्ते कि तब तक धूमकेतु प्राकृतिक कारणों से नष्ट न हो गया हो या अपने पथ से विचलित न हो गया हो।

15 नवंबर : धूमकेतु के साथ यान का मिलन और हथियारों के जखीरे में धमाका।

15 दिसंबर : अगर सारी कवायद असफल रही तो इस दिन धूमकेतु धरती से टकरा जाएगा और अगर सफल रही तो इस दिन धूमकेतु धरती के निकट सुरक्षित दूरी से आगे निकल जाएगा।

इसके अलावा इस प्रयास की सफलता इस बात पर भी निर्भर थी कि धूमकेतु कितना भारी था। कोई भी इसका अनुमान नहीं लगा सका। प्रत्येक को बस उम्मीद थी कि धूमकेतु बहुत ज्यादा भारी न हो।

''क्या आपको वास्तव में विश्वास है कि हम इसमें सफल होंगे?'' दत्ता दा ने सर जॉन मैकफर्सन से पूछा। पिछले एक हफ्ते में दोनों के बीच पक्की दोस्ती हो गई थी।

''श्रीमान दत्ता, मैं अपना जवाब पूरी ईमानदारी से दूँगा। 15 दिसंबर तक मैं क्रिसमस के लिए कोई भी उपहार नहीं खरीदूँगा।''

❑

सम्मेलन के बाद दो सप्ताहों तक दत्ता दा ब्रिटिश द्वीपों की सैर करते रहे। वहाँ की वेधशालाओं का भ्रमण करने और पेशेवर व शौकिया खगोलविदों से बातचीत करने में उन्हें बहुत आनंद आया। कोलकाता वापस लौटने पर भी उनके मित्रों, सामाजिक नेताओं, स्वयंसेवकों, विद्यार्थियों और सामान्य जन ने उनका बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया। फूल-मालाओं से लदे और पत्रकारों के सवालों की बौछार का सामना करते हुए वे अपनी कार तक गए, जो बाहर उनका इंतजार कर रही थी।

घर पहुँचकर उन्होंने देखा कि एक पंडाल के नीचे अलग ही प्रकार की भीड़ जमा है। उन्होंने प्रश्नसूचक दृष्टि से इंद्राणी देवी की ओर देखा। वास्तव में वह जानती थीं कि दत्ता दा को भीड़-भाड़ पसंद नहीं। कुछ परेशान-सी दिखती इंद्राणी देवी ने कारण बताया, ''मैंने एक यज्ञ का आयोजन किया है और तुम्हें अशीर्वाद देने के लिए पंडितों को बुलाया है।''

इतना कहकर इंद्राणी देवी ने शिवाजी बाबू की ओर देखा, जो उनके पति यानी दत्ता दा के छोटे भाई थे। शिवाजी बाबू ने खखारकर गला साफ किया और बोले, ''जब से आपने धूमकेतु को खोजा है तब से हम सभी बहुत परेशान हैं। गुरुजी ने हमें सुझाव दिया है कि धूमकेतु की बुरी आत्मा की शांति के लिए यज्ञ करवा लें। हम सभी आपका इंतजार कर रहे हैं कि आप भी यज्ञ करें।''

''क्या मैं जान सकता हूँ कि इस ताम-झाम का खास फायदा क्या है?'' बाहर से दत्ता दा शांत दिख रहे थे।

''इससे जो धूमकेतु आपने खोजा है, वह धरती पर कोई बुरा असर नहीं डालेगा।''

इस बात पर दत्ता दा अपना आपा खो बैठे—''क्या तुम जानते नहीं कि यह सब अंधविश्वास है? इस सबका पुराने जमाने में महत्त्व रहा होगा, जब आदमी नहीं जानता था कि धूमकेतु क्या है। आज आधुनिक समय में ये सब बेकार की चीजें हैं। धूमकेतुओं के बारे में आज सारी जानकारी है कि वे क्या हैं! उनकी गति के बारे में गणित की गणनाओं द्वारा सटीक भविष्यवाणी की जाती है और आँकड़ों से पता चलता है कि धूमकेतुओं के आने और धरती पर मची तबाहियों के बीच कोई संबंध नहीं है।

लेकिन तुम लोगों को यह सब बताना बेकार है। तुम और तुम जैसे लोग विज्ञान की प्राथमिक किताबें भी कभी नहीं पढ़ते हो।

शिवाजी बाबू ने धीरे से कहा, ''मगर हमारे समझदार पूर्वजों ने ऐसे यज्ञों का विधान किया है।''

''शिवाजी बाबू, कभी-कभी मैं महसूस करता हूँ कि ऐसे रीति-रिवाजों का आँख मूँदकर पालन करने से हम अपने पुरखों के साथ बड़ा अन्याय करते हैं। उपनिषदों के जमाने में जाओ तो तुम्हें पता चलेगा कि उनमें भी हर चीज के बारे में प्रश्न पूछा जाता है। यही बात आधुनिक विज्ञान में है। उपनिषदों के रचयिता प्रकृति के बारे में जानना चाहते थे, ब्रह्मांड के बारे में जानना चाहते थे और आस्था के आधार पर कुछ भी स्वीकार नहीं करते थे। वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण न जाने कब और कहाँ लुप्त हो गया। इसकी कीमत हम आज भी चुका रहे हैं; लेकिन तुम लोगों से बहस करने का क्या फायदा! मैं अपना जवाब सीधे ही दे देता हूँ—नहीं, मैं तुम लोगों की इस बेवकूफी भरी पार्टी में शामिल नहीं होना चाहता, क्योंकि मैं नहीं मानता कि इससे कुछ लाभ होगा।''

दत्ता दा पैर पटकते हुए अपने अध्ययन-कक्ष में चले गए, जहाँ उन्हें शांति मिलती थी।

लंदन से लौटने के बाद दत्ता दा का सर जॉन मैकफर्सन के साथ नियमित पत्र-व्यवहार चलता रहा। अब वे एक-दूसरे की विद्वत्ता के प्रशंसक मात्र नहीं रह गए थे, बल्कि पक्के दोस्त बन गए थे। सर जॉन दत्ता दा के वैज्ञानिक नजरिए की सराहना करते थे तो दत्ता दा सर जॉन के अनुशासन और कार्यकुशलता के कायल थे। उनके व्यवहार में कभी भी प्रोजेक्ट लाइट ब्रिगेड का जिक्र नहीं होता था। अलबत्ता सर जॉन इस परियोजना की प्रगति के बारे में कभी-कभार गुपचुप इशारा जरूर करते थे, जो दत्ता दा की समझ में आ जाता था।

सर जॉन को टेनीसन की कविताओं से बहुत लगाव था। उन्हीं की एक कविता से प्रेरित होकर उन्होंने धूमकेतु पर आक्रमण करने के कार्यक्रम को कोड नाम दिया था—'प्रोजेक्ट लाइट ब्रिगेड।' इस कार्यक्रम को दुनिया के सभी देशों से भरपूर मदद मिल रही थी। आखिरकार मनुष्य जाति के अस्तित्व का सवाल था, जिसके कारण सभी देशों ने वैर और प्रतिद्वंद्विता को भुलाकर आपस में हाथ मिला लिये थे।

धूमकेतु दत्ता अपने निर्धारित मार्ग पर आगे बढ़ रहा था। इसी दौरान उसकी पूँछ भी निकल आई थी। उसने सूर्य का चक्कर लगाया और चूर-चूर नहीं हुआ। किसी भी अप्रत्याशित टक्कर से वह अपने मार्ग से विचलित नहीं हुआ। प्रोजेक्ट लाइट ब्रिगेड से जुड़े वैज्ञानिकों को पूरा विश्वास हो गया कि धरती से इस धूमकेतु के टकराने की संभावना अब वास्तविक खतरा बन चुकी थी।

पर उन्होंने इस खतरे को पूरी तरह गोपनीय बनाए रखा। यहाँ तक कि उनके करीबी सहकर्मियों को भी इस खतरे का कुछ भी पता नहीं था, जो इस कार्यक्रम में शामिल नहीं थे। हर कोई सोचता था कि धूमकेतु धरती के नजदीक से गुजर जाएगा। अवश्य ही आम आदमी इस दुर्लभ नजारे का लुत्फ उठा लेगा और विशेषज्ञों को अपने द्वारा भेजे गए खोजी उपकरणों से कुछ नई जानकारियाँ मिल जाएँगी।

आम जनता के बीच जोर मारते अंधविश्वासों को रोकने में इन सब बातों से कोई मदद नहीं मिली। सारी दुनिया में ज्योतिषियों और तथाकथित धर्मगुरुओं ने अंधविश्वासों एवं आशंकाओं को खूब हवा दी। यहाँ तक कि पश्चिम के विकसित देशों में भी अंधविश्वास में कोई कमी नहीं आई। जहाँ तक भारत का ताल्लुक है, वह कुछ फायदे में ही रहा। अनगिनत जोड़ों, जिनमें पढ़े-लिखे जोड़े भी शामिल थे, ने गर्भ-धारण करने का कार्यक्रम तब तक के लिए टाल दिया जब तक कि धूमकेतु नजर आ रहा था। इस तरह से जनसंख्या-वृद्धि पर अस्थायी रूप से रोक लग गई।

अक्तूबर के लगभग बीच में दत्ता को सर जॉन का एक पत्र मिला। पत्र में रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी की बैठक का, बेमौसमी गरमी का, फुटबॉल सीजन के शुरुआती मैचों का और हाल ही में संपन्न उपचुनाव का जिक्र था। उन्हीं के बीच दत्ता दा की बेचैन आँखों ने उस वाक्य को ढूँढ़ निकाला—'लाइट ब्रिगेड का आक्रमण शुरू हो चुका है। हमें विश्व कल्याण की उम्मीद करनी चाहिए।' तो अंतरिक्ष यान समय पर रवाना हो चुका था।

लेकिन क्या इसका धूमकेतु से मिलन हो पाएगा और वह भी सही समय एवं सही जगह पर? क्या रिमोट कंट्रोल से कराए गए धमाके काम कर सकेंगे? अगर एटमी हथियारों का जखीरा ठीक से काम न कर पाया तो...?

□

दत्ता दा अपने आस-पास किसी से भी अपनी बेचैनी नहीं बाँट सकते थे। दुर्गा-पूजा का त्योहार धूमधाम से आया और चला गया। इसी तरह दीवाली आई और चली गई। चारों ओर खूब आतिशबाजी हुई; लेकिन दत्ता दा के मन में कुछ और ही उथल-पुथल मची थी। दिन में उनका ज्यादातर वक्त अपने आठ साल के पोते खोका के साथ बीतता था और रात दिव्या के साथ तारों को निहारने में।

अवश्य ही वह भी धूमकेतु की प्रगति पर निरंतर नजर रख रहे थे, जो अब नंगी आँखों से भी साफ दिखता था। 18 नवंबर को ब्रिटिश काउंसिल से एक विशेष संदेशवाहक स्कूटर पर एक अत्यावश्यक टेलेक्स संदेश दत्ता दा के लिए लेकर आया। कोलकाता में टेलेक्स ऑपरेटर हैरान-परेशान था कि संदेश में क्या खासियत थी जो यह इतना जरूरी हो गया? लेकिन संदेश को पढ़ते ही दत्ता दा की सुस्ती तुरंत गायब हो गई और वे रसगुल्लों की अपनी मनपसंद दुकान पर पहुँचे। संदेश में लिखा था—'अब मुझे पूरा विश्वास है कि मैं 15 दिसंबर को अपने क्रिसमस उपहार खरीद सकूँगा—जॉन मैकफर्सन।'

15 दिसंबर को धूमकेतु दत्ता धरती के सबसे निकट आ गया—केवल 80,000 किलोमीटर की दूरी पर। लाखों लोगों ने उस अद्‍भुत नजारे को देखा, पर केवल मुट्‌ठी भर लोग ही जानते थे कि वे समूचे विनाश के कितने निकट थे।

जब धूमकेतु बहुत दूर चला गया और दिखना बंद हो गया, तब ही दत्ता दा अपनी पत्नी से सच्चाई बता पाने की हिम्मत जुटा पाए—''अब जब कि धूमकेतु आकर चला गया है तो क्या तुम संतुष्ट हो कि उसके कारण कोई बड़ी दुर्घटना या विनाशलीला नहीं हुई?''

''मैं मानती हूँ कि कोई बड़ी आफत नहीं आई; लेकिन कुछ-न-कुछ विनाशकारी तो हो सकता था! क्या तुम जानते हो कि अनिष्टकारी घटनाओं को कैसे टाला गया?'' पूरे आत्मविश्वास के साथ इंद्राणी देवी ने पूछा।

दत्ता दा ने हैरानी से अपनी पत्नी को देखा। तो क्या उसे मालूम था? वह कैसे जान सकती थी? उन्होंने तो कभी उसके सामने 'प्रोजेक्ट लाइट ब्रिगेड' का जिक्र नहीं किया। उन्होंने सावधानी से कुरेदना चाहा, ''मैं समझा नहीं, तुम्हारा मतलब क्या है?''

''मतलब बहुत आसान है। कुछ अनिष्ट नहीं हुआ, क्योंकि हमने घर में यज्ञ जो करा लिया था।''

''पर मैंने तो कभी यज्ञ किया नहीं। क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने यज्ञ में शरीक होने से इनकार कर दिया था?''

''हाँ-हाँ, याद है। पर हमने उसका भी तरीका निकाल लिया था। कम-से-कम गुरुजी ने तो उपाय खोज ही लिया था। उन्होंने कहा कि अगर तुम यज्ञ करना नहीं चाहते तो कोई बात नहीं। अगर तुम्हारा कोई बच्चा या नाती-पोता यज्ञ में बैठ जाए तो काम चल जाएगा। इसलिए हमने तुम्हारी जगह खोका को बैठा दिया। और देखो, कोई अनिष्ट नहीं हुआ। हैं न गुरुजी समझदार!'' इंद्राणी देवी ने विजयी भाव से कहा।

तुरंत ही दत्ता दा के मन में सारी तसवीरें सिनेमा की रील की तरह घूम गईं—यज्ञ में बैठा खोका, मंत्र बुदबुदाता खोका, जिनके अर्थ वह स्वयं भी नहीं समझता। थोड़ी-थोड़ी देर बाद आग में घी छोड़ता खोका, देवताओं को फूल चढ़ाता खोका...और तभी तसवीर बदल जाती है। बड़े से हॉल में दुनिया भर के वैज्ञानिक जमा हैं। वे समस्या का विश्लेषण कर रहे हैं, समाधान खोजने में जुटे वैज्ञानिक और फिर समाधान पर तर्कसंगत रूप से और कुशलतापूर्वक अमल करते वैज्ञानिक।

यह यकीन कर पाना मुश्किल था कि ये दोनों तसवीरें हमारे आधुनिक समाज के दो अलग-अलग पहलू पेश

करती थीं। दत्ता को यह तो पता था कि अमीर और गरीब के बीच, पढ़े-लिखों व अनपढ़ों के बीच, खुशकिस्मत व बदकिस्मत लोगों के बीच गहरी खाई है। लेकिन तर्कसंगत और अंधविश्वासी वर्गों के बीच जो खाई थी वह उन्हें कहीं अधिक चौड़ी और अमंगलकारी लग रही थी। क्या मानव समाज कभी इस खाई को पाट पाएगा?

इस प्रश्न का उत्तर दत्ता दा के पास नहीं था।

❑

7

गणेशजी की दुर्लभ प्रतिमा

ओवल के बाहर जैसे ही मैं बस से उतरा, मुझे पूर्वाभास हुआ कि मैं कुछ अनोखा देखने जा रहा हूँ। बीती घटनाओं के मद्देनजर आज मुझे ऐसे पूर्वाभास का कोई कारण नजर नहीं आता। लेकिन फिर परिभाषा के आधार पर क्या पूर्वाभास बिना किसी कारण के नहीं होते हैं? अभी तक मुझे जो अनोखी चीज दिखाई दे रही है वह यह है कि मुझे स्टेडियम में जाकर टेस्ट मैच देखने की फुरसत मिल गई और इसका कारण बताया जा सकता था। गेट पर कंप्लीमेंटरी पास दिखाते वक्त अनायास ही मेरी उँगलियाँ उसके साथ लगी चिट से खेलने लगीं—

14 अगस्त, 2005

प्रिय जॉन,
मेरी तुमसे हाथ जोड़कर विनती है कि इस टेस्ट में मेरा खेल देखने के लिए जरूर पधारो, जो कि मेरा अंतिम मैच होने जा रहा है। आशा है, तुम जरूर आओगे!
अभिवादन,

तुम्हारा विश्वासपात्र
प्रमोद रंगनेकर

प्रमोद और मैं कैंब्रिज की क्रिकेट टीम की जान हुआ करते थे, जिसने सन् 1989 में विश्वविद्यालय मैच जीता था। बाद में प्रमोद पेशेवर क्रिकेट खिलाड़ी बन गया और वेस्टइंडीज, ऑस्ट्रेलिया एवं एम.सी.सी. के खिलाफ उसने अपने बेहतरीन खेल के झंडे गाड़ दिए। वहीं मैं एक इंडोलॉजिस्ट (भारतविद्) बन गया। मेरा कार्य कुछ ऐसा था कि क्रिकेट से मेरा नाता ही टूट गया।

और अब संग्रहालय के क्यूरेटर के रूप में तो मुझे दम भरने की फुरसत भी नहीं मिलती। सचमुच 15 साल के लंबे अंतराल के बाद क्रिकेट मैदान पर जाना मेरे लिए किसी सदमे से कम नहीं था।

आज खेल का दूसरा दिन था और मैंने यही दिन चुना था, क्योंकि आज भारत को फील्डिंग करनी थी और मैं प्रमोद को खेलते देख सकूँगा। कल, पहले दिन के खेल में चमकदार धूप में खेलते वक्त भारत से विशाल स्कोर की उम्मीद थी। लेकिन भारतीय बल्लेबाज उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे और कुल 308 रन बनाकर सारी टीम आउट हो गई, जो इंग्लैंड जैसी मजबूत टीम के लिए मामूली चुनौती थी।

दूसरे दिन का खेल बड़ी शांति से शुरू हुआ। कोई संकेत नहीं थे कि क्या होगा। पहले एक घंटे में इंग्लैंड के ओपनर बल्लेबाजों विलिस और जॉन्स ने बिना आउट हुए 40 रन बना लिये। ड्रिंक्स के बाद भारतीय कप्तान भंडारी ने रंगनेकर को गेंद फेंकने के लिए बुलाया और तभी से अनोखी घटनाओं का सिलसिला चालू हो गया।

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रमोद का स्वागत किया गया; पर उस गड़गड़ाहट में भी सहानुभूति के भाव छुपे थे। उसके तमाम प्रशंसक जानते थे कि वह अपना आखिरी टेस्ट मैच खेल रहा था। सचमुच इस पूरी श्रृंखला के दौरान उसके खेल में वह बात नहीं रह गई थी। उसकी गेंदबाजी की धार और जादू गायब हो चुके थे, जिसका अंग्रेज बल्लेबाजों को भी अहसास था। जनता में और मीडिया में माँग उठ रही थी कि प्रमोद को टीम से बाहर कर दिया जाए। लेकिन फिर भी चयनकर्ताओं ने अनुभव के तौर पर उसे एक आखिरी मौका और दिया। अब सवाल था कि क्या प्रमोद उनकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा?

अनोखी चीज का पहला संकेत मिला, जब प्रमोद गेंद फेंकने की तैयारी कर रहा था।

''राइट आर्म, ओवर द विकेट?'' अंपायर कोट्स ने पूछा, जो प्रमोद की गेंदबाजी करने के ढंग से परिचित था।

''नहीं।'' प्रमोद के जवाब ने अंपायर को हैरानी में डाल दिया।
''लेफ्ट आर्म ओवर द विकेट।''

प्रमोद ने कभी भी बाएँ हाथ से गेंदबाजी नहीं की थी। कप्तान भंडारी भी हैरान था और प्रमोद को समझाने की कोशिश करता रहा, लेकिन प्रमोद अपनी जिद पर अड़ा रहा।

''ठीक है, मैं इस बुढ़ऊ को केवल एक ओवर तक यह बेवकूफी करने दूँगा।'' भंडारी बड़बड़ाया।

अब तक रेडियो और टी.वी. पर कमेंटेटर भी प्रमोद का इरादा जान चुके थे और उस पर टीका-टिप्पणी करने लगे थे। एक दाएँ हाथ का गेंदबाज अचानक ही बाएँ हाथ से गेंदबाजी कैसे कर सकता है और वह भी ऐसे टेस्ट मैच में, जिसमें उसकी टीम को एक विकेट की सख्त जरूरत है? यह तो एकदम बेमिसाल है।

मगर उसके बाद जो कुछ हुआ, वह भी एकदम बेमिसाल था।

अपनी पहली ही सटीक गेंद पर प्रमोद ने ओपनर विलिस की लैग स्टंप उड़ा दी। विलिस की समझ में कुछ नहीं आया। पैवेलियन वापस जाते हुए उसने नए बल्लेबाज को चेताया, ''सावधान रहो, इस जोकर ने मुझे मजाक-मजाक में उड़ा दिया।''

लेकिन इस चेतावनी का कुछ फायदा नहीं हुआ। बाएँ हाथ से प्रमोद की गेंदबाजी कहर बरपा रही थी। तीन नंबर का बल्लेबाज और उसके बाद आनेवाले तमाम बल्लेबाज प्रमोद की गेंदबाजी के आगे टिक नहीं सके। जहाँ 40 रन पर एक विकेट भी नहीं गिरा था वहीं केवल 78 रन पर इंग्लैंड की पूरी टीम का बोरिया-बिस्तर बँध गया।

भोजन अवकाश में सैंडविच चबाते हुए मैं इस असाधारण बदलाव के बारे में सोच रहा था, जो खेल में इतने थोड़े से समय में ही आ गया। यह ऐसा बदलाव है जो क्रिकेट को अन्य खेलों से अलग करता है। 203 रन से पिछड़ने के बाद इंग्लैंड को फॉलोऑन खेलना पड़ा। क्या इंग्लैंड अपनी दूसरी इनिंग में इस झटके से उबर पाएगा? मेरी बगल में बैठे बुजुर्ग सज्जन भी कयास लगा रहे थे कि क्या रंगनेकर जिमलेकर केएक ही टेस्ट मैच में 19 विकेट के रिकॉर्ड को तोड़ सकेगा? उसके बाद उन्होंने उस मैच की एक-एक घटना विस्तार से बताई, जिसे उन्होंने पचास साल पहले अपनी जवानी के दिनों में देखा था।

और सचमुच अगली इनिंग में ऐसा ही हुआ। इंग्लैंड की पूरी टीम केवल 45 रनों पर ढह गई।

भारत के खिलाफ यह उनका सबसे कम स्कोर था और प्रमोद के खाते में पूरे 20 विकेट आ गए।

इस अनोखे मैच के खत्म होने के बाद एक और अनोखी घटना हुई। जैसे ही आखिरी विकेट गिरी, प्रमोद पैवेलियन की ओर भागा। इससे पहले कि उत्साहित भारतीय दर्शक, उत्तेजित खबरनवीस और टी.वी. कैमरामैन उसके निकट भी पहुँच पाते, वह बाहर खड़ी कार में बैठा और वहाँ से खिसक लिया।

प्रमोद कहाँ चला गया, किसी को नहीं पता। भारतीय टीम का मैनेजर, पुलिस और अखबारवाले पागलों की तरह उसकी तलाश करने लगे; पर उसका कुछ पता नहीं चल सका। अगले दिन किसी अज्ञात आदमी ने 'फ्लीट स्ट्रीट' अखबार के दफ्तर में फोन किया और भारतीय लहजे में गुमशुदा खिलाड़ी के बारे में सूचना दी—''मैं सुरक्षित हूँ, मेरी चिंता मत करो। मैं 24 घंटे के भीतर लौट आऊँगा।''

क्या यह संदेश असली था या कोई मजाक कर रहा था? पहचान के तौर पर फोन करनेवाले ने पुलिस को क्रॉयडॉन में एक जगह का पता बताया, जहाँ रंगनेकर की शर्ट पाई जाने वाली थी। पुलिस ने वह जगह ढूँढ़कर शर्ट बरामद भी कर ली। वह सचमुच रंगनेकर की ही शर्ट थी।

इसी बीच अखबारों में प्रमोद रंगनेकर की लाजवाब गेंदबाजी के कसीदे पढ़े जा रहे थे—'भारतीय काला जादू?' 'बेहतरीन गेंदबाजी या पूरब का सम्मोहन?' और 'रंगनेकर आउट लेकर्स जिमलेकर'—जैसी सुर्खियाँ अखबारों में

छाई हुई थीं। यहाँ तक कि 'टाइम्स' ने भी रंगनेकर के जादुई करिश्मे पर अपने संपादकीय में प्रशंसा के पुल बाँध दिए। साथ ही अखबार ने यह भी माना कि खेल के दौरान और खेल के बाद की घटनाओं से वह हैरान-परेशान है।

विज्डन ने तुरंत ही अपने क्रिकेट इतिहास में एक और कीर्तिमान जोड़ दिया।

अगले दिन प्रमोद बो स्ट्रीट पुलिस थाने में मिल गया, लेकिन गहमागहमी का जो ज्वार आया था वह अब पूरी तरह उतर चुका था। उसे टेस्ट मैच में घटी एक भी घटना याद नहीं थी या उसके बाद जो कुछ हुआ वह भी उसे याद नहीं था। जबकि उसका दिमाग पूरी तरह ठीक था। लेकिन फिर भी वह इस बात को मजाक मान रहा था कि उसने टेस्ट मैच में इतनी जोरदार भूमिका निभाई थी।

''मैं अगर बाएँ हाथ से गेंदबाजी करूँ तो एक बच्चे को भी आउट नहीं कर सकता।'' उसने शांत भाव से कहा। उसकी बातों में सच्चाई झलक रही थी।

□

13 दिसंबर, 2005 की तारीख मैं कभी भी नहीं भूलूँगा। अपना नाश्ता-पानी खत्म कर मैं जरूरी काम से बाहर निकलने ही वाला था कि फोन की घंटी घनघना उठी।

''जॉन, ये तुम्हारे लिए है। फोन करनेवाला अपनी पहचान नहीं बता रहा, पर कहता है कि बहुत अहम बात है।'' ऐन ने कहा। मैंने मन-ही-मन गाली दी—अब मैं अपने काम पर निश्चित ही देर से पहुँचूँगा।

''हाँ, जॉन आर्मस्ट्रांग बोल रहा हूँ।'' यथासंभव विनम्र होते हुए मैंने कहा।

''सुप्रभात जॉन! तुम्हें मेरी आवाज सुनकर हैरानी होगी। मैं अजीत सिंह बोल रहा हूँ, अजीत सिंह!''

अजीत सिंह! इतने साल बाद! अब चिढ़ने की बजाय मुझे आश्चर्य हो रहा था और मैं सुनता गया—''क्या मैं आज रात तुमसे मिल सकता हूँ? बहुत जरूरी काम है, करीब साढ़े आठ बजे?'' लगता था कि वह अपना कार्यक्रम मुझ पर थोप रहा था।

मैंने सख्त लहजे में कहा, ''रात के खाने पर आओ। ऐन अपनी पकाई करी से मुझे मार डालना चाहती है। आओ, दोनों मिलकर शिकार बनें।''

''पक्का, धन्यवाद!'' अजीत ने कहा। वह फोन रखने ही वाला था कि अचानक उसे कुछ याद आया। उसने कहा, ''और जॉन, मुझे उम्मीद है कि अगर मैं छुरी और काँटे के बजाय अपने हाथों से खाऊँ तो ऐन और तुम बुरा नहीं मानोगे।''

छुरी और काँटे का जिक्र क्यों? इससे पहले कि मैं पूछ पाता कि क्या वह वास्तव में गंभीर है, अजीत ने फोन रख दिया।

करी बनाकर ऐन बहुत खुश थी। उसने कुछ भारतीय मिठाइयों का भी स्वाद लेना चाहा। उसे अपनी पाकशाला में छोड़कर मैं जल्दी से ट्रेन पकड़ने दौड़ा। दिन भर मेरा ध्यान अजीत पर ही लगा रहा और उससे होनेवाली मुलाकात के बारे सोचता रहा। वह मुझे क्या बताना चाह रहा था?

कैंब्रिज में स्नातक स्तर पर प्रमोद और अजीत मेरे साथ थे। कॉलेज की एक सीढ़ी के आस-पास हमारे कमरे थे। मुझे और प्रमोद को क्रिकेट में अच्छी-खासी दिलचस्पी थी और अपनी पहली गरमी के बीतते-बीतते हम दोनों को विश्वविद्यालय टीम में चुन लिया गया। अजीत के साथ मेरे संबंध कुछ अलग ही किस्म के थे। हम दोनों भारतीय दर्शन पर अकसर लंबी-लंबी चर्चाएँ करते थे। सुबह के समय तो अकसर हम दोनों की बातचीत घंटों तक चला करती थी। इन चर्चाओं की बदौलत ही मैं भारतविद् के रूप में अपनी आजीविका बना सका। लेकिन अजीत भौतिकीविद् था। गणित में तीसरे साल की परीक्षा में 'मैथ्यू पुरस्कार' जीतने के बाद उसने भौतिकी विषय चुना। यहाँ पर भी उसने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। तीन साल बाद मैंने कैंब्रिज छोड़ दिया था, लेकिन वह कैवेंडिश

में अनुसंधान कार्य करने लगा। कभी-कभार हम मिलते थे और हमारे बीच पत्र-व्यवहार भी होता था। मुझे याद है कि उसे 'स्मिथ पुरस्कार' मिलने पर मैंने उसको पत्र लिखा था। पर बाद में हमारा संपर्क धीरे-धीरे कम होने लगा। मुझे पुरातत्त्व अन्वेषणों के लिए भारतीय उपमहाद्वीप की कई बार यात्रा करनी पड़ी और आखिरकार, लंदन में संग्रहालय क्यूरेटर की नौकरी मिल गई, जहाँ मैं आज भी हूँ।

अजीत हमेशा से ही एकांतप्रिय व्यक्ति था। मुझे शक होता है कि मेरे अलावा उसका कोई और मित्र भी था। पाँच साल पहले जब हम आखिरी बार मिले थे, तब अजीत कॉलेज फैलोशिप छोड़कर इंग्लैंड में ही एक अनुसंधान संस्थान में काम करने लगा था। हालाँकि उसने कभी बताया नहीं, लेकिन मुझे यकीन है कि उसका काम कुछ अलग ही किस्म का था।

तो क्या आज रात वह मुझे अपने काम के बारे में बताने जा रहा था?

ठीक साढ़े आठ बजे दरवाजे की घंटी बज उठी। अजीत को पहचानने में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। वह पहले से कहीं अधिक दुबला-पतला हो गया था और बाल भी कुछ सफेद होने लगे थे। इन सबके अलावा उसमें एक और मामूली सा परिवर्तन आया था, जिसे मैं भाँप सकता था—आज की तमाम घटनाओं के बाद मैं इसका सबूत भी दे सकता था। लेकिन ईमानदारी की बात यह है कि हमारी मुलाकात के वक्त मैं सही-सही नहीं बता सकता था कि उसमें क्या परिवर्तन आया था।

उसके बातचीत करने के अंदाज से मुझे सुकून मिला। जहाँ तक मेरे प्रति उसके नजरिए का संबंध था, वह जरा भी नहीं बदला था।

भारतीय परंपरा के अनुसार थालियों में भोजन परोसा गया। यह भी ऐन की कलात्मक मेहमाननवाजी का एक प्रयास था। भोजन के दौरान अजीत थोड़ी-बहुत बातचीत को छोड़कर पूरे समय खामोश रहा। लेकिन इससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि खाने की टेबल पर बैठकर अजीत बातों पर कम, खाने पर ज्यादा ध्यान देनेवाला व्यक्ति था। लेकिन उसका खाने का तरीका देखकर मुझे कुछ आश्चर्य जरूर हुआ।

उसके सनकपूर्ण सुझावों पर हम सभी ने छुरी और काँटे छोड़कर हाथ से खाना शुरू किया; लेकिन हाथों से खाते हुए अजीत को देखकर उतना ही अजीब लग रहा था जितना किसी पश्चिमी व्यक्ति को हाथों से भारतीय खाना खाते देखकर लगता है। मैंने और ऐन ने इस पर उसे टोका। लेकिन अजीत के पास उसका भी जवाब था—''पतनोन्मुख पश्चिम में इतने साल रहने के बाद हाथ से खाने की मेरी आदत छूट गई है।'' उसकी इस सफाई से ऐन तो संतुष्ट लग रही थी, पर मेरे मन में अब भी शक था।

अजीत के अजीबोगरीब व्यवहार के बारे में मेरा शक भोजन के उपरांत तब और पक्का हो गया जब मेरा सात वर्षीय बेटा केन एक पुस्तक ले आया।

''अंकल, आपने मेरे पिछले जन्मदिन पर यह पुस्तक भेजी थी, परंतु आप इस पर दस्तखत करना भूल गए थे। क्या आप अब इस पर दस्तखत कर देंगे?''

हकीकत भी यही थी। पहले साल अजीत की प्रयोगशाला से केन के लिए एक पुस्तक आई थी। उस पर लिखा था—'केन को उसके सातवें जन्मदिन पर'। मैं जानता हूँ कि यह अजीत की ही लिखावट थी। अपने खास अंदाज में अजीत ने केन का जन्मदिन याद रखा, लेकिन अपना नाम लिखना भूल गया।

अजीत ने पुस्तक अपने हाथों में ली और सरसरी तौर पर उसे देखा। फिर सिर हिलाते हुए पुस्तक केन को लौटा दी।

''मुझे दु:ख है, केन! आज मेरी आँखें मुझे परेशान कर रही हैं, इसलिए मैं अभी दस्तखत नहीं कर सकता।''

''छोड़ो भी! अपना नाम लिखने के लिए तुम्हें अपनी आँखों पर जोर डालने की जरूरत है!'' केन की तरफ से मैंने विरोध जताया।

''लेकिन मेरे डॉक्टर ने मुझे इस दशा में कुछ भी पढ़ने या लिखने के लिए साफ तौर पर मना किया है। समझौते के तौर पर केन, जब मैं अच्छा हो जाऊँगा तो दोनों पुस्तकों पर दस्तखत कर दूँगा।''

अजीत की आवाज में दृढ़ता थी, इसलिए मैंने और केन ने ज्यादा दबाव नहीं डाला। एक और उपहार की पेशकश से केन संतुष्ट था। पुस्तकों में उसकी अच्छी-खासी दिलचस्पी थी। लेकिन मुझे अजीत की प्रतिक्रिया उसके स्वभाव के विपरीत लगी।

''अजीत, अब शायद तुम मुझे बता सकते हो कि तुम आज रात यहाँ क्यों आए?'' अपने अध्ययन-कक्ष में उसे आरामकुरसी पर बैठने का इशारा करते हुए मैंने पूछा। मैं अपने भीतर उमड़ रही जिज्ञासा को दबाने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे एक गिलास पोर्ट वाइन पीने को दी। अब हम बिलकुल अकेले थे और मुझे उससे कुछ महत्त्वपूर्ण बात सुनने की उम्मीद थी।

''जरा सब्र करो!'' अजीत के चेहरे पर आराम भरी मुसकराहट थी। उसने अपने ब्रीफकेस में से धीरे से एक पैकेट निकाला और उसे सावधानीपूर्वक खोला।

पैकेट में से नृत्य मुद्रा में गणेशजी की एक सुंदर प्रतिमा निकली। हिंदुओं के देवता गणेशजी का सिर हाथी का और शेष शरीर मनुष्य का है। बुद्ध की मूर्तियों की तरह गणेशजी की ज्यादातर मूर्तियाँ भी पालथी मारकर बैठी मुद्रा में मिलती हैं; लेकिन यह मूर्ति नृत्य मुद्रा में थी, जो सामान्य रूप से नहीं मिलती है। मैं तुरंत ही पहचान गया, क्योंकि एक ऐसी ही मूर्ति संग्रहालय के ब्रिटिशकालीन भारत वर्ग में मौजूद थी। यह मूर्ति मराठा शासकों की थी, जिनका ब्रिटिश शासन स्थापित होने से पूर्व भारत के अधिकांश भागों पर नियंत्रण था। गणेशजी पेशवा शासकों के महत्त्वपूर्ण देवता थे और मेरे संग्रहालय में रखी उनकी मूर्ति मराठों के किले शनिवारवाड़ा से लाई गई थी, जिस पर सन् 1818 में पुणे में एल्फिंस्टन की सेना ने कब्जा कर लिया था। मूर्ति के संग्रहालय तक पहुँचने की लंबी कहानी है। मूर्ति देखकर मेरी पहली प्रतिक्रिया यह थी—मैंने अजीत से पूछा कि उसे मूर्ति की प्रतिकृति कहाँ से मिली?

''ध्यान से देखो! क्या यह सचमुच में एक प्रतिकृति है?'' अजीत के चेहरे पर भड़कानेवाली मुसकान तैर रही थी। मैंने मूर्ति को अपने हाथों में लेकर अच्छी तरह उलट-पलटकर देखा। सचमुच यह मूर्ति उसी कारीगर द्वारा बनाई गई थी जिसने मेरे संग्रहालय में रखी मूर्ति बनाई थी। तभी अचानक मुझे एक बड़ा फर्क नजर आया। पहली नजर में मैं इस अंतर को क्यों नहीं देख पाया?'' गणेशजी के हस्तीमुख में सूँड़ दाईं ओर मुड़ी हुई थी, जबकि ज्यादातर मूर्तियों में सूँड़ बाईं ओर मुड़ी होती है।

इस खास पहलू से मेरे हाथ में रखी मूर्ति न केवल संग्रहालय में रखी मूर्ति से भिन्न हो गई थी बल्कि अपनी दुर्लभता के कारण कहीं अधिक मूल्यवान् भी हो गई थी। मैंने यह बात अजीत को बताई।

''सचमुच, मैं दोनों मूर्तियों को तुलना के लिए अगल-बगल रखकर देखना चाहता हूँ।'' अजीत की आवाज में आश्चर्य से ज्यादा आनंद का पुट था। ''क्योंकि तुम्हें यह मूर्ति इतनी बेशकीमती लगी, तो क्या मैं इसे तुम्हारे संग्रहालय को भेंट कर सकता हूँ?''

इस उदार मन से दिए गए तोहफे के लिए मैंने उसका धन्यवाद किया और वादा किया कि उसे संग्रहालय के ट्रस्टियों की ओर से एक औपचारिक प्रशस्ति-पत्र भी दिलवाऊँगा; लेकिन मैं अपनी जिज्ञासा दबा नहीं सका और पूछ बैठा, ''इस मूर्ति की क्या कहानी है? तुम्हें यह कहाँ से मिली?''

''यह सब कभी फुरसत में बताऊँगा। फिलहाल तो तुम्हें हैरान होते देखकर मैं खुश हूँ। जॉन, क्या मैं तुमसे एक

सवाल पूछ सकता हूँ? तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो। तुम्हारे विचार से मेरे शरीर पर पहचान चिह्न क्या है?'' मैं इस तरह अचानक विषय-परिवर्तन होने से अचकचा गया। अलबत्ता जवाब मुझे मालूम था।

''तुम्हारे बाएँ हाथ का अँगूठा दाएँ हाथ के अँगूठे से करीब आधा इंच छोटा है।''

''क्या तुम इसकी कसम खा सकते हो?''

''सचमुच!''

अजीत ने अपने दोनों हाथ मेरे सामने फैला दिए। सचमुच उसका एक अँगूठा दूसरे से छोटा था। पर बाएँ नहीं बल्कि दाएँ हाथ का अँगूठा छोटा था।

मैं कितनी देर असमंजस की स्थिति में रहा, पता नहीं; क्योंकि जब मुझे होश आया तो मैंने पाया कि हाथ में ब्रांडी का गिलास लिये अजीत बेचैनी से मुझे घूरे जा रहा था।

''तुम ठीक तो हो?'' उसने पूछा।

''तुम कौन शैतान हो?'' मैंने आपे से बाहर होते हुए पूछा। पहले अपनी कमजोरी प्रकट करने की चिढ़ मेरे मन में थी और मैं उससे उबरना चाहता था।

''मैं अजीत ही हूँ और कोई नहीं। सिर्फ मैं थोड़ा सा बदल गया हूँ।'' फिर अजीत ने मेरा दायाँ हाथ उठाया और अपनी छाती पर रख दिया। उसका दिल भी दाईं ओर धड़क रहा था।

एक अजीबो-गरीब, पर आपस में जुड़ी हुई तसवीर मेरे मन में बनने लगी। मैंने अजीत को आईने के सामने खड़ा कर दिया और फिर मुझे उस सवाल का जवाब मिल गया, जिसने मुझे अजीत के आने के बाद शाम से ही परेशान कर रखा था। बहुत मामूली रूप से ही सही, पर वह कुछ अलग लग रहा था। अब आईने के भीतर से झाँकती उसकी छाया मुझे उस जीते-जागते शक से कहीं ज्यादा जानी-पहचानी लग रही थी, जिसे मैंने कंधे से पकड़ रखा था। तो क्या अजीत ने किसी तरह अपने आपको शीशे में दिखनेवाली छाया में बदल डाला था?

ठीक उसी वक्त मुझे खब्बू प्रमोद की कहर बरपानेवाली गेंदबाजी याद आ गई। क्या वह असली प्रमोद था या उसकी छाया थी? शर्तिया वह कोई भ्रम या छलावा नहीं था, क्योंकि उसके खेल को केवल मैंने ही अकेले नहीं देखा था बल्कि हजारों लोगों के साथ-साथ टी.वी. कैमरों ने भी उसके खेल को कैद किया था। तो क्या गणेशजी की मूर्ति भी असली मूर्ति की छाया थी? मैंने मेज पर रखी मूर्ति को दोबारा और अच्छी तरह से देखा। यह भी उतनी ही ठोस और असली थी जितना कि मेरे सामने खड़ा दाँत निकालकर हँसता हुआ अजीत।

''तुम्हें इस तरह परेशान करने पर मुझे अफसोस है। लेकिन मैंने जो शानदार खोज की है, उसका यकीन दिलाने का कोई और तरीका नहीं था। किताबों में दिए गए सिद्धांतों के साथ ही मैं अपनी कथा शुरू करूँ गा। शुरू-शुरू में...''

''अपनी कथा चलाने से पहले भगवान् के लिए मुझे एक बात बताओ। क्या मेरा यह खयाल ठीक है कि प्रमोद की रहस्यमय गेंदबाजी के पीछे तुम्हारा ही हाथ था?''

''सचमुच!'' अजीत ने कहा।

उसके बाद उसने मुझे जो कहानी सुनाई, वह मैं यथासंभव उसी के शब्दों में बयान करता हूँ—

''तुम्हें याद होगा कि करीब पाँच साल पहले कैंब्रिज में पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं एक सरकारी प्रयोगशाला में आधिकारिक रूप से अनुसंधान कार्य करने लगा था। मुझे मौलिक भौतिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स में महारत हासिल होने के साथ-साथ काम करने का ताजा जोश भी था। पर जल्द ही मेरा जोश ठंडा पड़ने लगा, क्योंकि मुझे पता लगा कि प्रयोगशाला में अनुसंधान कार्य न होकर कागजी काम, चापलूसी और तिकड़मबाजी पर ज्यादा जोर रहता था।

''मोहभंग होने के साथ-साथ मैं अपने सहकर्मियों से कटने लगा था, जो कि केवल गप्पबाजी में ज्यादा दिलचस्पी लेते थे। मुझे जो काम दिया जाता, मैं उसे तुरंत ही निपटा दिया करता, क्योंकि इस तरह का काम काफी कम होता था, इसलिए मुझे अपनी सोच और अपने अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए ढेर सारा अतिरिक्त समय मिलने लगा था। मेरे अंतर्मुखी स्वभाव को जानकर सहकर्मियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने भी मुझे अकेला छोड़ दिया।

''लंबे समय से एक अजीबो-गरीब विचार ने मेरे मन में उथल-पुथल मचा रखी थी। कैंब्रिज में आइंस्टीन के सापेक्षतावाद के सिद्धांत का अध्ययन करने के पश्चात् यह विचार मेरे मन में बैठ गया था।

''चूँकि तुम इस सिद्धांत से अपरिचित हो, इसलिए तुम्हें पहले इसके कुछ खास पहलुओं के बारे में बता दूँ, जो मेरे काम के थे।

''आइंस्टीन ने इस विचार का प्रतिपादन किया था कि गुरुत्वाकर्षण के कारण अंतरिक्ष और समय की ज्यामिति या आयामों में परिवर्तन आ जाता है। हम सभी यूक्लिड की ज्यामिति से परिचित हैं, जो हमारे दैनिक जीवन की जरूरतों को बखूबी पूरा करती है। लेकिन करीब डेढ़ सदी पहले गणितज्ञों ने सोचना शुरू कर दिया था कि तार्किक तौर पर केवल यूक्लिड की ज्यामिति ही स्थिर नहीं है। यूक्लिड के सिद्धांतों से अलग नियमों पर आधारित गैर-यूक्लिड ज्यामितियों की कल्पना भी की जा सकती थी। लेकिन आइंस्टीन ही वह पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने सन् 1915 में उन अमूर्त, निराकार विचारों को भौतिक सिद्धांत में ढाला। उनका तर्क था कि भारी गुरुत्वाकर्षणवाले पिंडों के इर्द-गिर्द गैर-यूक्लिड ज्यामितियाँ होती हैं और उन्होंने इनका वर्णन करने के लिए समीकरण भी दिए। उनके द्वारा की गई कुछ भविष्यवाणियों को पिछली सदी के उत्तरार्द्ध में जाँचा-परखा भी गया था, जिसमें वे सही साबित हुई थीं।

उदाहरण के लिए, प्रकाश की किरणों को ही लें, जिनके बारे में माना जाता है कि ये सीधी रेखा में ही चलेंगी। अब अलग-अलग ज्यामितियों में सीधी रेखा की परिभाषा और कसौटी अलग होगी। सूर्य के निकट इसके शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण के कारण ज्यामिति इस हद तक परिवर्तित हो जाएगी कि सौर-भुजा के पास से गुजरनेवाली प्रकाश-किरण का पथ उस स्थिति से भिन्न होगा जब वह सूर्य की अनुपस्थिति में गुजरती है। ये परिवर्तन हालाँकि बहुत सूक्ष्म थे, लेकिन उनका मापन किया गया और इस तरह सापेक्षतावाद के समान सिद्धांत की भविष्यवाणियों की पुष्टि हुई।

''सापेक्षतावाद के शब्दों में हम कहते हैं कि अंतरिक्ष काल की ज्यामिति वक्रीय होती है, जबकि गुरुत्व बल की उपस्थिति में यह सरल होती है। किसी गोले की सतह पर चलनेवाला द्विआयामी जीव सतह की वक्रता के प्रति सचेत होता है। ऐसी ही किसी वक्रता की बेहद ऊँचे आयामों में कल्पना करें—ऐसी कल्पना मानसिक स्तर पर कठिन है, लेकिन गणित के लिए आसान है।

''अब मैं तसवीर में एक और धारणा को ले आऊँगा। यह है मोड़ या ट्विस्ट की अवधारणा। क्या आपने मॉनियस स्ट्रिप के बारे में सुना है? अगर आप कमर में पेटी बाँधते हैं तो इसे एक मोड़ देकर आप मॉनियस स्ट्रिप बना सकते हैं। इसकी कई खूबियाँ होती हैं, जैसे—मूल पेटी, जिसकी दो सतहें थीं, के विपरीत इसकी केवल एक सतह ही होती है। अगर आप किसी साधारण पेटी या पट्टी को लंबाई के साथ-साथ बीच से काटें तो दो अलग-अलग पट्टियाँ मिलेंगी। अब मॉनियस पट्टी को इसी तरह काटने की कोशिश करें। आपको केवल आश्चर्य ही मिलेगा।

''अब कल्पना करें कि हमारा चपटा जीव इस मॉनियस स्ट्रिप की एक ही सतह पर रेंग रहा है। कल्पना करें कि

उसका केवल एक ही हाथ—बायाँ हाथ है। लेकिन अगर वह पट्टी का पूरा चक्कर लगा ले तो वह पाएगा कि उसका एक हाथ, जो बायाँ है वह अब दायाँ हाथ हो गया है! अगर आपको यकीन न हो तो इसे कागज की पट्टी पर आजमाकर देखें, हमारे जैसे त्रिआयामी अंतरिक्ष की लाभकारी स्थिति से देख रहे प्रेक्षक के लिए जीव एक अक्ष के चारों ओर आधे घूर्णन से गुजर चुका होता, जो उसके शरीर में सिर से पैर तक होता। हालाँकि जीव को इसका पता नहीं चलता। उसके लिए तो उसके सीमित द्विआयामी परिप्रेक्ष्य में यह घटना परावर्तन की तरह ही लगेगी।

''अब इसी घुमाव की चार आयामी अंतरिक्ष काल में कल्पना करें। जीव की भाँति हमें भी इस परिवर्तन का पता नहीं चलेगा, हालाँकि इसके प्रभाव समान ही होंगे। इस परिवर्तन से गुजरकर हम आईने में दिखनेवाली अपनी छाया की तरह लगते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि हम ऊँचे आयामों में घूम रहे होते हैं और अपने 'दूसरे पक्ष' को दिखा रहे होते हैं।

''क्या हम ऐसे घुमाव अंतरिक्ष काल में पैदा कर सकते हैं? इस बिंदु पर मैंने आइंस्टीन के सिद्धांत से अलग हटकर अपनी खुद की सोच विकसित की। मुझे आशा थी कि परमाणु के भीतर मौजूद मौलिक कणों में पाया जानेवाला घूर्णन का गुण अंतरिक्ष में घुमाव पैदा कर सकता है। इसका गणितीय सूत्र तो मैंने कैंब्रिज में ही पूरी तरह विकसित कर लिया था, लेकिन इस पर परीक्षण करना मेरी वर्तमान प्रयोगशाला में ही संभव हो पाया।

''पर्याप्त मात्रा में घुमाव उत्पन्न करने के लिए मुझे मौलिक कणों का एक पुंज बनाना था, जो बेतरतीब ढंग से नहीं बल्कि सुनियोजित, समन्वित तरीके से चक्कर काट रहे हैं। यह कहना तो आसान लगता है, पर करना उतना ही कठिन है। अब मैं तुम्हें वैज्ञानिक शब्दावली से और अधिक दूर नहीं ले जाऊँगा। केवल इतना ही कहना काफी है कि अपने अनुभव में मुझे पहली बार करीब छह महीने पहले सफलता मिली।

''मेरी प्रयोगशाला में जो माहौल है, उसके कारण ही मैं अपना उपकरण बिना किसी टोका-टाकी के बना सका। पहले मैंने एक छोटा सा केबिन बनाया और उस पर 'सबसे गोपनीय', 'खतरनाक' और 'प्रवेश निषेध' जैसे संकेत लगा दिए। और जब तक मैं अपनी आर्थिक सीमाओं के भीतर कार्य कर रहा था तब तक किसी ने मुझसे पूछने की जरूरत नहीं समझी कि मैं क्या कर रहा था। इस तरह की नौकरशाहीवाली प्रणाली में अगर आप चालाक हैं तो कोई भी तिकड़म लगाना संभव है, अन्यथा कोई भी रचनात्मक कार्य करने के लिए पहले आपको एक प्रस्ताव जमा कराना पड़ेगा। एक समिति आपके प्रस्ताव का मूल्यांकन करेगी और सबसे ज्यादा संभावना यह होती है कि आपके प्रस्ताव को रद्द कर देगी; क्योंकि इस समिति में अधिकतर विशेषज्ञ सठिया चुके होते हैं और उनका सक्रिय अनुसंधान से कुछ लेना-देना नहीं होता है।

''मेरा पहला अनुभव मेरी कलाई घड़ी के साथ था। मैं आईने में दिखने वाली इसकी छाया के अलावा यह देखना चाहता था कि परिवर्तन के बाद भी घड़ी काम करती है कि नहीं। और सचमुच घड़ी ने काम करना जारी रखा। यह महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि आगे मैं जीवित प्राणियों पर परीक्षण करने जा रहा था। मैंने कीड़े-मकोड़े, तितलियों, गिनिपिग आदि पर परीक्षण किए। मैंने पाया कि जीवित प्राणी भी इन परीक्षणों के बाद न केवल जीवित रहते हैं बल्कि अच्छी तरह काम भी करते हैं। तब मैंने इन परीक्षणों को आदमी पर आजमाने का फैसला किया।

''ऐसे किसी परीक्षण के सभी संभावित परिणामों को ध्यान में रखते हुए मैंने सभी जानकारियों को विस्तारपूर्वक लिखा और ठीक तरह से सुरक्षित स्थान पर रख दिया; क्योंकि मैं यह परीक्षण स्वयं अपने ऊपर करने जा रहा था। इसलिए मैंने परावर्तन मशीन में घुसने से पहले वीडियो कैमरा और टेपरिकॉर्डर चालू कर दिया, ताकि परीक्षण के नतीजों के दृश्यों एवं आवाजों को दर्ज किया जा सके।

''मशीन द्वारा उत्पन्न पुंज से गुजरने के दौरान मेरा अनुभव आश्चर्यजनक रूप से सामान्य रहा। मुझे अपने मोड़े

या विकृत किए जाने का जरा भी अहसास नहीं हुआ। पुंज में घूमते वक्त मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मैंने जो महसूस किया उसे बोलता रहा, जो टेपरिकॉर्डर में दर्ज होता रहा।

''मशीन से बाहर निकलकर मैंने पाया कि मैं सचमुच बदल चुका हूँ; सिर्फ इतना ही नहीं, मेरे कपड़े, कलाई घड़ी, पेन और मेरे पास रखी हर चीज बदल चुकी थी। यहाँ तक कि मेरा दिमाग भी घूम चुका था और दाईं-बाईं दिशा में होनेवाले सभी कार्य मेरे लिए भ्रम पैदा कर रहे थे। मुझे यहाँ तक सोचना पड़ रहा था कि बोतल को खोलने के लिए ढक्कन को किस दिशा में घुमाऊँ, क्योंकि मेरी नई सहज वृत्ति मुझे उलटी दिशा में प्रेरित कर रही थी; लेकिन शारीरिक तौर पर मैं पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त था और महसूस कर रहा था कि मेरा बायाँ हाथ दाएँ हाथ के मुकाबले ज्यादा ताकतवर और कार्यक्षम हो गया है।

''तब फिर अपने अनुभव को पूरा करने के लिए मैं दोबारा पुंज में से गुजरा। उम्मीद के अनुसार बाहर निकलने पर मैं वापस अपनी पुरानी अवस्था में लौट आया था। लेकिन इसके साथ एक चीज और थी, जिसका मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था। मेरे मस्तिष्क में मेरी परिवर्तित अवस्था की कोई याददाश्त नहीं बची थी।

''यह तो परिवर्तन के दौरान विभिन्न उपकरणों द्वारा दर्ज तसवीरें और आवाजें थीं जिनसे मैं स्वयं को यकीन दिला पाया कि वास्तव में ऐसा हुआ था। अपनी परावर्तित अवस्था में मैंने अपने लिखे हुए ब्योरों को देखा था; पर मैं उन्हें तब तक नहीं पढ़ पाया जब तक कि उन्हें आईने के सामने नहीं रखा।

''लेकिन मेरे इस परीक्षण में केवल एक कमी थी जो मुझे खल रही थी। अपनी पूर्वावस्था में लौटने पर याद नहीं रहता था कि परावर्तित अवस्था में क्या-क्या घटित हुआ था। अभी तक मैं इस कमी को दूर नहीं कर पाया हूँ। अब कल सुबह जब मैं अपनी पूर्व अवस्था में वापस लौटूँगा तो मुझे तुम्हारे साथ आज रात की इस मुलाकात का कुछ भी याद नहीं रहेगा।''

अजीत की इस अजीब कहानी को सुनते वक्त मुझे यही लग रहा था कि यह सबकुछ सच नहीं है बल्कि लेविस केरोल, एच.जी. वेल्स और अलिफ-लैला की कहानियों की खिचड़ी पकाकर पेश की जा रही है। लेकिन यह भी सच था कि एक जीता-जागता सबूत मेरे सामने बैठा पोर्ट वाइन की चुस्कियाँ ले रहा था। अपनी तमाम शंकाओं को दूर करने के लिए मैंने अजीत से वह सवाल पूछा जो मुझे काफी देर से कुरेद रहा था—''तो क्या गणेशजी की यह मूर्ति भी छाया है?''

''तुम स्वयं इस बात का पता क्यों नहीं लगा लेते? तुम संग्रहालय के ठीक ऊपर रहते हो।'' अजीत का सुझाव एकदम व्यावहारिक था।

चाबियों का गुच्छा उठाकर हम दोनों नीचे ब्रिटिशकालीन संग्रहालय के भारत वर्ग में गए। उस कपाट तक पहुँचते-पहुँचते, जहाँ गणेशजी की मूर्ति ताले में बंद होनी चाहिए थी, मुझे एहसास होने लगा कि हमें क्या दिखेगा!

कपाट एकदम खाली था।

''तो आखिरकार मैं उतना उदार दानदाता नहीं था!'' अजीत के 'उपहार' खाली कपाट में रखकर वापस लौटा तो अजीत ने व्यंग्य किया। उसने किसी तरह असली मूर्ति को वहाँ से गायब कर दिया और उसे अपने नाटकीय परीक्षण से गुजार डाला।

□

''अब प्रमोद के शानदार खेल के बारे में कुछ बताओ।'' मैंने कहा। अभी तक जो कुछ मैंने जाना था, उससे इस रहस्य पर भी कुछ रोशनी पड़ती थी।

''टेस्ट मैच के एक दिन पहले शाम को प्रमोद मेरे पास आया था। वह बहुत उदास और निराश था। मैं जानता था कि टेस्ट मैच गेंदबाज के रूप में उसकी जवानी ढल चुकी थी और अंतिम टेस्ट मैच में उसे लिया जाना केवल

काबलीयत के कारण नहीं था। तब उसने कुछ ऐसी बात कही जिससे मुझे अनोखा विचार सूझा कि मेरी गेंदबाजी में जरा भी धार बाकी नहीं बची है, उसका केवल यही रोना था।

'अगर मैं उसे आईने में दिखनेवाली उसकी छाया में बदल डालूँ तो?' मैंने सोचा। इस तरह वह खब्बू गेंदबाज की तरह बाएँ हाथ से गेंदबाजी करेगा; मगर वह किसी साधारण खब्बू गेंदबाज की तरह गेंद नहीं फेंकेगा। उसकी सारी गतिविधियाँ आईने में दिखनेवाले अपने दाएँ हाथवाले गेंदबाज की छाया की तरह होंगी। किसी भी हालत में कोई भी बल्लेबाज उसकी गेंदों को समझ नहीं पाएगा।

''मैंने कॉफी में नशीली दवा मिलाकर उसे पिला दी और जब वह बेहोश हो गया तो मैंने उस पर अपना परीक्षण कर डाला। कड़ी सुरक्षा के बावजूद उसे प्रयोगशाला के अंदर ले जाना आसान था। सुरक्षा व्यवस्था में ढेर सारे सुराखों का मुझे काफी पहले ही पता लग चुका था। परीक्षण पूरा करने के पश्चात् मैं उसे होटल में उसके बिस्तर पर लिटाकर आ गया।

''अगली सुबह मुझे फोन पर उसकी हड़बड़ाई-सी आवाज सुनाई दी। उसको जैसे दौरा पड़ रहा हो—वह कमजोरी महसूस कर रहा था, पढ़ नहीं पा रहा था, अक्षर उसे उलटे लग रहे थे...। वह जानना चाह रहा था कि पिछली रात उसने ऐसा कुछ खा-पी तो नहीं लिया था जिससे ये सब गड़बड़ियाँ शुरू हुईं। किसी डॉक्टर को दिखाने में भी वह डर रहा था कि कहीं मैच के लिए अयोग्य न ठहरा दिया जाए।

''मैं दौड़ा-दौड़ा उसके कमरे में गया और उसे आश्वस्त किया। उसका दायाँ हाथ कमजोर पड़ गया था और वह गेंदबाजी नहीं कर सकता था; लेकिन बाएँ हाथ का क्या हाल था? आश्चर्यजनक रूप से उसके बाएँ हाथ में ज्यादा जान आ गई थी। मैंने उसे बाएँ हाथ से गेंद फेंकने की सलाह दी। पहले तो उसे मेरा सुझाव बेतुका लगा ही, परंतु जितना उसने अपने बाएँ हाथ को झुलाया उतना उसे मेरे सुझाव और अपने बाएँ हाथ की ताकत पर यकीन होता गया। फिर मैंने उसे नेट प्रैक्टिस की सलाह दी, चूँकि टीम के बाकी सदस्य अभी तक सो रहे थे। मैंने उसके साथ अभ्यास में जाने की पेशकश की। एक तरह से यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि इस तरह उसके इस नए पराक्रम पर सही मौका आने तक परदा पड़ा रहता। उसके बाद की घटनाएँ तो तुम्हें पता ही हैं।'' अजीत ने अपनी कथा समाप्त की।

''तो वह तुम्हीं थे जो मैच के बाद प्रमोद को तुरंत अपने साथ ले गए थे?'' मैंने पूछा।

''हाँ, और वह भी मैं ही था जिसने टेलीफोन कर समाचार-पत्र के कार्यालय को सूचना दी थी। मैंने उसे कुछ दिनों तक अपने घर पर रखा। जब वह कुछ ठीक हुआ तो मैंने उसे वापस सामान्य स्थिति में तब्दील कर दिया और बो स्ट्रीट पर छोड़ आया। अलबत्ता, वह अपने खब्बूपन की सारी बातों को भूल चुका था और मैंने भी उसे कुछ बताना ठीक नहीं समझा।''

कोई अच्छा वैज्ञानिक सिद्धांत कई परिघटनाओं का कारण बता सकता है। इसलिए अजीत की इस उल्लेखनीय खोज से मेरे कई प्रश्नों के उत्तर मिल गए। अब मैं देख सकता था कि वह छुरी-काँटे से खाना क्यों नहीं खाना चाहता था। ऐन और मैं उसके अनोखे व्यवहार को भाँप लेते। और सचमुच में ऐसा हुआ था। हमने हाथ से खाने में उसे कठिनाई होते देखकर पूछा भी था; पर उसने इसका एकदम सटीक कारण बताया। लेकिन केन ने उससे पुस्तक पर दस्तखत करने के लिए कहकर उसे सचमुच परेशानी में डाल दिया। अगर आपका दिमाग सभी अक्षरों को उलटी दिशा में लिखने के लिए जोर डाले तो अपना नाम लिखना भी कठिन हो जाता है।

''अजीत, तुम्हें अपनी खोजों को तुरंत प्रकाशित करा लेना चाहिए। तुम्हें तो निश्चित ही नोबेल पुरस्कार मिलेगा।'' मैंने किसी अनाड़ी की तरह उसे सलाह दी।

''नहीं, अभी नहीं, जॉन!'' अजीत ने कहा, ''तुम जानते हो कि मैं एक परिपूर्णतावादी आदमी हूँ और मेरे कार्य में स्मृति-लोप मुझे बहुत गंभीर त्रुटि लगती है। जब तक कि मैं इस त्रुटि को दूर न कर लूँ, मैं अपनी खोज का संसार के सामने खुलासा करने को तैयार नहीं हूँ।''

''मगर अजीत, मेरी व्यावहारिक सलाह तो यही है कि तुम प्रकृति के अज्ञात नियमों के साथ खिलवाड़ कर रहे हो। तुमने अभी तक कामयाबी हासिल की है, इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम दोबारा कामयाब हो जाओगे। क्या यह समझदारी नहीं होगी कि तुमने अभी तक जो कुछ किया है, उसे साफ लिखकर किसी सुरक्षित जगह में रख दो।''

''मैंने बिलकुल ऐसा ही किया है। मेरे लिखे ब्योरे को पढ़कर कोई भी वैज्ञानिक रूप से सक्षम समूह मेरे परीक्षण को दोहरा सकता है। भावी सफलता के बारे में जहाँ तक तुम्हारी बात का संबंध है, मैं इससे इनकार नहीं करता हूँ। लेकिन फिलहाल मैं अपने परीक्षण में सुधार कर रहा हूँ और मुझे उम्मीद है कि इससे परीक्षण की यह कमी भी जल्द ही दूर हो जाएगी। हालाँकि मुझे अपनी अब तक की प्रगति को जाहिर नहीं करना चाहिए था, पर अपने सच्चे दोस्त को छकाने की शरारत भरी इच्छा के कारण ही मैंने ऐसा किया।''

मैंने उससे बहस करने की कोशिश की; पर जैसी कि मुझे आशंका थी, अजीत एक बार जो ठान ले, उससे उसे डिगाना कठिन है।

कुछ महीनों बाद ही मुझे अजीत की प्रयोगशाला से फोन आया। मुझे तुरंत निदेशक से मिलने के लिए तलब किया गया था।

मन में तमाम तरह की आशंकाएँ लिये मैंने दरवाजा खटखटाया। निदेशक के कार्यालय में निदेशक के अलावा सफेद कोट पहने डॉक्टर, एक साधारण आदमी और अजीत भी था। मैंने राहत की साँस ली। मुझे डर था कि कहीं अजीत को जिंदा न देख सकूँ।

लेकिन वह राहत तात्कालिक ही थी। अजीत मुझे पहचान नहीं सका। सचमुच डॉक्टर के कहे अनुसार अजीत अपनी याददाश्त पूरी तरह खो बैठा था और उसके ठीक होने के कोई आसार नहीं थे। प्रयोगशाला में अजीत के कार्यालय से मेरा नाम और फोन नंबर मिला था, इसलिए वे मुझसे संपर्क कर सके।

''क्या उसने कोई लिखित रिकॉर्ड रखा है कि वह क्या करता रहा था?'' मैंने सावधानीपूर्वक पूछा। अब मुझे झुँझलाहट हो रही थी कि मैं अजीत से उस सुरक्षित जगह का पता पूछना कैसे भूल गया, जहाँ उसने अपना रिकॉर्ड रखा था।''

''अगर उसने रखा हो तो भी दुर्भाग्यवश हमारे पास पता लगाने का कोई माध्यम नहीं है।'' निदेशक ने गहरी साँस लेकर कहा, ''आपको पता है कि वह जो कुछ परीक्षण कर रहा था, आज अचानक ही उड़ गया और उसके कमरे में सबकुछ चकनाचूर हो गया।''

''सौभाग्य से वह बच गया।'' डॉक्टर ने बात पूरी की। उसके शब्दों का चयन बेहद अजीब था। अजीत जैसे प्रतिभावान् वैज्ञानिक के लिए याददाश्त का चले जाना मौत से भी बदतर था।

''उसके घर का क्या हाल है?'' मैंने पूछा। मुझे उम्मीद थी कि वहाँ जरूर कुछ हो सकता है।

''किसी आम कुँवारे आदमी के घर की तरह एकदम अस्त-व्यस्त।'' मामूली से दिखनेवाले आदमी ने बताया, ''हमने उसके घर की बड़ी बारीकी से तलाशी ली, पर वहाँ कुछ भी नहीं मिला। असल में हमने आपको यहाँ इसलिए बुलाया है कि शायद आप इस मामले पर कोई प्रकाश डाल सकें।''

''मुझे खेद है कि मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता। अजीत हालाँकि मेरा अच्छा मित्र था, लेकिन उसने कभी भी अपनी गोपनीय वैज्ञानिक बातों को बाँटने के लिए मुझे पर्याप्त पढ़ा-लिखा नहीं समझा।''

उसके बाद मैं घर आ गया। मुझे हैरानी होती है कि क्या सच्चाई झूठ से ज्यादा यकीन दिलानेवाली होगी। मैंने झूठ के पक्ष में फैसला लिया। आखिरकार मेरा वैज्ञानिक वर्णन यकीन किए जाने के लिए कल्पना से भी अधिक अद्‍भुत लगता।

आज भी यह मुझे कल्पना से भी अधिक अद्‍भुत लगता है! आप चाहें तो मेरे संग्रहालय में आकर इसका ठोस सबूत स्वयं देख सकते हैं—गणेशजी की वह दुर्लभ मूर्ति।

❑

8

अनदेखा रास्ता

''**नौ**करशाही के ऐसे फरमान देखकर मैं पागल हो जाता हूँ।'' अपने मित्र की ओर एक चिट्‌ठी उछालते हुए मेजर दलजीत सिंह सौंध चीखा।

मित्र ने चिट्‌ठी खोली। चिट्‌ठी खोलते ही सबसे पहले उसकी नजर भारत सरकार के तीन शेरोंवाले निशान पर पड़ी, जो लाल रंग में चिट्‌ठी के ऊपर छपा था। जाहिर है, चिट्‌ठी भारत सरकार के किसी महकमे द्‌वारा भेजी गई थी। रक्षा विभाग की तरफ से आई इस चिट्‌ठी में अंग्रेजी में छपा छोटा सा संदेश था—

'आपसे अनुरोध है कि आप 21 अप्रैल, 2010 को सुबह 11 बजे तक इस कार्यालय में बुलाई गई बैठक में उपस्थित होने की कृपा करें। आपकी यात्रा के टी.ए.डी.ए. का इस विभाग के नियमों के अनुसार भुगतान किया जाएगा। अगर आप अधोहस्ताक्षरधारी को अपने आगमन की पूर्व सूचना दे सकें तो हमें सुविधा होगी।'

मित्र ने मुसकराते हुए पूछा, ''तो इसमें क्या खराबी है?'' हालाँकि उसे जवाब मालूम था, जिसे दलजीत ने ज्वालामुखी की तरह उगल दिया, ''वे चिट्‌ठी को सीधे-सपाट शब्दों में क्यों नहीं लिखते? कौन मुझसे अनुरोध कर रहा है? कौन मेरी सूचना का स्वागत करेगा?''

''दलजीत, यही वह पहला सबक है जो विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं में हमारे नौकरशाहों को सिखाया जाता है कि भूल जाओ कि तुम कौन हो...तुम अपने विभाग के लिए लिख रहे हो। कभी भी प्रथम पुरुष एकवचन में मत लिखो, वरना लिखे हुए वक्तव्यों के लिए तुम्हें ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा। अगर कोई अफसर तुम्हें बुलावा भेजे और आने-जाने का खर्च दे तो कोई ऑडिटर उससे पूछ सकता है कि सरकारी पैसे को उड़ानेवाला वह कौन होता है? या किसने उसे यह अधिकार दिया? इसलिए सबसे अच्छा तरीका है कि बातों को घुमा-फिराकर लिखा जाए, जिससे तुम्हारी कोई जिम्मेदारी न बने और मौज-मस्ती भी हो जाए।'' मित्र ने दलजीत के विचारों से सहमत होते हुए कहा । पर वह भी जानता था कि अब उस मशीनरी को बदलने के लिए बहुत देर हो चुकी है, जिसे 'सरकार' कहा जाता है, जो ऊपर से नीचे तक निकम्मेपन की पर्याय बन चुकी है।

''ठीक है!'' दलजीत ने हथियार डाल दिए, ''लेकिन फिर हमारी शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में भी अफसर उसी ढर्रे पर क्यों चलते हैं?''

''यह तो अंग्रेजों की छोड़ी हुई विरासत है, दोस्त!''

''जो पिछले साठ साल में और भी ज्यादा फल-फूल गई है।''

''सरकार को अपने हाल पर छोड़ दो; पर तुम दिल्ली जा रहे हो या नहीं?'' मित्र ने पूछा।

''यह तथाकथित अनुरोध असल में एक फरमान है। मैं अभी, इसी वक्त इंटरनेट पर अपनी यात्रा के लिए टिकट बुक कराता हूँ।'' हालाँकि दलजीत को सरकारी भाषा से चिढ़ थी, पर वह इसे अच्छी तरह समझता था।

□

कुँवारों के फ्लैट में पसरा माननीय विलियम मॉनक्रीफ फुरसत में नाश्ते का मजा ले रहा था। साथ ही वह 'द टाइम्स' में पत्रोंवाले स्तंभ को पढ़ भी रहा था। एटन और कैंब्रिज में पढ़ाई पूरी कर वह रॉयल एयर फोर्स में शामिल हुआ और वहाँ उसने बहादुरी के लिए एक मेडल भी जीता। पर अब चूँकि दुनिया ऐसी व्यवस्था की ओर बढ़ रही थी जिसमें लड़ाइयाँ कम से कमतर होती जा रही थीं, लिहाजा उसने आर.ए.एफ. को जल्द ही अलविदा कह दिया।

इस तरह एक अर्थ में वह ब्रिटेन के बेरोजगारों की जमात में शामिल हो गया था। क्योंकि उसे अपना मनपसंद काम नहीं मिल सका—ऐसा काम जिसमें रोमांच हो, इसलिए कभी-कभार वह सोचा करता कि काश, वह भी डेढ़ सदी पहले विक्टोरिया के इंग्लैंड में पैदा हुआ होता!

पाठकों के पत्र पढ़ने के बाद उसने नौकरियों के स्तंभों पर नजर दौड़ाई। उसे आशा थी कि एक-न-एक दिन उसे उसमें कोई ऐसा विज्ञापन जरूर दिखेगा, जो उसे साहस और रोमांच की दुनिया में ले जाएगा।

और शायद वह दिन आज आ ही गया था! एक छोटे से बक्से में छपे विज्ञापन में लिखा था—'रोज-रोज एक ही ढर्रे से ऊब गए हैं? साहस, रोमांच और चुनौती की तलाश में हैं? लिखिए बॉक्स नं. 3457।'

विलियम को 99 प्रतिशत पूर्ण विश्वास हो गया कि यह काम जरूर किसी सनकी का है, जिसके पास 'टाइम्स' में इश्तहार छपवाने के लिए अथाह पैसा है। लेकिन वह 1 प्रतिशत जोखिम उठाने को तैयार था कि कहीं यह इश्तहार असली हुआ तो? आखिर आवेदन करने में उसकी जेब से क्या जा रहा है? केवल डाक टिकट का पैसा, जो वह आसानी से खर्च कर सकता था।

तो इस तरह माननीय विलियम मॉनक्रीफ अपनी टेबल पर पहुँचा और अपना कीमती नोट पेपर खींचकर बाहर निकाला।

□

डॉ. कार्टर पैटरसन ने अपनी कार अपने अपार्टमेंट परिसर में जमीन के नीचे बने कार पार्किंग में पार्क की और उसमें ताला लगाकर लिफ्ट की ओर दौड़ पड़े। लिफ्ट में उन्होंने अपनी मंजिलवाला बटन दबाया और जैसे ही लिफ्ट ने चलना शुरू किया, उन्होंने अपनी घड़ी पर निगाह डाली। उस समय शाम के 5.50 बजे थे।

अपार्टमेंट में घुसते ही उन्होंने अपना टेलीविजन चालू किया। टेलीविजन पर अपने तीखे तेवरों और रूढ़िवादी विचारों के लिए मशहूर कमेंटेटर किसी कार्यक्रम को समेट रहा था—"....अगर हमारे वैज्ञानिक अपने हवाई किलों से निकलकर जमीनी हकीकत पर आ गए होते तो ऐसी हालत पैदा ही नहीं होती।"

इसका क्या मतलब था? क्या सीनेट ने उलटा फैसला लिया है? क्या उसे अपने अन्य साथियों के साथ जीनेटिक इंजीनियरिंग पर नए-नए परीक्षण करने से मना कर दिया जाएगा? कार्टर यह जानने को बेचैन था। अब वह अपनी कार में लगे खराब रेडियो को गालियाँ देने लगा कि उसके कारण वह रास्ते में खबरें सुन ही नहीं पाया। अब उसे कुछ देर और इंतजार करना पड़ेगा, जब तक कि टी.वी. समाचारों में मुख्य समाचार नहीं दिखाते हैं। अब वह उन विज्ञापनों को गाली बकने लगा जो कमेंटेटर के हटते ही टेलीविजन पर दिखाए जाने लगे। आखिरकार समाचार-वाचिका मुख्य समाचारों के साथ बुलेटिन को समेटने लगी।

"सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने घोषणा की है कि मध्य-पूर्व में वार्त्ता एक कदम आगे बढ़ी है। दक्षिण कैलिफोर्निया में आग पर काबू पा लिया गया है। सीनेट में तमाम जीनेटिक इंजीनियरिंग परीक्षणों को तब तक रोकने के पक्ष में 70 और विपक्ष में 30 मत पड़े, जब तक कि कांग्रेसीय कमेटी पूरे हालात की समीक्षा नहीं कर लेती है। मैंकियो का विजय अभियान जारी है....।"

कार्टर ने टेलीविजन बंद कर दिया और अपने साथी को फोन लगाया—"जॉन! मैं कार्टर बोल रहा हूँ। आज सीनेट में क्या हुआ? मैं केवल मुख्य समाचार ही सुन पाया।"

"हम सभी आज से ही इस महान् राष्ट्र के बेरोजगार लोगों में शामिल हो गए हैं।" जॉन ने उत्तर दिया, "सीनेट ने हमारे सभी परीक्षणों को आज से ही रोक दिया है। हमारे अनुसंधानों को मिलनेवाली आर्थिक सहायता बंद कर दी है और इस अनुसंधान को जनता के हितों के खिलाफ घोषित कर दिया है। एक समिति पाँच साल बाद हालात का जायजा लेगी।"

''पाँच साल! हे भगवान्!'' कार्टर हैरानी से चिल्लाया, ''तो अब तुम क्या करने जा रहे हो?''

''मैं शायद हैमबर्गर की दुकान खोल लूँ। इससे मैं लोगों के ज्यादा करीब आ जाऊँगा। जैसे कि सीनेटर हम वैज्ञानिकों से कराना चाहते हैं!'' जॉन अभी तक उन शब्दों की गहराई से उबर नहीं पाया था। कार्टर को कोई अंतर महसूस नहीं हुआ।

रिसीवर रखकर कार्टर तसवीर के टुकड़ों को जोड़कर पूरी तसवीर बनाने की कोशिश करने लगा। यह अनुसंधान ही उसके जीवन को चलानेवाली मुख्य प्रेरणा-शक्ति का काम कर रहा था। इसी के चलते वह हारलेम छोड़कर प्रयोगशाला के निदेशक पद पर आया। और अब वह भी उससे छिनता दिख रहा था। इस रास्ते पर बड़ी-बड़ी रुकावटों से उसका सामना हुआ, लेकिन अपनी मजबूत इच्छा-शक्ति के बल पर वह उनसे पार पाता गया। पर अब लगता था कि भले ही थोड़ी देर के लिए सही, वह शक्ति उससे छिन गई।

तभी फोन की घंटी घनघना उठी। शायद कोई और वैज्ञानिक साथी उसके कंधों पर सिर रखकर रोना चाहता था। उसने रिसीवर उठाया और अपनी पहचान बताई। लेकिन जब फोन करनेवाले ने अपनी पहचान का खुलासा किया तो रिसीवर कार्टर के हाथ से लगभग छूट ही गया था।

□

कर्नल इलया मोरोविच ब्रुसेल्स में रूसी कॉन्सुलेट में तैनात थे। करीब दो दशक पूर्व वे के.जी.बी. के एक जाने-माने एजेंट थे। लेकिन सोवियत संघ के विघटन के बाद नई सरकार ने उनकी विलक्षण प्रतिभा के लिए उसके अनुरूप काम ढूँढ़ लिया था। कर्नल इलया शराब, औरतों और शतरंज का भी शौकीन था। किसी भी पार्टी में उसका रंग जम जाता था और इस उन्मुक्त विचारोंवाले तथा मिलनसार फर्स्ट सेक्रेटरी को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उसका अतीत दु:खों से भरा रहा होगा। जहाँ तक शतरंज का संबंध है, वह दुनिया के शानदार शतरंज खिलाड़ियों के संपर्क में रहता था।

पर कोई भी अंदाजा नहीं लगा सकता था कि इलया ने इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर हार्डवेयर में वास्तविक दक्षता प्राप्त की थी, यहाँ तक कि यूरोपीय समुदाय में रूसी राजदूत भी इलया की इस विशेषता से बेखबर था।

आज राजदूत ने स्वयं इलया को फोन लगाया—

''तुम्हें तुरंत मॉस्को तलब किया गया है।''

''जी हाँ, श्रीमान।'' इलया ने उत्तर दिया।

राजदूत ने उसके पूछे बिना ही बताया, ''तुम्हें अभी जाना होगा, तुरंत। तुम्हें वहाँ ले जाने के लिए एक विशेष जहाज का प्रबंध कर दिया गया है।''

तभी न जाने कहाँ से सादे कपड़ों में दो आदमी प्रकट हुए। इलया ने अंदाजा लगाया कि वे गार्ड रहे होंगे, जिन्हें राजदूत ने भेजा है।

''ये आदमी तुम्हें तुम्हारे घर तक ले जाएँगे, जहाँ तुम अपना सामान पैक करोगे। और फिर ये तुम्हें हवाई अड्डे तक ले जाएँगे। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।'' राजदूत ने अपनी बात पूरी की।

इस बात का कोई जिक्र नहीं कि उसे क्यों तलब किया गया है और कितने समय तक उसे मॉस्को में रुकना पड़ेगा। शायद स्वयं राजदूत को भी इस बारे में कुछ पता नहीं था।

यह तो बिलकुल पुराने समय की घटना की तरह थी, जब के.जी.बी. सक्रिय होती थी। अगर सन् 1985 में इस तरह का कोई बुलावा आया होता तो वह अपने भविष्य को लेकर गहरी चिंता में पड़ जाता; पर आज उसे कुछ जिज्ञासा हो रही है।

□

चियांग तेंग ने अभी अपनी उम्र के तीस पड़ाव ही पार किए होंगे। लेकिन अभी से वह चीन के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में प्रतिभाशाली वैज्ञानिक के तौर पर अपना सिक्का जमा चुका था। परमाणु तकनीकी में कई संवेदनशील परीक्षणों में उसका सहयोग था। उसे देश के बाहर जाने की इजाजत कभी-कभार ही मिलती थी।

यही कारण था कि आज जब उसे देश के बाहर जाने का आदेश मिला तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसे किसी विदेशी मुल्क में जाने को कहा गया। पर मुल्क का नाम नहीं बताया गया। केवल यही कहा गया कि इसका खुलासा उसके वहाँ पहुँच जाने के बाद किया जाएगा और तभी उसे उसके मिशन की जानकारी दी जाएगी।

गनीमत थी कि तेंग के चेहरे पर एक समान भाव रहते थे। इससे उसके भीतर उमड़ रही भावनाओं और उत्तेजनाओं का पता नहीं चला। और फिर परमाणु प्रयोगशाला में रोज-रोज एक ही ढर्रे से चलनेवाले काम से वह उकता भी गया था। नाभिकीय तकनीकी पर कड़े नियंत्रणों और अंतरराष्ट्रीय निगरानी के चलते उसे अपने ज्यादातर उत्साहजनक विचार को ताक पर रख देना पड़ा था।

शायद अब उसकी प्रखर बुद्धि को असली चुनौती मिले।

□

पाँच कोनोंवाली मेज एक गोलाकार कमरे के बीचोबीच सजी हुई थी। इसके इर्द-गिर्द पाँच लोग बैठे थे। जाहिर है कि वे पाँचों किसी खास मिशन के लिए इकट्ठा हुए थे। उनकी वार्त्ता का कोई मुखिया नहीं था, इसलिए उन पाँचों में जो चाहे अपने आपको मुखिया मान सकता था। फिलहाल वे पाँचों कुछ पढ़ने में मगन थे। प्रत्येक के सामने एक ही तरह की पुस्तिका रखी हुई थी।

सबसे पहले सरदारजी ने पढ़ना समाप्त किया। पुस्तिका अपने सामने पटकते हुए वे बड़बड़ाए, ''क्या कमाल का आइडिया है!''

''बिलकुल मेरी चाय की प्याली की तरह!'' उत्तेजित स्वर में विलियम बोला, जिसने सरदारजी के बाद पढ़ना समाप्त किया। उसके बाद कार्टर पैटरसन, इलया और सबसे अंत में तेंग ने पुस्तिका समाप्त की।

''लगता है कि विज्ञान की कल्पनाएँ सच में साकार होने जा रही हैं! तुम क्या सोचते हो, इलया?'' कार्टर ने पूछा और इलया मोरोविच ने सहमति में सिर हिलाया। केवल चियांग तेंग का चेहरा ही सपाट बना रहा, जब उसने यह कहा, ''ठीक-ठाक ही लगता है।''

''तो मैं यह मान लूँ कि आप सभी को यह योजना बहुत पसंद आई?'' साफ-सुथरी भाषा में एक आवाज ने पूछा। हालाँकि कोई नजर नहीं आया।

स्पीकर कुछ इस तरह रखे थे कि टेबल के इर्द-गिर्द बैठे प्रत्येक व्यक्ति को यही लगा कि आवाज उसी के सामने से आ रही है। आवाज ने आगे बोलना जारी रखा—''आपके प्रश्नों का स्वागत है। अगर आप चाहें तो अपनी भाषा में सवाल पूछ सकते हैं। आपको जवाब भी आपकी भाषा में ही मिलेगा। यह महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस मिशन के बारे में आपके मन में कोई गलतफहमी नहीं रहनी चाहिए।''

सबसे पहला सवाल इलया ने पूछा, ''क्या हमें इस बात की छूट है कि हम चाहें तो इस योजना में शामिल हों या न हों?''

''नहीं!'' अदृश्य आवाज ने उत्तर दिया, ''हमने इस चयन-प्रक्रिया में सौ लोगों को बुलाया था। उनमें से कुछ अपनी मरजी से चले गए और बाकी लोगों को हमने निकाल दिया। केवल आप पाँच लोग ही चुने गए हैं। इस प्रक्रिया की आखिरी अवस्था तक आपके पास शामिल न होने का विकल्प था। आपको एक अस्पष्ट इशारा किया गया था कि अगर आप जारी रखते हैं तो अंत में क्या मिलेगा। अब सारी तसवीर आपके सामने है, पर कोई विकल्प नहीं है।''

''मेरे हिसाब से तो अच्छा है! पर क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्या आप यह गारंटी देंगे कि एक सदी के लिए जमा देने के बाद भी हम जिंदा रहेंगे?'' दलजीत ने पूछा।

''हमारे वैज्ञानिकों और तकनीकी स्टाफ को पूरा भरोसा है कि उनकी तकनीक काम करेगी। इसे जानवरों, पक्षियों और मनुष्यों पर भी सफलतापूर्वक आजमाया गया है! अभी तक हमारा कोई भविष्य नहीं था; पर उन्हें जमाने की अवधि दो साल से ज्यादा नहीं रही। इसलिए कुछ खतरा तो है, जिसे आपको उठाना पड़ेगा ही।''

''लेकिन आप हमें अंतरिक्ष में क्यों भेज रहे हैं?'' तेंग ने पूछा, ''अगर हम धरती पर भी किसी निर्जन स्थान पर रहें तो क्या आपका मकसद हल नहीं होगा?''

''बहुत अच्छा सवाल है!'' आवाज ने उत्तर दिया।

''पर हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि आज से सौ साल बाद धरती पर ऐसी कोई जगह बचेगी जहाँ मनुष्य के पैर न पड़े हों। बल्कि आपके लिए तो ज्यादा सुरक्षित यह रहेगा कि आप शनि ग्रह के चारों ओर एक कक्षा में घूमते रहें। हमने ऐसा उड़ान कार्यक्रम बनाया है कि आपका अंतरिक्ष यान शनि तक जाएगा। उसके चारों ओर सौ चक्कर काटेगा और सौ साल बाद वापस धरती पर लौट आएगा। हमें नहीं लगता कि इस पूरे समय के दौरान मनुष्य आपको अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों से तंग करेगा।''

''पर हममें से कोई भी अंतरिक्ष यात्री नहीं है। केवल मैं ही जहाज उड़ा सकता हूँ। तब फिर हम धरती पर उस अंतरिक्ष यान को कैसे उतारेंगे?'' विलियम ने सधा हुआ-सा प्रश्न पूछा।

''मुझे पूरा विश्वास है कि तुम सब इतने चालाक हो कि यान नीचे उतारने का तरीका ढूँढ़ ही लोगे। अंतरिक्ष यान में ही इसे धरती पर किसी अंतरिक्ष अड्डे पर उतारने की पूरी जानकारी मिलेगी। इन सौ वर्षों में तुम्हारे जैसे और अंतरिक्ष यान होंगे तथा तब तक अंतरिक्ष तकनीक और ज्यादा विकसित हो चुकी होगी। इसलिए तुम लोगों को कोई-न-कोई मदद मिल ही जाएगी। बशर्ते किसी परमाणु युद्ध में दुनिया ही न तबाह हो चुकी हो।'' आवाज की बातों का मतलब था कि इस दु:साहसिक यात्रा में और चीजों के अलावा यात्रियों की खुद की दिलचस्पी भी जरूरी थी।

''जब हम धरती पर लौट आएँगे तो हमसे क्या उम्मीद की जाएगी?'' कार्टर ने पूछा।

''तुम सब इक्कीसवीं सदी के शुरुआती दौर का प्रतिनिधित्व करोगे। आज से सौ साल बाद धरती पूरी तरह बदल चुकी होगी। बहुत तरक्की हो चुकी होगी; लेकिन क्या तब मनुष्य आज से ज्यादा खुश होगा? हो सकता है कि तुम सबका मिला-जुला ज्ञान बाईसवीं सदी के धरतीवासियों के लिए काम का साबित हो।''

'या वे हम पर हँसेंगे', दलजीत ने सोचा। उसने अपने दिमाग पर जोर डाला कि अगर बाल गंगाधर तिलक, लॉयड ज्यॉर्ड, कॉनन डॉयल और मैक्स प्लैंक जैसे महान् व्यक्ति आज की दुनिया में जी उठें तो क्या होगा? तभी उसे खयाल आया—हम में से किसी के बस की बात नहीं कि दुनिया को हिलाकर रख दें...। हम बुद्धिमान हो सकते हैं, बड़ी-बड़ी चीजें विकसित कर सकते हैं; किंतु आखिर में तो हम सभी साधारण इनसान ही हैं। हाँ, हो सकता है कि हमारी सहज वृत्ति काम की साबित हो।

यह तो केवल समय बताएगा।

□

अंतरिक्ष स्टेशन-V को रेड एलर्ट का पहला संकेत मिला। इसके रिमोट सेंसर की लाल बत्ती जल उठी। साथ ही सायरन जैसी बीप-बीप की आवाज ऑडियो एलर्ट से आने लगी। मुख्य ऑपरेटर ने एक बटन दबाकर सायरन की तीखी आवाज को खामोश किया। दूसरा बटन दबाते ही कंट्रोल रूम में परदे पर काले आकाश का नक्शा उभर आया, जिसमें जहाँ-जहाँ तारे टिमटिमा रहे थे। उन तारों के बीच में था एक छोटा सा चमकदार धब्बा।

और जल्दी ही परदे पर एक संदेश उभरा—'यू.एफ.ओ.! विस्तृत जानकारियों की पड़ताल जारी है। वर्तमान कोऑर्डिनेट...' अंकों के जरिए अनजानी उड़न वस्तु की स्थिति पृथ्वी पर स्थिर फ्रेम के संदर्भ में बताई गई। इससे फ्रेम पर अंतरराष्ट्रीय सहमति है। एस.एस.वी. के कंप्यूटर में मनुष्य द्वारा अंतरिक्ष में छोड़ी गई उड़नेवाली वस्तुओं के कोऑर्डिनेट और पंजीकरण संख्या दर्ज थी, क्योंकि वर्तमान 'घुसपैठिया' इनमें से किसी से भी मेल नहीं खाता था, इसलिए रेड एलर्ट का सायरन बज उठा।

इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यू.एफ.ओ. लोगों की जबान पर चढ़ चुका था। आसमान पर उड़ती किसी भी अनजानी चीज को यू.एफ.ओ., बोल दिया जाता था, जब तक कि वह पहचानी नहीं जाती। लेकिन मीडिया के उकसावे में आकर आम आदमी यह यकीन करने लगा था कि कोई यू.एफ.ओ. जब तक कि उसकी मानव-निर्मित वस्तु के रूप में पहचान नहीं हो जाती, बाहरी अंतरिक्ष से आनेवाली चीजें हैं। कई सनकी लोग तो बाहरी अंतरिक्ष के यानों को देखने, यहाँ तक कि उसमें उड़ने का दावा भी करते थे। उड़न तश्तरियों की झूठी तसवीरें भी दिखाई गईं, ताकि साबित किया जा सके कि वे बाहरी अंतरिक्ष से आई थीं। पर ज्यादातर मामलों में वे प्रकाशीय भ्रम ही निकलती थीं। कई बार मतिभ्रम के कारण किसी भी चीज को उड़न तश्तरी मान लिया जाता था। सन् 2110 में हालात पूरी तरह बदल चुके थे। सभी मानव-निर्मित अंतरिक्ष यानों का कंप्यूटर में डाटाबेस बनाया गया था। यू.एफ.ओ. के देखने के तथाकथित दावों की जल्द ही कलई खुल जाया करती थी। इसलिए पता चल जाता था।

पर यह मामला कुछ अलग था। कंप्यूटर पहले ही अंतरिक्ष यान को पहचान चुका था, इसलिए भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं थी। पर दिक्कत यह थी कि मानव-निर्मित यानों के डाटाबेस में इसका कोई रिकॉर्ड नहीं था। तो क्या यह वास्तव में बाहरी अंतरिक्ष से आया था?

□

सबसे पहले विलियम की नींद खुली।

उसके दिमाग ने टुकड़ों में सक्रिय होना शुरू किया। पहले उसने सोचना शुरू किया, पर हाथ-पैरों की गति पर इसका कोई नियंत्रण नहीं था। अतीत की घटनाएँ भी टुकड़ों में याद आने लगीं। वह कौन था? वह कहाँ था? उसके साथ क्या हुआ था? इन प्रश्नों के उत्तर धीरे-धीरे याद आने लगे। इस तरह वह कुछ आश्वस्त हुआ कि उसकी याददाश्त अभी भी बरकरार है। याददाश्त सौ वर्षों में भी बरकरार है। जब उन्हें गहरे जमे हुए कक्ष में डाला गया तब से क्या एक सदी बीत गई?

उसे अब भी इस बात पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। पूरे सौ वर्ष! बीते सौ वर्षों का एक भी अनुभव उसके दिमाग में नहीं था। उससे पहले की बातों को याद किया तो उसे लगा कि उन्हें धरती का चक्कर काट रहे अंतरिक्ष यान में होना चाहिए। जहाँ तक दिन और समय का संबंध है, उसे उम्मीद थी कि यान में लगी घड़ियाँ अभी भी काम कर रही होंगी और उसे समय, दिन एवं वर्ष की सही जानकारी देंगी। बशर्ते कि खुद वह हिलने-डुलने लगे। पर चूँकि उसके होशो-हवास लौट आए थे, इससे भरोसा होने लगा था कि चीजें तेजी से सामान्य हो रही हैं और यान में लगे यंत्र ठीक-ठीक काम कर रहे थे।

हाँ, उसे याद आया कि उन्हें बताया गया था कि पहले उसका दिमाग टुकड़ों में सक्रिय होगा और फिर उसी तरह पूरा शरीर। पहले आँखें, कान, फिर जीभ... इस तरह धीरे-धीरे पूरा शरीर सक्रिय होगा। पैर सबसे अंत में सक्रिय होंगे।

उसने धीरे-धीरे आँखों को खोलने की कोशिश की।

उसने धीरे-धीरे आँखों को खोलने की कोशिश की। धीरे-धीरे और कठिनाई से वह चीजों को देखने लगा। या यों कहें कि सिर्फ एक झलक देख पाया, क्योंकि आँखें अपने आप बंद हो गईं । यान के अंदर मद्धिम रोशनी भी

उसकी आँखों को चौंधिया गई। 'आराम से बुढ़ऊ', उसने अपने आपको कोसा।

कुछ ही घंटों में वह बैठने लगा और उसने चारों ओर नजर दौड़ाई; पर ये चंद घंटे भी ऐसे लगे जैसे युगों के बराबर हों। उसके सहयात्री भी गहरी नींद में सो रहे थे। उसने उन्हें न जगाने का फैसला किया। उनमें से प्रत्येक उठने में और सामान्य अवस्था में आने में अपना वक्त लेगा।

अगले कुछ घंटों में उसने पट्टियाँ खोलकर अपने को आजाद किया और अंतरिक्ष यान के सूक्ष्म गुरुत्व में तैरने लगा। उसे कम तापमान पर जमाकर अंतरिक्ष यान के भीतर लाया गया। लेकिन उसे और उसके सहयात्रियों को फ्लाइट सिमुलेटरों और डमी मॉडलों में पर्याप्त प्रशिक्षण दिया गया था। ये तमाम चीजें उसे अब याद आने लगी थीं। अब उसे सचमुच याद आने लगा था कि यह सबकुछ इस तरह प्रोग्राम किया गया था कि वही सबसे पहले उठे और यान के नियंत्रणों को सँभाल ले, क्योंकि केवल उसी को जहाज उड़ाने का अनुभव था।

तन-मन पूरी तरह जाग्रत् होने पर वह मुख्य पायलट की सीट पर बैठ गया और तरह-तरह के मैन्युअल को पढ़ने लगा। लगभग चार घंटे के भीतर ही उसे सबकुछ याद आ गया कि मिशन की तैयारी के वक्त उसे क्या-क्या सिखाया-पढ़ाया गया था। और अब उसे पूरा आत्मविश्वास हो गया कि वह अंतरिक्ष यान को सँभाल सकता था। मार्ग का अध्ययन करने पर पता चला कि वे अभी पृथ्वी के निकट नहीं पहुँचे थे। अंतरिक्ष यान शनि ग्रह से चलकर बृहस्पति की कक्षा को पार कर चुका था और अब मंगल व पृथ्वी की कक्षाओं के बीच में कहीं था। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि यान बृहस्पति व मंगल के बीच क्षुद्र ग्रहों की पट्टी से सही-सलामत निकल आया था। कंप्यूटर तारीख बता रहा था 5 जून, 2110; पृथ्वी की कक्षा तक पहुँचने में यान को अभी दस दिन और लगने थे। वहाँ पहुँचकर भी यान पहले धरती के चक्कर काटता।

पहली बार भूख से उसकी आँतें कुलबुलाने लगीं। यह एक तरह से अच्छा संकेत था, जो बताता था कि उसके शरीर की क्रियाएँ तेजी से सामान्य हो रही थीं। यान के गलियारे में जमे हुए खाने के पैकेट रखे थे। उसने उनमें से एक पैकेट माइक्रोवेव ओवन में गरम किया और आराम से खाया।

दो दिन बीत गए थे और वह इस अकेलेपन का आदी हो चुका था। इस बीच कोई बड़ी घटना नहीं हुई। वह चाहने लगा था कि अपने साथियों की तरह दोबारा से जम जाए; लेकिन तभी एक घटना घटी।

रेडियो इंटरकॉम सिस्टम पर लाल रंग की नई बत्ती जल गई। यह सावधान करने का संकेत था। विलियम ने बटन दबाया और प्रणाली के स्पीकर से 'बीप-बीप' जैसे साफ सुनाई देनेवाले संकेत आने लगे। ट्यूनर घुमाकर उसने दूसरी वेवलेंग्थ पर संकेत प्राप्त करने की कोशिश की। लेकिन ज्यादातर वेवलेंग्थ पर कुछ सुनाई नहीं दिया। कुछ एक पर 'बीप-बीप' की आवाज ही आती रही। राडार भी, जिसे वह रह-रहकर देख रहा था, खाली पड़ा था।

तभी उसे एक उपाय सूझा। उसने उन बीप-बीप करनेवाली वेवलेंग्थ में से एक का चुनाव किया और अपने ट्रांसमीटर के जरिए समान संकेत भेजा। प्रतिक्रिया में उसे कुछ शब्द सुनाई दिए—

''अपनी पहचान बताओ, दोबारा अपनी पहचान बताओ। हमें अपने स्क्रीन पर तुम्हारा अंतरिक्ष यान दिखाई दे रहा है। तुम कहाँ से आ रहे हो?''

विलियम ने उत्तर दिया। अपने यान का रजिस्ट्रेशन नंबर बताया और पूछताछ करनेवाले को आश्वस्त किया कि वह भी मूलत: धरतीवासी ही है।

कुछ मिनटों की खामोशी के बाद दोबारा आवाज आई, ''हमारे डाटाबेस में आपके यान की कोई जानकारी नहीं है। इसमें सन् 2050 के बाद धरती से छोड़े गए सभी अंतरिक्ष यानों का रिकॉर्ड है। आपका यान कब छोड़ा गया था?''

विलियम ने अपने बारे में सारी जानकारी दी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि धरतीवासियों के पास सन् 2010 में छोड़े गए उनके अंतरिक्ष यान की जानकारी होगी भी या नहीं...जो सौ साल पहले छोड़ा गया था। पर उसे लंबा इंतजार नहीं करना पड़ा।

''हे भगवान्! हमारे बहुत पुराने रिकॉर्ड में असाधारण मिशनों के बीच हमें आपकी जानकारी मिली है। इन मिशनों को आधिकारिक तौर पर समाप्त घोषित नहीं किया गया था। हमारी याददाश्त बताती है कि आप कुल पाँच लोग हैं जो सौ साल की अंतरिक्ष यात्रा के बाद धरती पर लौट रहे हैं। हम आपका स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि आप सभी सकुशल होंगे। अपनी रफ्तार से आपको हमारी सीमा में आने के लिए कम-से-कम छह दिन और लगेंगे। यदि आपको मदद चाहिए तो हम चार घंटों में आप तक पहुँच सकते हैं।''

तो उनका अंतरिक्ष यान, जो सन् 2010 में अत्याधुनिक माना जाता था, आज 2110 में बैलगाड़ी बन गया है। उसने जवाब दिया, ''धन्यवाद! हम छह दिनों के बाद आपके बीच होंगे। मैं अपने साथियों के जागने का इंतजार कर रहा हूँ।''

जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की, उसे लगा कि कोई आवाज आई। उसने चारों ओर देखा—क्या कोई जम्हाई ले रहा था?

सचमुच सरदारजी भी धीरे-धीरे जाग रहे थे।

□

इस बीच एस.एस.वी. पर विलियम के मिशन से संबंधित तमाम रिकॉर्ड खोज निकाले गए। इस मिशन की तमाम जानकारियों को बड़ी सावधानी के साथ पिछले सौ वर्षों से बचाकर रखा हुआ था; इसमें अंतरिक्ष यान की संरचना, गति, नियंत्रण-प्रणालियाँ और तमाम छोटी-छोटी बातें भी दर्ज की गई थीं। यान में भेजे गए यात्रियों की भी पूरी जानकारी रिकॉर्ड में थी। इसलिए जब यान धरती पर पहुँचा तो एस.एस.वी. ने उसे पूरा मार्गदर्शन दिया और यान के सुरक्षित उतर जाने तक जरूरी निर्देश देते रहे। तब तक यान में पाँचों अंतरिक्ष यात्री पूरी तरह से जाग गए और चौकन्ने हो गए थे।

''शताब्दी के यात्रियो, आप सभी का स्वागत है!'' अंतरिक्ष स्टेशन पाँच पर कमांडेंट ने सभी का स्वागत किया। ''जिन लोगों ने आपको भेजा था, वह संगठन और उसका स्टाफ अब मौजूद नहीं है। आप लोगों के जाने के बाद से दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है। लोग भले ही बदल गए हों, लेकिन हमारा ग्रह पृथ्वी वैसी ही है। आप सौ साल पहले के सामूहिक ज्ञान के प्रतिनिधि हैं। हम इससे लाभ उठाने की उम्मीद करते हैं।''

''संयुक्त राष्ट्र का क्या हुआ?'' कार्टर पैटरसन ने पूछा। वह संयुक्त राष्ट्र ही था, जिसने उन्हें भेजा था।

''इक्कीसवीं सदी में यह संगठन ज्यादा लंबे समय तक नहीं टिक पाया। किसी विश्वयुद्ध के कारण इसका खात्मा नहीं हुआ, बल्कि राष्ट्रों के बीच छोटी-मोटी कलहों के कारण यह संगठन चल नहीं पाया। संयुक्त राष्ट्र ने मध्यस्थता के द्वारा शांति स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन ऐसे प्रयास खर्चीले साबित हुए और अंत में धन की कमी के कारण इसे अपना बोरिया-बिस्तर समेटना पड़ा।''

''संयुक्त राष्ट्र के बाद क्या इसकी जगह कोई और विश्व संगठन बनाया गया है?''

''नहीं, क्योंकि आज हमारी समस्याएँ अलग किस्म की हैं और इनसे निपटने के लिए दूसरे संगठन हैं। वे ठीक काम करते हैं या नहीं, यह आप खुद ही जान जाएँगे, जब हम आपको ठोस धरातल पर ले जाएँगे। धरती पर अमरीकी क्षेत्र आपका स्वागत करने जा रहा है।'' कमांडेंट ने कहा।

''अमरीका क्षेत्र से आपका क्या मतलब है?'' कार्टर ने पूछा।

कमांडेंट मुसकराया, जैसे उसे इसी प्रश्न की उम्मीद थी। उसने अपने सहायक को इशारा किया। तुरंत ही

एस.एस.वी. की वरदी में स्टाफ के पाँच सदस्य वहाँ पहुँच गए। उनके हाथों में टेपरिकॉर्डर जैसे उपकरण थे। कमांडेंट ने आगे बताया, ''ये और आपके मन में घुमड़नेवाले अन्य प्रश्नों के उत्तर खुद ही मिल जाएँगे, जब आधुनिक जानकारी आपको दी जाएगी। ये उपकरण ढेर सारी सूचनाएँ सीधे आपके दिमाग में भर देगा। जितनी देर में आप एक किताब पढ़ेंगे, उससे भी कम समय में तमाम सूचनाएँ आपको मिल जाएँगी। ये जानकारियाँ आधुनिक अंग्रेजी में हैं जो अब विश्वभाषा बन चुकी है। मैं वही भाषा बोल रहा हूँ और आप देखेंगे कि इसमें बहुत ज्यादा बदलाव नहीं आया है।''

''आपका मतलब है कि आजकल पुस्तकें नहीं होती हैं?'' तेंग ने पूछा।

''जी हाँ, पढ़ने-लिखने का पुराना तरीका लगभग खत्म हो चुका है। यह बहुत ही धीमा था और फिर इस बात की भी गारंटी नहीं होती थी कि आपने जो पूछा है वह पूरा-का-पूरा याद रहेगा। जिस इलेक्ट्रॉनिक विधि का मैंने अभी जिक्र किया है वह ज्यादा तेज और दक्ष है। हाँ, अगर आपको अभी भी पुस्तकों में दिलचस्पी हो तो आप उन्हें हमारी प्राचीन लाइब्रेरियों से ले सकते हैं....पर वे कम-से-कम बीस साल पुरानी होंगी।''

''सारी दुनिया में प्रसिद्ध हमारी लाइब्रेरियों का क्या हुआ? लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, लंदन की ब्रिटिश लाइब्रेरी, ऑक्सफोर्ड की बोडलियन लाइब्रेरी, मॉस्को लाइब्रेरी वगैरह-वगैरह?''

''जैसा मैंने बताया कि ये लाइब्रेरियाँ प्राचीन लेखागार हैं, बिलकुल संग्रहालयों की तरह। कुछ विद्वान् लोग वहाँ पर पुस्तकों का उपयोग करते हैं।''

□

स्पेस शटल तेजी से धरती की ओर बढ़ रहा था, हालाँकि उसके यात्रियों को इसकी गति का जरा भी एहसास नहीं हो रहा था। कोई मनुष्य इस शटल को नहीं उड़ा रहा था। सारे रास्ते शटल को एस.एस.वी. और धरती पर नियंत्रण स्टेशन द्वारा मिलकर दूर से ही नियंत्रित किया जा रहा था। इस शटल को कौन सी शक्ति चला रही है कि यह बिलकुल मक्खन की तरह चल रहा है और रॉकेटों की तरह हवा में प्रदूषण भी नहीं कर रहा है? तेंग ने सोचा और पाया कि इसका जवाब तो उसे पता है। क्या सभी जानकारियाँ उसके दिमाग में भर नहीं दी गईं? उसे सिर्फ यही करना है कि इस जानकारी को खँगालना है। उसने सवाल पर ध्यान केंद्रित किया—शटल को धकेलने के लिए शक्ति का स्रोत? ठीक उसी तरह जैसे सौ साल पहले वह किसी कंप्यूटर पर सर्च इंजन के साथ करता था।

जवाब हाजिर था! शक्ति का स्रोत सूर्य में था। उसे थर्मोडायनोमिक्स के नियम याद दिलाए गए कि किस तरह हीट इंजन ऊँचे तापमान से ऊष्मा ग्रहण कर और कम तापमान पर उसे छोड़कर काम कर सकते हैं। उन्नीसवीं सदी में कैल्विन कारनॉट जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शुरुआती परीक्षणों से साबित किया था कि किस तरह ऊष्मा का यांत्रिक उपयोग किया जा सकता है। ऐसे काम का मतलब यही था कि किसी इंजन से भरपूर काम लेने के लिए जरूरी है कि ऊष्मा का स्रोत ज्यादा-से-ज्यादा ऊँचे तापमान पर हो और सिंक, जहाँ पर ऊष्मा छुई जानी हो, ज्यादा-से-ज्यादा निम्न तापमान पर हो।

बीसवीं सदी में ही मनुष्य जान गया था कि सूर्य ही उसके लिए ऊष्मा का स्रोत है, केवल इस ऊष्मा का दहन करने का तरीका उसे मालूम नहीं था। 5,500 सेल्सियस तापमान पर दहकते पिंड से कैसे ऊष्मा का दोहन किया जाए और धरती पर उससे काम लिया जाए? सन् 2010 में तेंग को जवाब नहीं मालूम था। सन् 2110 में तेंग के दिमाग में इसका जवाब मौजूद था। लेकिन जैसे ही उसने दिमाग पर जोर डाला, उसका सिर दर्द से फटने लगा। शायद उसके दिमाग की दर्द की स्नायु इतनी सारी सूचनाओं का बोझ नहीं उठा पा रही थी। उसने धीमे-धीमे और सब्र के साथ काम लेने का फैसला किया।

सैन्य पृष्ठभूमिवाले दलजीत को यह जानने की उतावली हो रही थी कि अब विभिन्न देशों के पास किस तरह के

हथियार थे। इसका जवाब भी उसके दिमाग में पहले से ही अंकित हो चुका था। नाभिकीय हथियार अब पुराने जमाने के कबाड़ बन चुके थे। आधुनिक हथियार कहीं ज्यादा विनाशकारी थे। वे किसी भी चीज को क्षण मात्र में ही परमाणुओं में बदल डालते थे। अभी आपके सामने एक आदमी खड़ा है, अगले ही क्षण वह परमाणुओं में बदलकर अलग-अलग दिशाओं में बिखर जाएगा। पर ऐसे हथियारों पर कहीं ज्यादा कड़ा नियंत्रण था। इक्कीसवीं सदी में नाभिकीय हथियारों के मुकाबले कहीं ज्यादा कड़ा नियंत्रण। सबसे बड़ी बात यह कि इन हथियारों को ऊर्जा के स्रोत से जोड़े बिना चलाया नहीं जा सकता था और ऊर्जा के स्रोत पर किसी की मन-मरजी नहीं चलती थी, बल्कि कड़ाई से इसकी रखवाली की जाती थी।

इलया मोरोविच विश्व की राजनीतिक दशा पर स्वयं को आश्वस्त करने की कोशिश कर रहा था। वे अमरीका क्षेत्र की ओर बढ़ रहे थे। उसके मस्तिष्क बैंक ने बताया कि उसका क्या मतलब है। सारी दुनिया अब केवल चार क्षेत्रों में बँटी हुई थी। यानी अमरीका क्षेत्र में उत्तर और दक्षिण अमरीका दोनों महाद्वीप शामिल थे। क्षेत्र-दो यूरोप था, जिसमें रूस और साइबेरिया भी शामिल थे। क्षेत्र-तीन में शेष एशिया और ओशियानिया यानी ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड भी शामिल थे। क्षेत्र-चार अफ्रीका और अंटार्कटिक को मिलाकर बना था।

यह विभाजन पूरी तरह से आर्थिक आधार पर किया गया था। इसमें धर्म-जाति-नस्ल या इतिहास या किसी अन्य चीज का हाथ नहीं था।

प्रत्येक क्षेत्र बुनियादी तौर पर स्वतंत्र और अपने यहाँ उपलब्ध प्राकृतिक तथा मानव संसाधनों के बल पर प्रत्येक क्षेत्र में विकास कार्यों को चला सकता है और इस बीच ऊँचे जीवन स्तर को कायम रखा जाता। क्षेत्रों को दिए गए एक से चार तक अंक क्षेत्र के विकास के स्तर का संकेत भी देते थे। क्षेत्र-एक विकास की दृष्टि से सबसे ऊपर था। क्षेत्र-एक और दो अब पूरी तरह से सूर्य से ली गई ऊर्जा का उपयोग करते थे। क्षेत्र-तीन में आधी सौर ऊर्जा और आधी ऊर्जा जीवाश्म ईंधनों—कोयला, पेट्रोल, प्राकृतिक गैस आदि से ली जाती थी। क्षेत्र-चार में केवल 30 प्रतिशत सौर ऊर्जा और 70 प्रतिशत पारंपरिक ऊर्जा का उपयोग होता था। हालाँकि क्षेत्र-एक और दो में जीवन स्तर क्षेत्र-तीन और चार के मुकाबले ऊँचा था। फिर भी पिछली सदी के मुकाबले असमानता काफी हद तक घर कर गई थी। इसका कारण यह था कि क्षेत्र-तीन और चार में भी जनसंख्या नियंत्रण के लाभों को पूरी तरह समझ लिया गया था और जनसंख्या नियंत्रण के उपायों का कड़ाई से पालन कर रहे थे।

विलियम मॉनक्रीफ एस.एस.वी. से धरती तक अंतरिक्ष यान के मार्ग का परीक्षण कर रहा था। मार्ग में काले बिंदुओं से प्रदर्शित प्रतिबंधित क्षेत्रों ने उसका ध्यान उलझा रखा था। क्यों?

उसके मस्तिष्क में संचित सूचना बैंक में जवाब हाजिर था। उन क्षेत्रों में सौर ऊर्जा संचित करनेवाली इकाइयाँ लगी थीं। असल में वे इकाइयाँ बड़े-बड़े गोल शीशे की शक्ल में थीं, जो सूरज की किरणों को एक बिंदु पर केंद्रित करती थीं। जहाँ वे बहुत ही तेज गरमी पैदा करती थीं। विलियम को बचपन में खेले गए खेल याद आ गए, जिनमें वे लेंस से सूर्य की किरणों को केंद्रित कर कागज जलाया करते थे। 'तो अब अंतरिक्ष भी मानव के लिए क्रीड़ास्थल बन गया।' वह बड़बड़ाया।

कार्टर पैटरसन जानना चाहता था कि विज्ञान ने कितनी प्रगति की है, खासकर उसके क्षेत्र में जहाँ-जहाँ जीवविज्ञान में चल रहे प्रयोगों को अमरीकी कांग्रेस ने बंद करवा दिया था, बल्कि क्या पिछले सौ वर्षों में जीवविज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली थी कि वह परखनली में जीवन पैदा कर सके?

नहीं, अभी नहीं! लेकिन कार्टर ने पाया कि वैज्ञानिक अब जीवन की पहेली को सुलझाने के कगार पर थे। उन्हें भरोसा था कि इस पहेली को दस वर्षों के भीतर सुलझा लेंगे। इस बीच मानव शरीर के क्रिया-कलापों के बारे में

जानकारी इस हद तक बढ़ गई थी कि सभी बीमारियों की रोकथाम की जा सकती थी या उनका इलाज भी किया जा सकता था। दरअसल, कार्टर को पता लगा कि अंतिम किस्म के रहे-सहे कैंसर का भी पिछले साल नामोनिशान मिटा दिया गया था। लेकिन अब नई-नई समस्याएँ जीव वैज्ञानिकों को परेशान करने लगी थीं।

क्षेत्र-एक और दो में मनुष्यों की औसत आयु घटकर 55 साल रह गई थी तथा यह और कम होती जा रही थी। क्षेत्र-तीन और चार में औसत आयु अभी 65 साल थी, पर इसमें भी गिरावट आ रही थी। क्यों? जैसे कोई मशीन चलते-चलते अचानक रुक जाए वैसे ही मानव-जीवन भी एक दिन अचानक रुक जाएगा! क्यों? इसके साथ ही एक और चीज थी कि जन्म-दर में भी लगातार गिरावट आ रही थी। ऐसा लगता था कि मानव प्रजाति की प्रजनन क्षमता कम हो रही थी। क्यों?

अन्य प्रश्नों के उत्तर के विपरीत कार्टर के दिमाग में इन 'क्यों' का कोई जवाब नहीं था। लेकिन इन उपर्युक्त चीजों का एक नतीजा यह निकला कि दुनिया की आबादी तेजी से घट रही थी। सन् 2100 में आबादी घटकर 6 अरब रह गई थी। और अगले दस वर्षों में इसमें 4 प्रतिशत की और कमी आ गई। अगर ऐसा ही चलता रहा तो क्या बाईसवीं सदी के अंत तक धरती पर कोई इनसान बचेगा कि नहीं। कार्टर ने हैरानी से सोचा।

''सज्जनो, अब हम क्षेत्र-एक के लैंडिंग पैड पर पहुँच रहे हैं। वहाँ उस क्षेत्र के प्रमुख आपका स्वागत करने के लिए इंतजार कर रहे हैं।''

यह घोषणा सुनते ही पाँचों यात्री अपने खयालों और चिंता की दुनिया से बाहर आए। आखिरकार इस जगह पर उनकी सौ वर्ष लंबी यात्रा अंतिम मुकाम पर पहुँची।

□

''अगर आप मुझसे पूछें तो मैं सौ वर्ष पहले के जीवन का पक्ष लूँगा।'' दलजीत ने उत्साह में कहा। उन्हें धरती पर लौटे हुए करीब तीन महीने बीत चुके थे। इन तीन महीनों में वे धरती के चारों क्षेत्रों और अपने-अपने जन्मस्थानों की सैर कर चुके थे। अगले सप्ताह उनका चाँद की सैर का कार्यक्रम था। वहाँ उन्हें बस चुकी मानव बस्ती को देखना था।

उस सौ साल के मिशन के लिए उन पाँचों का चुनाव करने की एक कसौटी यह थी कि उनका कोई नजदीकी रिश्तेदार नहीं होना चाहिए था। उन्हें पूरी तरह अकेले होना चाहिए था। इस कसौटी के पीछे कारण केवल यही था कि जब वे सौ साल बाद वापस आएँ तो उन पर किसी भी प्रकार के रिश्ते-नातों की बंदिश न हो। और फिर सन् 2010 की तेज रफ्तार यांत्रिक जिंदगी के लिए घर-परिवार और रिश्ते-नातों की भावना अतीत की बात थी। जिंदगी का यह नया ढर्रा दलजीत को परेशान कर रहा था।

''हम सभी इस सोच के आदी होते हैं कि जिस परिवेश में हमारा लालन-पालन होता है हम उसी को सर्वश्रेष्ठ मान लेते हैं। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं और अपने आस-पास बदलाव होते देखते हैं, हम असहज और परेशान होने लगते हैं।'' कार्टर ने कहा।

''एक तरह से मैं दलजीत से सहमत हूँ।'' विलियम ने कहा।

''आज हम चारों ओर संपन्नता का वातावरण देखते हैं। कोई बेरोजगारी नहीं, कोई गरीबी नहीं, कोई अपराध नहीं, कोई झगड़ा-फसाद नहीं। मगर आदमी फिर भी सुखी और संतुष्ट नजर नहीं आता।''

''बिलकुल! मनोरंजन के अनेक साधनों, ढेर सारा खाली समय होने तथा घूमने-फिरने के अनेक मौकों की उपलब्धता के बावजूद लोगों को चैन नहीं, सबके सब बेचैन लगते हैं।'' इलया ने कहा।

तेंग ने अपनी समझदारी दिखाई—''तथाकथित अच्छे पुराने दिनों में आदमी को आरामदेह जीवन जीने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता था, विपरीत परिस्थितियों से पार पाना पड़ता

था; इससे वह व्यस्त रहता था और जरा सी कामयाबी उसे ढेर सारी खुशी और संतोष देती थी। इन चुनौतियों को हटा दो, जिंदगी को आसान और साधारण बना दो तो तुम्हें बोरियत के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।''

''यहाँ आधुनिक कन्फ्यूशियस का ज्ञान बोल रहा है।'' कार्टर ने कहा, ''आज मानवजाति की आबादी क्यों सिमट रही है? वैज्ञानिक कारण जानने को परेशान हैं। पर मैं जो समझता हूँ वह कुछ ऐसा है—जिंदा रहने की सहज वृत्ति लगभग समाप्त हो गई है। तब क्यों भला हमारी प्रजाति जीवित रहेगी! आमतौर पर प्राकृतिक ताकतें विद्यमान जीवन के लिए चुनौतियाँ पेश करती हैं और उसकी सहायता भी करती हैं। आज जीवन इतना यांत्रिक बन चुका है कि इसमें प्रकृति के लिए कोई भूमिका नहीं बची है।''

''लेकिन मुझे तो एक और खतरा नजर आता है और अगर शीघ्र कोई काररवाई नहीं की गई तो यह खतरा जानलेवा हो सकता है।'' विलियम ने हैरानी से अपनी ओर ताकते हुए साथियों को देखकर कहा, ''क्षेत्र-एक और दो पूरी तरह सौर ऊर्जा पर चलते हैं।'' उनके तमाम ऊर्जा स्रोत अंतरिक्ष में हैं। कल्पना करो कि अगर किसी कारण से ये स्रोत गुम हो जाएँ तो? आपको याद होगा कि हमारे जमाने में ऊँची इमारतों में रहनेवाले लोग बिजली पर निर्भर थे। जब कभी बिजली जाती थी तो न केवल चारों ओर ब्लैक आउट हो जाता था, बल्कि लोग लिफ्टों में फँस जाते थे। उनके रखे हुए खाद्य बरबाद हो जाते थे, कंप्यूटर काम करना बंद कर देते थे...मैं लंबे समय के पावर कट की बात कर रहा हूँ। आज तो हालात और भी खराब हैं।''

''किस तरह से?'' दलजीत ने पूछा।

''सोचो कि अगर दुर्घटना या तोड़-फोड़ के कारण सभी सौर ऊर्जा स्टेशन काम करना बंद कर दें तो क्षेत्र-एक व दो में इस ऊर्जा से चलनेवाली तमाम जिंदगी थम जाएगी। यहाँ तक कि बिजलीघरों की मरम्मत करनेवाली मशीनें भी काम नहीं करेंगी, क्योंकि वे भी सौर ऊर्जा से चलती हैं।''

तेंग ने बीच में ही टोका, ''विलियम, मैं सोचता हूँ कि दुर्घटना या तोड़-फोड़ से एक या दो पावर स्टेशन नष्ट हो सकते हैं या खराब हो सकते हैं, लेकिन यह कहना कुछ ज्यादती होगी कि सभी एक साथ बेकार कर दिए जाएँगे।''

''मैं मानता हूँ, पर एक संभावना है जो अब भी इस कहर को बरपा सकती है, जिसके बारे में मैं सोच रहा हूँ। यह संभावना लड़ाई की है—विश्वयुद्ध।''

''विलियम को जो डर है उसकी संभावना क्षीण भले ही हो, पर पूरी तरह असंभव नहीं है।'' दलजीत ने दखल दिया, ''मैंने वर्तमान दशा पर इस कोण से गौर किया है। हालाँकि चारों ओर अमन-चैन है, लेकिन सभी क्षेत्रों में विनाशक हथियारों के जखीरे मौजूद हैं, जो हमारी पूरी सभ्यता का सफाया कर सकते हैं। अगर यह मान भी लें कि वे इन हथियारों का इस्तेमाल नहीं करते हैं तो भी एक-दूसरे के ऊर्जा स्रोतों को नष्ट करने की संभावना तो है ही, जैसा विलियम ने बताया। इससे सभी क्षेत्रों में भारी भगदड़ मच जाएगी; क्योंकि ऐसा कोई आक्रमण केवल अंतरिक्ष में मौजूद सौर ऊर्जा-गृहों तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि धरती पर मौजूद पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों को भी तबाह कर देगा।''

इलया ने अपना सिर हिलाया—''नहीं दोस्तो! मैं इससे सहमत नहीं हूँ। ऐसा कोई खतरा नहीं है! सभी क्षेत्रों के बीच दोस्ताना संबंध हैं। उनके बीच किसी प्रकार के विवाद भी नहीं हैं। व्यापारिक संबंध भी बेहतरीन हैं, इसलिए किसी विश्वयुद्ध के छिड़ने की संभावना शून्य है।''

इलया का मानना ठीक था, पर उसने जो नतीजा निकाला था वह गलत साबित हुआ—भयानक रूप से गलत।

□

तीन महीने और बीत गए। वे पाँचों नए वातावरण में रम गए थे और सामान्य जिंदगी जीने लगे थे। इसके बावजूद वे अपने जीवन में बीत चुकी एक सदी के बारे में सचेत थे। इसी एक सदी के अंतर ने उन्हें इस वर्तमान हालत में

ला पटका था। विलियम ने क्षेत्र-एक में बसना पसंद किया। इलया ने क्षेत्र-दो चुना। दलजीत और तेंग क्षेत्र-तीन के अपने पुराने शहरों में रहने लगे, जबकि कार्टर ने क्षेत्र-चार के दक्षिण अफ्रीका में अपना घर बनाया। इन दूरियों के बावजूद वे सप्ताह में एक बार आपस में मिलते थे और विभिन्न मसलों पर चर्चा करते थे। हाइपरसोनिक जहाजों में वे केवल चार घंटों में ही आधी धरती नाप लेते थे।

लेकिन एक दिन विलियम अचानक ही दलजीत के घर आ धमका। वह बहुत चिंतित लग रहा था। इससे पहले कि दलजीत कुछ कह पाता, उसने बोलना शुरू कर दिया, ''दलजीत, मैंने क्षेत्र-एक में सौर ऊर्जा स्टेशनों का गहराई से परीक्षण किया है, इससे मेरी चिंता बढ़ गई है। जैसा कि तुम जानते हो, ये सौर ऊर्जा स्टेशन धरती के चारों ओर छितराए हुए हैं, जिससे कि हर वक्त किसी एक स्टेशन पर सीधी धूप पड़ती रहे। इस तरह के 24 केंद्र हैं।

''ऐसा प्रत्येक केंद्र अपने क्षेत्र में छोटे-छोटे ऊर्जा वितरकों को नियंत्रित करता है। ऐसे अनेक ऊर्जा वितरक हैं, पर वे सभी पूरी तरह से अपने नियंत्रण के केंद्र पर निर्भर हैं। अगर नियंत्रक खराब हो जाए तो वे सभी काम करना बंद कर देंगे।''

''क्या ये सभी 24 ऊर्जा केंद्र स्वतंत्र हैं?'' दलजीत ने पूछा।

''नहीं, वे सभी धरती पर प्रत्येक क्षेत्र में लगे 4 मास्टर कंप्यूटरों के नियंत्रण में हैं। प्रत्येक क्षेत्र में एक-एक मास्टर कंप्यूटर लगा है। अगर कोई केंद्र खराब होता है तो उस पर नियंत्रण करनेवाले मास्टर कंप्यूटर को पता लगाना होता है कि केंद्र क्यों खराब हुआ। यह पता लगाने के बाद उसे ठीक करने का काम किया जाता है। जब तक कि वह केंद्र दोबारा पूरी ऊर्जा का उत्पादन न करने लगे, बाकी केंद्रों को अपनी उत्पादकता बढ़ाकर इस कमी को पूरा करना पड़ता है।'' विलियम ने बताया।

''मेरे मन में दो सवाल हैं।'' दलजीत ने कहा।

''जल्दी से पूछो!''

''पहला सवाल तो यह है कि अन्य केंद्रों को कितनी देर तक ज्यादा काम करना पड़ता है?''

''एक घंटे से ज्यादा नहीं। खराबी को दूर करने में इतना ही वक्त लगता है।''

''एक घंटे में एक केंद्र अँधेरे में चला जाता है, जबकि दूसरा प्रकाश में आ जाता है।'' दलजीत ने अपनी बातों पर जोर देते हुए कहा, ''मान लो, अगर ज्यादा काम करनेवाला कोई दूसरा केंद्र अँधेरे में चला जाए तो क्या इससे कार्य-संतुलन का अनुपात बिगड़ नहीं जाएगा?''

''सिद्धांतत: ऐसा ही होगा; परंतु व्यावहारिक तौर पर ऐसा नहीं होता, क्योंकि किसी भी खराबी को मिनटों में ही दूर कर लिया जाता है।'' विलियम ने उसे आश्वस्त किया।

''इसी पर मेरा दूसरा सवाल है। मान लो कि कंप्यूटर खुद खराबी का पता न लगा सके तो क्या होगा?''

''जब मैंने खुद कंप्यूटर की देखभाल करनेवाले वैज्ञानिकों और तकनीशियनों से यही सवाल पूछा तो वे सब जोर-जोर से हँसने लगे। उन्हें पूरा भरोसा है कि किसी महाविपदा को छोड़कर ऐसी नौबत कभी नहीं आएगी, क्योंकि कंप्यूटर ऊर्जा केंद्रों के एक-एक नट-बोल्ट से अच्छी तरह परिचित है। वह महाविपदा, जिसे तुम आखिरी रास्ता कह सकते हो, तभी आ सकती है जब कोई शत्रु जानबूझकर केंद्र में तोड़-फोड़ करे या उसे नष्ट कर दे। अगर ऐसा होता है तो उस दौरान की जानेवाली कारवाई की रूपरेखा भी तैयार है, जो अपने आप में हैरान करनेवाली है।''

दलजीत के हैरान-परेशान चेहरे को देख विलियम ने अपनी बात का खुलासा किया, ''प्रत्येक क्षेत्र खुद एक कंप्यूटर द्वारा चलाया जाता है। मान लो कि किसी ऊर्जा केंद्र में तोड़-फोड़ हो जाए और उससे क्षेत्र-एक पर सबसे ज्यादा असर पड़े। सोचो कि इसे बाकी तीन क्षेत्रों द्वारा निशान बनाया गया। इसके बदले में क्षेत्र-एक बाकी तीनों

क्षेत्रों के मास्टर कंप्यूटरों को बेकार कर देगा। इस तरह सभी मास्टर कंप्यूटर आक्रमण में नष्ट होने से पहले ही हमलावर को नष्ट करने की काररवाई शुरू कर सकता है।''

''तो इस तरह अंत में आज की तरह चलनेवाला जीवन चरमराकर रुक जाएगा। क्या यह हमारे अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा नहीं है?'' दलजीत ने पूछा। उसके मन में सौ साल पहले परमाणु आक्रमणों के खतरे से जुड़े तर्क-वितर्क उमड़ रहे थे।

''हाँ, और यहाँ खतरा सबसे ताकतवर अंकुश भी साबित होता है, क्योंकि प्रत्येक मास्टर कंप्यूटर में एक बिल्ट-इन लॉजिक भी है जो जीवन को सबसे ज्यादा महत्त्व देता है। यह जानकर कि दूसरे मास्टर कंप्यूटरों पर हमला करते ही जवाबी हमला होगा और खुद की तबाही भी निश्चित है, कोई मास्टर कंप्यूटर इस तरह का खतरनाक कदम उठाने की इजाजत नहीं देगा।'' विलियम ने उत्तर दिया।

''जब तक कि कोई पहले कंप्यूटर के लॉजिक में जान-बूझकर गड़बड़ी पैदा न कर दे!'' दलजीत ने कहा, ''यही संभावना परेशान करनेवाली है।''

''इस संभावना को टालने के लिए सभी सावधानियाँ बरती गई हैं।'' विलियम ने जवाब दिया, ''लेकिन तुम्हारी तरह मैं भी पिछली सदी से आया हूँ और तुम्हारी तरह मैं भी नहीं चाहता कि कंप्यूटर प्रबंधन पर इस हद तक निर्भर रहा जाए। क्षेत्र-एक के वैज्ञानिकों के सामने मैंने अपनी यह आशंका जाहिर की थी; पर उन्होंने मेरा मजाक उड़ाया। उन्होंने मुझे सौ साल पहले के पुराने फैशनवाले दिनों का आदमी और न जाने क्या-क्या कहा।''

''सच्चाई यह है कि आज का आदमी, जिसके दिमाग पर आज की त्रुटिहीन तकनीकी का परदा पड़ा हो, वह हमारी आशंकाओं पर ऐसी ही प्रतिक्रिया देगा।'' दलजीत ने सहमति जताई, ''लेकिन अगर कुछ किया जाना है तो केवल हम जैसे पुराने जमाने के लोगों द्वारा ही हो सकता है।''

''तुम्हारा क्या मतलब है?'' विलियम ने पूछा।

''मेरे पास एक तरकीब है, जिसे मैं केवल हम पाँचों के बीच ही बाँटना चाहता हूँ।'' दाएँ हाथ से दाढ़ी सहलाते हुए दलजीत ने कहा। यह इस बात का संकेत था कि वह बेहद उत्साहित हो रहा था—''मैं मानता हूँ कि इलया का तकनीकी दिमाग इस तरकीब को लागू करने में मदद करेगा।''

सन् 2110 में मुंबई महानगर कोलाबा से विरार और कल्याण तक फैल चुका था; लेकिन इसकी कुल आबादी 30 लाख से ज्यादा नहीं थी। सौ साल पहले की भीड़-भाड़, लोगों से ठसाठस भरी बसें और ट्रेनें, पुरानी जर्जर इमारतें और बदहाल झुग्गी-बस्तियाँ बीते समय की बातें हो गई थीं। आज यातायात के लिए जमीन के नीचे तेज रफ्तारवाली मोनो रेल चलने लगी थीं। ये रेलें बेआवाज चलती थीं। इनके चलने पर कोई कंपन नहीं होता था और इन्हें चलाने के लिए किसी ड्राइवर की जरूरत भी नहीं होती थी। कंप्यूटर से चलनेवाला पहला रेलमार्ग सन् 2070 में बन चुका था। अब कोई इसे नई चीज नहीं मानता था। इससे जुड़े स्टेशनों के ऊपर छोटी-छोटी बस्तियाँ बसाई गई थीं। पूरे महानगर में सौ स्टेशन थे। प्रत्येक स्टेशन के आस-पास करीब 30 हजार लोग रहते थे।

ये बस्तियाँ भी आपस में सड़कों द्वारा जुड़ी हुई थीं। पर इन सड़कों पर कोई कार नहीं दौड़ती थी। सौर ऊर्जा से अपने आप और नियमित रूप से चलनेवाली बसें सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध कराती थीं। एक ही टिकट पर जमीन के ऊपर और जमीन के नीचे सफर किया जा सकता था।

लोगों को बहुत ज्यादा सफर करनेकी जरूरत भी नहीं पड़ती थी। लगभग सभी लोग घर में ही काम करते थे। उन्हें दफ्तर जाने की जरूरत नहीं थी। बच्चों को फोटोनिक संचार के माध्यम से घर में ही पढ़ाया-लिखाया जाता था। इसलिए लोग सिर्फ मनोरंजन, पार्टियों और सैर-सपाटे के लिए ही सफर करते थे।

दलजीत सिंह और चियांग तेंग अपने हवाई जहाज से उतरे और उरन से उन्होंने कोलाबा के लिए भूमिगत ट्रेन पकड़ी। पंद्रह मिनट बाद वे हॉलिडे कैंप स्टेशन पर उतरे और एस्केलेटर की ओर बढ़ गए। दशकों पहले यह क्षेत्र नौसेना की पश्चिमी कमान का हिस्सा था और केवल गिने-चुने लोग ही इसमें प्रवेश कर सकते थे। आज भी कुछ क्षेत्रों को 'ऊँची सुरक्षा' वाले स्थान के रूप में अलग कर दिया गया था।

उस दिशा में कोई बस नहीं जाती थी, हालाँकि एक सड़क जरूर जाती दिख रही थी। दलजीत और तेंग ने उस सड़क पर चलना शुरू कर दिया। पूरी सड़क सुनसान थी।

''मुझे कुछ अजीब सा भ्रम महसूस हो रहा है।'' सरदारजी ने कहा, ''मैं यहाँ पर बनी दो मंजिली इमारतों के एक फ्लैट में कुछ महीने रहा हूँ।'' पर अब वहाँ कोई इमारत नहीं दिख रही थी, केवल खाली मैदान और कुछ पेड़ ही थे।

''यहाँ पर तो एक प्रसिद्ध संस्थान हुआ करता था, जहाँ वैज्ञानिकों से कुछ संपर्क रहता था।'' तेंग ने याद किया।

''द टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च।'' दलजीत ने उत्तर दिया।

''मैं खुद वहाँ कभी नहीं गया। लेकिन हमारे रिकॉर्डों में इस संस्थान की पूरी जानकारी दर्ज थी।''

दलजीत के चेहरे पर मुसकान खिल गई। बरबस ही उसे सौ साल पहले एशिया के इन दो पड़ोसी मुल्कों के बीच प्यार और तकरार भरे रिश्तों की याद आ गई। 'हिंदी-चीनी, भाई-भाई', वह बड़बड़ाया। अब चीजें कितनी बदल गई थीं! राष्ट्रीय सीमाएँ कब की खत्म हो चुकी थीं। उनके साथ विवाद भरे अनेक मसले भी समाप्त हो चुके थे।

''टी.आई.एफ.आर. अब नहीं है।'' दलजीत ने कहा।

''हालाँकि हम उसी ओर बढ़ रहे हैं जहाँ वह था।''

असल में वे उस कंप्यूटर की ओर बढ़ रहे थे जो उस जगह पर लगाया गया था। उत्साह और उत्तेजना की दबी-दबी सी भावना उनमें उमड़ रही थी। तेंग ने पूछा, ''तो हमें यहाँ भी वही करना है जो हमने शंघाई में किया था?''

''हाँ!'' दलजीत ने कहा, ''मुंबई में हम वही करेंगे जो हमने शंघाई में किया।''

एक बार में एक मोरचे पर लड़ाई।

□

कोई कंप्यूटर भले ही कितना भी तेज-तर्रार क्यों न हो, आखिर में तो वह आँख-कान मूँदकर निर्देशों का पालन करता ही है। बीसवीं सदी में आदमी इस बात को जानता था, क्योंकि आखिरकार उसी ने इस मशीन को जन्म जो दिया था। पंच टेप से लेकर पाँच कार्डों और फिर की-बोर्ड के द्वारा निर्देशों के साथ उसने मशीन के काम करने की गति बढ़ाई और उसकी मेमोरी में बढ़ोतरी की। प्रगति का तात्पर्य था कम-से-कम जगह घेरनेवाले ज्यादा शक्तिशाली कंप्यूटर। इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में हथेली में समाने लायक कंप्यूटर भी पचास साल पहले के पुराने कंप्यूटरों से ज्यादा शक्तिशाली थे, जो बड़े-बड़े कमरों को घेर लेते थे।

जैसे-जैसे कंप्यूटरों की ताकत बढ़ती गई वैसे-वैसे इनसान उन पर ज्यादा-से-ज्यादा निर्भर होता गया। अंत में वह अवस्था आ गई जब कंप्यूटर को काम बताने के बजाय आदमी खुद कंप्यूटर का हुक्म मानने लगा।

जिम्मेदारी की अदला-बदली की एक प्रतीकात्मक घटना तब घटी जब दुनिया का चोटी का शतरंज खिलाड़ी शतरंज के मुकाबलों की एक श्रृंखला में कंप्यूटर से हार गया।

इक्कीसवीं सदी में ही इनसान ने सोच-समझकर फैसले करने के बजाय कंप्यूटरों के सामने पूरा समर्पण कर दिया। आदमी इस बुनियादी सच्चाई को भी भूल गया कि कंप्यूटर केवल उन्हीं विकल्पों में से चुनाव करता है जो आदमी उसमें पहले से ही भर देता है। अगर इसकी मेमोरी में दस विकल्प हैं तो हालात के अनुसार वह उनमें से ही सबसे अच्छे विकल्प का चुनाव करेगा, कभी भी ग्यारहवें विकल्प पर गौर नहीं करेगा, क्योंकि यह उसकी मेमोरी में

है ही नहीं।

अब मनुष्य इसी सच्चाई के भयानक नतीजों से गुजरने जा रहा था।

□

15 जून, 2111 को सूर्य की सतह पर मामूली सा बदलाव आ गया। सूर्य पर ऊर्जा पैदा करनेवाला ताप नाभिकीय रिएक्टर सूर्य के भीतर गहराई में दबा हुआ है, जहाँ हाइड्रोजन के परमाणु आपस में मिलकर हीलियम का निर्माण करते हैं। यह प्रक्रिया लगातार स्थिर रूप से चलती है। लेकिन ऊपरी परतों में भारी उथल-पुथल मची रहती है। इनके कारण सूर्य की सतह पर परिवर्तन होते रहते हैं, जिनसे हमारे खगोल शास्त्री व खगोलविद् अच्छी तरह से परिचित हैं। गरम प्लाज्मा में तूफान आना और चुंबकीय क्षेत्र में बदलाव ऐसे प्रभावों के लिए उत्तरदायी हैं। जैसेकि माना जाता है कि शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र के कारण उफनते प्लाज्मा के दबने से सूर्य की सतह पर धब्बे दिखाई देते हैं। सूर्य पर ऊँची-ऊँची लपटें भी उठती रहती हैं और यह विद्युतीय रूप से आवेशित कणों की आँधी भी छोड़ता रहता है। इन्हीं परिवर्तनों में से कुछ धरती पर भी प्रभाव डालते हैं। पर ये प्रभाव ज्यादा नहीं होते, क्योंकि धरती के चारों ओर का वातावरण इसकी रक्षा करता है।

लेकिन आदमी द्वारा बनाए गए सौर ऊर्जा केंद्र वातावरण से ऊपर निर्वात में स्थित थे।

सूर्य की सतह पर आनेवाले बदलाव सौर मानकों के हिसाब से सामान्य ही थे और केवल कुछ मिनटों तक ही चले। लेकिन इससे ही बहुत विशाल लपट पैदा हुई और अचानक ही जोरदार सौर आँधी चल पड़ी।

इस आँधी से आवेशित कणों की जो बरसात हुई, उससे क्षेत्र-एक और दो में दो सौर ऊर्जा केंद्र नाकाम हो गए। नतीजा? उनके मास्टर कंप्यूटर एकाएक हरकत में आ गए। अपने आप ही वे इन नाकामियों का पता लगाने में जुट गए। उन्होंने उन तमाम विकल्पों को खँगाल डाला, जिनके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया गया था। दुर्भाग्य से उन विकल्पों में ऐसी तेज सौर आँधी शामिल नहीं थी। क्योंकि कंप्यूटरों की प्रोग्रामिंग करनेवाले किसी भी शख्स ने उन पर गौर ही नहीं किया था।

क्षेत्र-एक के कंप्यूटर ने नतीजा निकाला—किसी कमी के कारण सौर ऊर्जा केंद्र खराब हुआ है। यह उसका आखिरी विकल्प था। इसलिए जवाबी काररवाई करते हुए उसने क्षेत्र-दो, तीन, चार के मास्टर कंप्यूटरों को बंद कर दिया। ऐन उसी वक्त क्षेत्र-दो का मास्टर कंप्यूटर भी इसी नतीजे पर पहुँचा कि जरूर कोई तोड़-फोड़ हुई है और उसने भी जवाबी काररवाई करते हुए क्षेत्र-एक, तीन और चार के कंप्यूटरों को बंद कर दिया।

नतीजा यह हुआ कि सारे-के-सारे सौर ऊर्जा केंद्र ठप पड़ गए। क्षेत्र-एक और दो में तो पूरी तरह अराजकता छा गई, जबकि क्षेत्र-तीन और चार में जीवाश्म ईंधनों से चलनेवाले बिजलीघर काम कर रहे थे, लेकिन वहाँ भी बिजली की भारी कमी पड़ गई। थोड़ी ही देर में ऊर्जा की बढ़ती माँग के कारण इन बिजलीघरों को भी बंद करना पड़ा।

क्षेत्र-तीन का मास्टर कंप्यूटर दिल्ली में लगा था। जब यह बंद हुआ तो उस क्षेत्र में बीजिंग, सिडनी, बैंकॉक आदि शहरों में लगे स्थानीय कंप्यूटर भी बंद हो गए जो दिल्ली के मास्टर कंप्यूटर के नियंत्रण में थे। लेकिन दो अपवाद भी थे! शंघाई और मुंबई में लगे कंप्यूटर अब भी काम कर रहे थे। कुछ रहस्यमय कारणों से उनका दिल्ली के नियंत्रण से संपर्क अलग हो गया था। इसलिए दक्षिणी चीन और दक्षिणी भारत में बिजलीघर काम करते रहे।

क्षेत्र-चार में भी कंप्यूटरों के साथ ऐसा ही हुआ। प्रिटोरिया में लगे मास्टर कंप्यूटर के अधीन केवल दो कंप्यूटरों को छोड़कर बाकी सारे कंप्यूटरों ने काम करना बंद कर दिया। वहाँ पर काहिरा और मोंबासा में लगे कंप्यूटर काम करते रहे।

हैरान-परेशान वैज्ञानिक और तकनीशियन पता लगाने की कोशिश करते रहे कि ऐसा क्यों हुआ? इसी बीच मुंबई के टेलीविजन केंद्र ने घोषणा की कि 17 जून, 2111 को ग्रीनविच समय के अनुसार ठीक 12 बजे एक महत्त्वपूर्ण

समाचार बुलेटिन प्रसारित किया जाएगा। इस बुलेटिन को देखने-सुनने के लिए सारी दुनिया में थोड़ी देर के लिए बिजली की आपूर्ति बहाल की जाएगी।

प्रत्येक यह जानने के लिए आतुर था कि इस बुलेटिन में क्या बताया जाएगा।

□

ठीक 12 बजे टेलीविजन पर समाचार शुरू हुए। परदे पर एक गोल मेज के चारों ओर बैठे पाँच आदमी दर्शकों से रू-बरू हुए। उन्होंने अपना-अपना परिचय दिया—दलजीत सिंह, विलियम मॉनक्रीफ, कार्टर पैटरसन, इलया मोरोविच और चियांग तेंग। पाँचों की तरफ से विलियम ने बोलना शुरू किया—

''हम सभी बीसवीं सदी के अंतिम दौर में इस धरती पर जनमे थे। सन् 2010 में हम एक अनोखे परीक्षण में शामिल हुए। हमें बहुत ही कम तापमान पर जमाकर अंतरिक्ष में भेजा गया था। वहाँ हमें सौ साल तक सोना था। उस दौरान हम या यों कहें कि हमारा अंतरिक्ष यान शनि के चक्कर काटता रहा। अभी पिछले साल ही हम सकुशल धरती पर लौटे हैं—पूरे सौ साल बाद! हम वापस तो आ गए, पर हमारे कोई पुराने रिश्ते-नाते इस धरती पर नहीं बचे थे। हमें नए सिरे से जीवन शुरू करना पड़ा।

''आप लोगों ने घर वापसी पर हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और हमारी अच्छी देखभाल की, इसके लिए हम आपका हृदय से धन्यवाद करते हैं। हम आपको बदले में कुछ देना चाहते थे और धरती पर बनी वर्तमान दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ने हमें आपके अहसानों का बदला चुकाने का एक मौका दिया है।

''अब मैं आपकी इजाजत चाहूँगा और एक कार्यक्रम का प्रसारण शुरू करूँगा, जो हम पाँचों ने आपके लिए रिकॉर्ड किया है। कार्यक्रम खत्म होने पर प्रसारण बंद हो जाएगा। एक बार फिर आपको हमारी शुभकामनाएँ और कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद।''

उसके बाद रिकॉर्ड किया गया कार्यक्रम शुरू हुआ। सबसे पहले परदे पर दलजीत सिंह प्रकट हुआ। उदास और गंभीर मुद्रा में उसने बोलना शुरू किया—

''मित्रो, मैं नहीं जानता कि कब इस कार्यक्रम को दिखाने लायक हालात पैदा होंगे। शायद तब तक हम पाँचों में से कोई भी जीवित न बचे। शायद ऐसी नौबत कभी न आए। बेशक तब हम सभी बहुत खुश होंगे; लेकिन रिकॉर्ड की खातिर आज के कार्यक्रम की तारीख है—1 जनवरी, 2111।

''जैसा कि आप जानते हैं कि हम बीसवीं सदी में पैदा हुए थे। हमारे माँ-बाप के जीवनकाल में विज्ञान और तकनीकी में तीव्र विकास हुआ था। अगले सौ वर्षों में विज्ञान और तकनीकी किस तरह विकास करेंगे, यह हम सभी जानने को उत्सुक थे...लेकिन हमारी पीढ़ी में से केवल हमें ही यह सौभाग्य मिला कि हम लंबे समय तक जीवित रहे और उस विकास को देखा। हमें बर्फ की तरह जमा दिया गया और दूर अंतरिक्ष में अलग-थलग भिजवा दिया गया। हमारी शारीरिक क्रियाएँ अत्यधिक मंद हो गईं। हम खुशकिस्मत थे कि सौ साल लंबी नींद के बावजूद हम जीवित रहे।

''पर हमने क्या देखा और जो परिवर्तन हमने देखे उन पर हमारी कैसी प्रतिक्रिया रही, यह मेरे मित्र कार्टर पैटरसन आपको बताएँगे।''

''धन्यवाद, दलजीत!'' कार्टर ने बोलना शुरू किया।

''मैं विस्तार में नहीं जाऊँगा, लेकिन एक खास पहलू को जरूर उजागर करूँगा। वह पहलू है स्वचालन पर निर्भरता का। बीसवीं सदी में ऊँचे स्वचालन की ओर लोगों का रुझान बढ़ा, लेकिन आखिरी नियंत्रण हमेशा आदमी के हाथों में रहा। ऐसा आभास होता है कि इक्कीसवीं सदी के दौरान आदमी ने अपने ज्यादातर अधिकार मशीनों को सौंप दिए हैं। अपनी जवानी के दिनों में ही हम देख सकते थे कि फैसले का अधिकार भी कंप्यूटरों को सौंपा जा रहा

था।

‘‘ऐसा लगता है कि पिछले सौ वर्षों के दौरान अपने आप चलनेवाले उपकरणों ने फैसला करने की प्रक्रिया को हथिया लिया था। इसके अपने लाभ थे—मनुष्य तो कभी-कभी असंगत, अकुशल और पूर्वग्रहों से ग्रस्त होकर फैसले ले सकता है; लेकिन कंप्यूटर तेज और वस्तुनिष्ठ फैसले ही लेंगे। हम इनसानों ने कंप्यूटरों में विश्वास जताया है तो बदले में कंप्यूटरों ने भी हमारे जीवन को सँवारा है। रोज-रोज की ज्यादातर समस्याओं को सुलझाने के साथ-साथ इस ग्रह को और ज्यादा बसने लायक बनाया है।

‘‘लेकिन हम जो पिछली सदी से आए थे, मशीनों पर इतनी ज्यादा निर्भरता देखकर हमें परेशानी होने लगी। हमने आज के दौर के अपने वैज्ञानिक मित्रों से अपनी आशंकाओं पर चर्चा भी की थी। दूसरे क्षेत्रों के बुद्धिजीवियों के साथ भी अपने विचारों का आदान-प्रदान किया था, लेकिन हमारा मजाक ही उड़ाया गया। फिर भी हम एक पहलू के बारे में शंकाएँ महसूस करते रहे। अब आगे चियांग तेंग बताएँगे।’’

कार्टर ने जहाँ छोड़ा था वहाँ से चियांग तेंग ने बोलना शुरू किया। कार्टर की भावनात्मक शैली के विपरीत चियांग साधारण लहजे में बोल रहा था, ‘‘किसी सभ्यता के विकास को अकसर इस पैमाने से नापा जाता कि वह सभ्यता कितनी ऊर्जा की खपत करती है। सन् 2110 में 2011 के मुकाबले आदमी सौ गुना ज्यादा ऊर्जा की खपत करता है। इस उन्नति का एक कारण यह था कि सौर ऊर्जा तक हमारी पहुँच बढ़ गई थी। ऊर्जा-भंडारण और ऊर्जा-उत्पादन का विकास को आगे बढ़ाने में प्रमुख योगदान है। और आज के स्वचालित युग में इन मसलों को पूरी तरह कंप्यूटरों पर छोड़ दिया गया। आज विनाशकारी हथियारों को इस्तेमाल करने के बजाय लड़ाई में शत्रु के ऊर्जा स्रोत पर हमला कर उसे बंद करने का फैसला लिया जाता है, लेकिन इस तरीके से हमला करने का फैसला भी कंप्यूटर पर छोड़ दिया गया। संक्षेप में, इस नाजुक क्षेत्र में भी आदमी ने अपनी जिम्मेदारी से हाथ झाड़ लिये।’’

‘‘यही वह पहलू है जिसके बारे में हम चिंतित थे। सच है कि आदमी गलतियाँ तो करता है, लेकिन क्या कंप्यूटरों को भी गलत फैसला लेने के लिए गुमराह नहीं किया जा सकता? कंप्यूटर विभिन्न विकल्पों को उलट-पलटकर और सबसे अच्छा विकल्प चुनकर फैसला करते हैं, जो परिस्थिति के वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के बाद उसमें भरे जाते हैं। इन विकल्पों को कंप्यूटर के मेमोरी बैंक में भरना पड़ता है अगर कोई अनदेखा विकल्प छूट जाए तो कंप्यूटर अपनी ओर से स्वयं उस पर कभी गौर नहीं करेगा, बल्कि अपनी जानकारी के आधार पर ही फैसला लेगा और यहीं पर कंप्यूटर गलती कर सकता है।

‘‘हमारी आशंकाएँ सामान्य किस्म की थीं, क्योंकि हमें ऐसी कोई सूरत नहीं दिखाई पड़ रही थी जो कंप्यूटरों को गलत फैसला लेने के लिए मजबूर कर दे। लेकिन हमने महसूस किया कि ऊर्जा केंद्रों में कोई ऐसी सटीक प्रणाली होनी चाहिए जो खतरे की झूठी आशंका में केंद्र को बंद होने से रोक सके। सन् 2110 में आदमी ने इसकी जरूरत महसूस नहीं की थी, इसलिए हमने अपनी तरफ से काम करने की ठानी। ऐसा हमने कैसे किया, इसके बारे में बताएँगे—इलया मोरोविच।’’

कैमरा घूमकर इलया मोरोविच के मुसकराते चेहरे पर ठहर गया। इलया ने बोलना शुरू किया, ‘‘ऊर्जा केंद्रों की आपकी वर्तमान प्रणाली इस तरह से डिजाइन की गई है कि किसी दुर्लभ किस्म की विपदा आने पर धरती पर लगी सौर ऊर्जा उत्पन्न करने वाली सारी प्रणाली एकाएक ठप हो जाए। उस दुर्लभ तबाही के तौर पर क्षेत्रों के बीच बड़ी लड़ाई को देखा गया था। अगर एक ऊर्जा केंद्र पर हमला किया जाए या तोड़-फोड़ हो तो उसके बंद होने पर उसका मास्टर कंप्यूटर अन्य क्षेत्रों के मास्टर कंप्यूटरों पर हमला कर उन्हें बंद कर देगा। वे मास्टर कंप्यूटर भी हमलावर को बंद कर देंगे। समूची धरती का विनाश करनेवाली लड़ाई को रोकने के लिए तो यह प्रणाली

संतोषजनक हो सकती है, पर इसमें विपदा के अन्य विकल्पों को अनदेखा कर दिया गया। यह अनदेखा विकल्प धरती पर, सूर्य पर या सौरमंडल में घटनेवाली प्राकृतिक घटना के रूप में हो सकता था। जैसे—अगर कोई उल्का पिंड या उपग्रह इन ऊर्जा केंद्रों से टकरा जाए या सूर्य की गतिविधि अचानक बढ़ जाए तो? तो हमने महसूस किया कि कभी भी विफल न रहनेवाली इस प्रणाली को दुरुस्त करने की जरूरत है, ताकि यह अनदेखे विकल्प को भी ध्यान में रख सके।

''क्या हम इसे इस तरह बदल सकते थे कि कम-से-कम कुछ ऊर्जा स्रोत तो इस तरह के आक्रमण में न आ सकें? क्षेत्र-एक और दो के तमाम ऊर्जा स्रोत अंतरिक्ष में थे। क्षेत्र-तीन और चार में ही कुछ बिजलीघर नाभिकीय रिएक्टरों सहित जीवाश्म ईंधनों से जमीन पर चल रहे थे। हालाँकि वे सब भी कंप्यूटरों के नियंत्रण में थे, लेकिन जमीन पर चलनेवाले बिजलीघरों में हमें संभावना नजर आई कि उनमें से कुछ को कंप्यूटर नियंत्रण से अलग किया जा सकता था। इसमें धोखाधड़ी कर कंप्यूटर को सिर्फ यही विश्वास दिलाना था कि वही तमाम बिजलीघरों का नियंत्रण कर रहा है। मैं सोचता हूँ कि आज भी इनसान का दिमाग किसी भी कंप्यूटर से तेज दौड़ सकता है, भले ही कंप्यूटर कितना भी ताकतवर क्यों न हो! इसलिए चियांग और दलजीत ने क्षेत्र-तीन में मुंबई और शंघाई में बिजलीघरों को अलग किया; जबकि कार्टर, विलियम और मैंने क्षेत्र-चार में काहिरा और मोंबासा में ऐसा ही किया। अब आगे क्या हुआ, विलियम बताएँगे।''

नपी-तुली आवाज में विलियम मॉनक्रीफ ने बोलना शुरू किया, ''हमने जोखिम उठाया और सुरक्षा नियमों को तोड़ा। लेकिन हमारा उद्देश्य है—वर्तमान सभ्यता को ऊर्जा की पूरी कमी से उत्पन्न अराजकता से बचाना। हमारे कारण ऐसी विश्वव्यापी तबाही में जो बचत होगी वह सन् 2011 में आमतौर पर जरूरी कुल ऊर्जा का .3-4 प्रतिशत भाग उपलब्ध कराने के लिए अपर्याप्त है। लेकिन इस नाममात्र की ऊर्जा का भी युक्तिपूर्ण उपयोग कर आदमी शेष ऊर्जा को भी सक्रिय कर सकता है। इसमें समय लगेगा और धैर्य की भी जरूरत होगी; लेकिन ऐसा किया जा सकता है।

''अब आप जानते हैं कि जिस दौरान यह कार्यक्रम दिखाया जा रहा है, केवल चार बिजलीघर ही क्यों काम कर रहे हैं? हम इन्हें बचा सके, क्योंकि वे धरती पर आधारित थे और स्वचालन के नियंत्रण को तोड़ना आसान था। लेकिन अगर पूर्ण स्वचालन के वर्तमान सिलसिले को अगले कुछ दशकों तक चालू रखा गया तो तमाम ऊर्जा उत्पादन अंतरिक्ष में होने लगेगा। यह तो गनीमत है कि धरती पर हमारी वापसी आज से बीस साल बाद नहीं हुई।

''इस टेप को मुंबई टेलीविजन केंद्र में गोपनीय रूप से छिपाकर रखा जा रहा है, इस शर्त के साथ कि इसे संकट की ऐसी घड़ी में दिखाने के लिए जारी किया जाएगा जो आज आपके सामने खड़ी है। हमारा मजाक उड़ाया जा सकता है कि हम आज के समय से सौ साल पीछे हैं; पर हमारा मानना है कि हम अपने साथ सौ साल पहले की सहज वृत्ति या समझदारी लेकर आए हैं, जो हमें बताती है कि जरूरत से ज्यादा स्वचालन पर निर्भरता खतरों से भरी है।

''संकट की यह घड़ी टल जाने के पश्चात् अगर आदमी अपनी किस्मत पर ज्यादा नियंत्रण करना सीख जाए, ताकि ऐसी मुसीबतों की पुनरावृत्ति रोकी जा सके, तो हम मानेंगे कि जम जाने की अवस्था में हमारा जीवित रहना सार्थक हुआ। अलविदा!''

❑

9

धरती का घोड़ा

जैकसन के कंट्रोल पैनल पर लगा लाल रंग का बटन अचानक जगमगा उठा। साथ ही 'बीप-बीप' का तीखा शोर भी होने लगा। एस.एस.-6 में आपातकालीन परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर चेतावनी देने के लिए यह दोहरी सावधानी बरती गई थी।

जैकसन उन चार अंतरिक्ष-प्रेक्षकों (ए.ओ.) में से एक था जो धरती का चक्कर काट रहे स्पेस-सेंसर पर तैनात थे। अंतरिक्ष-प्रेक्षकों की जिम्मेदारी थी कि वे धरती के चारों ओर अंतरिक्ष पर लगातार नजर रखें और कुछ भी अनोखा या असाधारण घटने पर पृथ्वी पर स्थित नियंत्रण-कक्ष को रिपोर्ट भेजें। प्रत्येक अंतरिक्ष-प्रेक्षक को एक बार में लगातार साढ़े छह घंटे तक ड्यूटी बजानी होती। जैकसन की ड्यूटी के अंतिम आधे घंटे में अगला अंतरिक्ष-प्रेक्षक भी उससे आ मिलेगा, ताकि निगरानी की निरंतरता बनी रहे। इस क्रम में अंतरिक्ष-प्रेक्षक अपने विवेक के अनुसार फेर-बदल कर सकते थे, बशर्ते कि असाधारण परिस्थितियों के कारण ऐसा करना जरूरी हो।

तो क्या आज चमक रही लाल बत्ती और बीप-बीप की आवाज किसी अनहोनी घटना का संकेत दे रही थी? असल में इन संकेतों का काम ही था— धरती के आस-पड़ोस में किसी बाहरी चीज की उपस्थिति के बारे में चेतावनी देना।

सन् 2050 में धरती के चारों ओर हजारों की तादाद में अंतरिक्ष यान चक्कर काट रहे थे। उनमें से ज्यादातर के बारे में स्पेस-सेंसरों के कंप्यूटर अभिलेखागारों में सूचनाएँ दर्ज थीं। अगर कोई ऐसा अंतरिक्ष यान भूले-भटके वहाँ आ जाता, जिसकी जानकारी अभिलेखागार में दर्ज न हो तो चेतावनी सिग्नल अपने आप सक्रिय हो जाता। अतीत में कभी-कभार ऐसा हुआ भी था, लेकिन उसका कारण बताना आसान था। अनेक राष्ट्र गोपनीय मिशनों पर अंतरिक्ष यान उड़ाते थे और उनके बारे में स्पेस सेंसरों की जानकारी देने से मना कर देते थे। मगर ऐसे अंतरिक्ष यानों के बारे में भी एक अधिकृत रजिस्टर संयुक्त अंतरिक्ष महासंघ के विशालकाय कंप्यूटर में रखा जाता था। यह महासंघ विश्व स्तर की संस्था थी और धरती के चारों ओर अंतरिक्ष पर अंतत: इसी का नियंत्रण था।

चेतावनी के संकेत मिलते ही जैकसन ने पूर्वनिर्धारित कार्रवाई की। उसने तुरंत संयुक्त अंतरिक्ष महासंघ के कंप्यूटर को बाहरी अंतरिक्ष यान की स्थिति बताते हुए एक संदेश भेजा। अगर वह कंप्यूटर अपने वर्गीकृत रजिस्टर में दर्ज आँकड़ों से उस वस्तु को पहचान लेता तो जैकसन के कंट्रोल पैनल पर सक्रिय खतरे के संकेत अपने आप खामोश हो जाते और आगे किसी काररवाई की जरूरत नहीं रहती। और अगर ऐसा नहीं हुआ...हालाँकि पहले ऐसी नौबत कभी नहीं आई थी, तब संयुक्त अंतरिक्ष महासंघ के पास बाहरी यान को नष्ट करने का विकल्प भी था।

पर इस बार संकेत आने बंद नहीं हुए। उसके बजाय संयुक्त अंतरिक्ष महासंघ से आया एक संदेश जैकसन के सामने टलीविजन के परदे पर उभरा—'यह एक यू.एफ.ओ. (अनजानी उड़न वस्तु) है। अगले निर्देशों का इंतजार करें।'

और यह अनहोनी घटना की शुरुआत थी।

□

संदेश पढ़ते ही जैकसन ने सबसे पहले झटपट अपने साथियों गुप्ता और तकेनो को आवाज देकर बुलाया, जो जाग रहे थे। चौथा अंतरिक्ष-प्रेक्षक नागोविच अभी भी गहरी नींद में सो रहा था।

जैकसन ने उन दोनों को ताजा घटनाक्रम के बारे में बताया और कहा, ''संयुक्त अंतरिक्ष महासंघ इस यू.एफ.ओ. को पहचानने के लिए सभी मुल्कों से मशविरा कर रहा है। अगर वे नाकाम रहते हैं तो...''

''तो हमें इस यू.एफ.ओ. को नष्ट करना पड़ेगा, वह चाहे जो हो।'' गुप्ता ने एकदम भड़ककर कहा। आखिरकार कुछ देर बाद उसी की ड्यूटी शुरू होनेवाली थी।

''हमें कुछ देर इंतजार कर देखना चाहिए।'' तकेनो ने कहा, जो कभी भी अपना आपा नहीं खोता था।

□

संयुक्त अंतरिक्ष महासंघ में केवल ऊँचे ओहदों पर विराजमान कुछ गिने-चुने लोगों को ही जैकसन के संदेश से उठे तूफान की जानकारी थी। कुछ मिनटों के भीतर ही सभी देशों के अंतरिक्ष प्रतिनिधि एक बेहद संवेदनशील मसले पर चर्चा करने के लिए इकट्ठे हो गए। बैठक में पूर्ण गोपनीयता भी बरतनी थी।

''मित्रो, मैं आपको एक अभूतपूर्व घटनाक्रम के बारे में बताने जा रहा हूँ।'' चेयरमैन ने एक पल भी गँवाए बिना सीधे मुद्दे की बात शुरू कर दी।

''एस.एस.-6 ने अपने पड़ोस में एक यू.एफ.ओ. के भीतर मौजूद होने की खबर भेजी है। किसी भी देश ने अभी तक इसकी जिम्मेदारी नहीं ली है। बाईस साल पहले जब अधिकृत रजिस्टर शुरू किया गया था, तब से ऐसा कभी नहीं हुआ। हमें फैसला करना है कि इस परिस्थिति से जल्द-से-जल्द कैसे निबटा जाए।''

''क्या हम यू.एफ.ओ. की कक्षा और वर्तमान स्थिति के बारे में जान सकते हैं?'' एक प्रतिनिधि ने पूछा।

''एस.एस.-6 की खबर के अनुसार यह अभी मंगल और पृथ्वी की कक्षाओं के बीच में है और सीधे हमारी ओर बढ़ रहा है। मैं अभी इसकी कक्षा और परिधियों को आपके टेलीविजन के परदे पर दिखाने की व्यवस्था करता हूँ।'' अपने कंप्यूटर पर कुछ बटन दबाते हुए चेयरमैन ने कहा।

अभी सभी प्रतिनिधि आँकड़ों को जाँचने में ही लगे थे कि एक वैज्ञानिक की आवाज उभरी—''मेरा अंदाजा है कि कल तक यह अंतरिक्ष यान चंद्रमा की कक्षा पार कर जाएगा और कुछ दिन बाद एस.एस.-6 के निकट होगा।''

''कितना सही अंदाजा है डॉ. सिंह।'' चेयरमैन ने कहा, जो उनसे बहुत ही प्रभावित था। कंप्यूटर के जमाने में गुणा-भाग करने के लिए दिमाग बहुत कम ही खपाया जाता था। ऐसे लोग भी दुर्लभ थे। अगर डॉ. सिंह सौ साल पहले हुए होते तो सारी दुनिया उनका लोहा मानती। पर आज तेजी से गुणा-भाग करनेवाला उनका दिमाग और चीजों को तुरंत भाँपनेवाला उनका मन उनके सहकर्मियों के बीच ईर्ष्या का कारण बन गए थे। हर बार वही काररवाई करने के लिए सुझाव देता था।

''हमारे सामने दो विकल्प हैं। पहला विकल्प बहुत ही आसान और सीधा-सपाट है—यू.एफ.ओ. को नष्ट कर दो और उसे भूल जाओ; लेकिन मेरे अंदर का वैज्ञानिक इस काररवाई के खिलाफ है। मैं तो यह जानना चाहूँगा कि यह यू.एफ.ओ. आया किधर से है और इसमें क्या है? इसे अभी नष्ट कर दें तो हम ये बातें कभी नहीं जान पाएँगे। इसलिए मेरी सलाह है कि हम इसे निकट से देखें। अगर यह बाहरी अंतरिक्ष से आया है तो यह वहाँ के बारे में ढेर सारी जानकारी देगा।'' सिंह ने कहा।

''लेकिन पे्रक्षण करने में, वह भी निकट से प्रेक्षण करने में, तो खतरा-ही-खतरा है।'' ज्यादातर प्रतिनिधियों के मन में उठ रही शंका को चेयरमैन ने शब्दों में बयान किया।

''लेकिन अगर हमें तरक्की करनी है तो खतरे उठाने ही पड़ेंगे। आखिरकार हम इनसानों ने सुनियोजित तरीके से खतरे उठा-उठाकर ही तो इतनी तरक्की की है। किसी भी तरह हम दूरसंवेदी तकनीकों द्वारा यू.एफ.ओ. की तसवीरें लेने की कोशिश तो कर ही सकते हैं!''

डॉ. सिंह के सुझाव को आर्ट जुमिनो ने तुरंत अपना समर्थन दे डाला, जो स्पेस-सेंसरों का इंचार्ज था। आर्ट

जानता था कि एस.एस. शृंखला पर तैनात क्रू के सदस्य कुछ दु:साहसी किस्म के थे और वे इस अवसर का उपयोग सिर्फ प्रेक्षण करने के बजाय कुछ साहसिक करतब करने में लगाएँगे।

सुझाव के अनुसार एस.एस.-6 को निर्देश जारी करते हुए कि यू.एफ.ओ. की, जिसे अब से 'एक्स' कहा जाएगा, सिर्फ तसवीरें ले।

□

''गुप्ता, तुम खुशकिस्मत हो! हम तो केवल देखते रहे, पर तुम्हें कुछ करने का मौका मिल गया...। हम तो केवल हमेशा के लिए देखते ही रहे।'' जैकसन बोला, जिसे गुप्ता से ईर्ष्या हो रही थी कि यह रोमांचक काम करने का मौका उसे ही मिला।

''यह तो सब मौके-मौके की बात है, प्यारे! ऐसा इसलिए हुआ कि मेरी ड्यूटी शुरू होते ही फरमान आ गया।'' तसवीरें लेने की तैयारी करते हुए गुप्ता ने कहा। उसने स्पेस कैप्सूल में आवश्यक उपकरण तैनात किए, दो दिनों के लिए भोजन-पानी रखा और आत्मरक्षा के लिए कुछ हथियार भी ले लिये।

''फिर मिलेंगे मित्रो, प्यारे-प्यारे अंतरिक्ष जीवों की तसवीरों के साथ!'' कैप्सूल में घुसते हुए गुप्ता ने कहा। वहीं तकेनो ने एस.एस.-6 की कमान सँभाल ली।

अंतरिक्ष में एक-एक हफ्ते तक की छोटी-मोटी उड़ानों के लिए स्पेस कैप्सूल एकदम अनुकूल था। यह तेजी से उड़ता था, लेकिन ईंधन की कम खपत करता था। इसका मिनी कंप्यूटर कमाल का था और उसने कैप्सूल को तुरंत उसी रास्ते पर डाल दिया जिसे गुप्ता चाहता था। 'एक्स' के साथ 18 घंटे बाद मिलन होने वाला था, उससे पहले गुप्ता अपनी आठ घंटे की नींद पूरी कर लेना चाहता था।

जैसे ही 'एक्स' उसके टी.वी. स्क्रीन पर प्रकट हुआ, गुप्ता ने अपने कैप्सूल की कक्षा में जरूरी बदलाव किए। एक किलोमीटर की दूरी पर उसने अपना रास्ता बदला और 'एक्स' के चक्कर लगाने लगा, जो अब भी लगातार पृथ्वी की ओर बढ़ रहा था। संयुक्त महासंघ के मानकों के हिसाब से 'एक्स' एक छोटा सा अंतरिक्ष यान था और बाबा आदम के जमाने का प्रतीत हो रहा था। एक बार तो गुप्ता को लगा कि उसने इस यान को पहले भी कभी देखा है; लेकिन कब और कहाँ, उसे याद नहीं आ रहा था। फिर जल्द ही अपने इस खयाल को उसने हँसी में उड़ा दिया और अपने फोटोग्राफी के उपकरण सँभाल लिये।

□

''क्या अजीब संयोग है!'' डॉ. सिंह ने गुप्ता द्वारा भेजी गई तसवीरों को देखते हुए कहा, ''क्या आप लोग इस अंतरिक्ष यान को पहचान सकते हैं?'' उसने पूछा। अपने साथियों के हैरान-परेशान चेहरों पर नजर दौड़ाते हुए उसने आगे कहा, ''आजकल के नौजवानों को इतिहास की कोई जानकारी नहीं! वरना आप सब इतने आश्चर्यचकित नहीं होते। मित्रो, मैं आपकी शंका को दूर कर दूँ। यह अंतरिक्ष यान हमारी अपनी धरती पर बनाया गया था। इसका नाम था पायोनियर-10। यदि मुझे ठीक से याद आ रहा है तो इसे धरती से वर्ष 1972 में छोड़ा गया था। और आज यह वापस आ रहा है हमारे सौरमंडल से भी परे जाकर।''

''इसे क्यों भेजा गया था?'' एक सहकर्मी ने पूछा।

''सागर की ऊँची-ऊँची लहरों के बीच जब कोई खो जाता है तो वह संदेश लिखकर बोतल में बंद कर अथाह महासागर में छोड़ देता है—इस धुँधली सी उम्मीद में कि शायद किसी दिन कोई इस बोतल को पा लेगा और संदेश को पढ़कर उसे ढूँढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचेगा। इसी इरादे के साथ हमारे पूर्वजों ने धरती के बारे में और इसके तमाम जीव-जंतुओं के बारे में सभी सूचनाओं को एक पट्टी पर अंकित कर और उन्हें पायोनियर-10 में बंद कर अथाह अंतरिक्ष में रवाना कर दिया था।'' डॉक्टर ने उत्तर दिया।

फिर डॉ. सिंह ने अपने कंप्यूटर पर कुछ बटन दबाए। उसकी स्क्रीन पर पायोनियर-10 में बंद पट्टी उभर आई। उसने आगे बोलना जारी रखा, ''देखिए, यहाँ मैंने अपने अंतरिक्ष अभिलेखागार से वह ऐतिहासिक तसवीर निकाल ली है। इसमें देखिए कि सूचनाओं को कूटबद्ध करने के लिए द्विअंकीय गणित का इस्तेमाल किया गया है। लंबाइयों को इक्कीस सेंटीमीटर वेवलेंग्थवाली इकाइयों में विनिर्देशित किया गया है—रेडियो तरंगों की यही वेवलेंग्थ समूची आकाशगंगा में पाई जाती है। दिशाओं को जाने-पहचाने तरंगों द्वारा दिखाया गया है, जो अपनी आवृत्तियों से पहचाने जाते हैं। आपके सामने गणित, भौतिकी और खगोलशास्त्र की सार्वभौमिक भाषा इस रूप में है जिसे बाहरी अंतरिक्ष में कोई भी बुद्धिमान जीव आसानी से समझ ले।''

''जीव विज्ञान को मत भूलिए, डॉ. सिंह!'' एक नौजवान आदमी ने पट्टी पर खुदी स्त्री-पुरुष की नग्न तसवीरों की ओर शरारत भरे अंदाज में इशारा करते हुए कहा।

उसकी बात को अनसुना कर डॉ. सिंह ने परदे पर पायोनियर-10 अंतरिक्ष यान की तसवीरें दिखाते हुए कहा, ''आप जैसे मंद बुद्धि लोग भी देख सकते हैं। गुप्ता द्वारा भेजी गई तसवीरें इन तसवीरों से कितना मेल खाती हैं।''

बैठक में एकदम खामोशी छा गई। डॉ. सिंह की बात से हर कोई सकते में आ गया। फिर तभी किसी ने वह सवाल पूछने का साहस किया जो सभी के मन में उठ रहा था—''लेकिन अगर पायोनियर-10 को धरती पर लौटने के लिए प्रोग्राम नहीं किया गया था तो फिर यह कैसे लौट रहा है?''

''मित्रो, मैं अपनी गलती सुधार लूँ। पायोनियर-10 को वापस लौटते देखकर मैंने 'संयोग' शब्द का प्रयोग किया था। अलबत्ता यह केवल 'संयोग' नहीं है कि इस अंतरिक्ष यान ने दिशा बदलकर वापस धरती का रास्ता पकड़ लिया। ऐसी घटना की बेहद कम संभावना होती है। इतनी कम कि इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। इसलिए हमें केवल दूसरे विकल्प को स्वीकार कर लेना चाहिए। हालाँकि यह भी कपोल-कल्पना से कम नहीं है। मित्रो, अब मैं यह दूसरा विकल्प पेश करता हूँ।

''पायोनियर-10 वापस आ रहा है, क्योंकि इसका रास्ता रोक लिया गया और वापस भेज दिया गया। जिन जीवों ने इसे पाया, उन्होंने इसमें मौजूद तमाम सूचनाओं को डीकोड किया और इसे अपनी खोज के सबूत के तौर पर वापस भेज दिया। देखिए, हमारी एक्सरे तसवीरें यान के भीतरी भाग को दरशा रही हैं। इसमें कुछ भी खतरनाक नहीं है। मेरा अनुमान है कि बाहरी दुनिया के उन बाशिंदों ने इसे हमारे पास ज्यों-का-त्यों वापस भेज दिया है।''

''लेकिन क्यों?''

''यह जरूर उनका मजाक होना चाहिए। अब आप लोग इस सबूत की छानबीन कीजिए, मैं तो चला सोने।''

डॉ. सिंह ने जम्हाई ली। वह पिछले चौबीस घंटे में जरा भी नहीं सोया था।

□

ठीक चार घंटे बाद डॉ. सिंह की नींद खुल गई। अभी वह अपने कार्यालय जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि उनका दस वर्षीय बेटा सनी वहाँ आ धमका।

''पापा, लकड़ी का घोड़ा क्या होता है? मैंने एक कहानी में इसके बारे में पढ़ा था; पर मुझे इसका मतलब समझ नहीं आया।''

''यह बहुत लंबी कहानी है, बेटे! मैं तुम्हें बाद में फुरसत में सुनाऊँगा। संक्षेप में कहूँ तो यह कहानी ट्रॉय शहर पर यूनानी सैनिकों द्वारा घेरेबंदी से संबद्घ है। यूनानी सेना कई लड़ाइयों के बाद भी शहर में नहीं घुस पा रही थी। इसलिए उन्होंने एक चाल चली। वे खुद तो वापस चले गए, लेकिन शहर के प्रवेश द्वार पर बड़ा सा लकड़ी का एक घोड़ा छोड़ गए। ट्रॉयवासी उस घोड़े को शहर के भीतर खींच ले आए। उन्हें शक भी नहीं हुआ कि उस घोड़े के अंदर यूनानी सैनिक छिपे हो सकते हैं और इस तरह यूनानी सैनिकों ने ट्रॉय पर कब्जा कर लिया।''

''तो यानी कि लकड़ी का घोड़ा दुश्मनों के ठिकाने में घुसने का बढ़िया जरिया है कि किसी को भनक भी न लगे।'' सनी ने कहा।
''बिलकुल ठीक, सनी। अब मुझे भागना चाहिए, पूरी कहानी बाद में।'' जैसे ही डॉ. सिंह दफ्तर के लिए रवाना हुए, एक विचार उन्हें परेशान करने लगा।

□

दूसरी आपातकालीन बैठक के लिए सभी प्रतिनिधि जमा हो चुके थे, तभी डॉ. सिंह धड़धड़ाते हुए अंदर घुसे।
''बधाई हो, डॉ. सिंह! आपको लाख-लाख धन्यवाद। हम पायोनियर-10 को एकदम साबुत दोबारा से प्राप्त कर सकेंगे। अगर आपने सुझाव न दिया होता तो हम इस ऐतिहासिक अंतरिक्ष यान को नष्ट कर चुके होते। अब हम चर्चा कर रहे हैं कि इसे धरती पर कैसे लाया जाए। यह अवसर तो जश्न मनाने का है।'' चेयरमैन सचमुच जश्न मनाने के मूड में था, लेकिन उसने गौर किया कि डॉ. सिंह कुछ कहना चाह रहे हैं।
''श्रीमान, मैं आभारी हूँ कि आपने मेरे पहले सुझाव पर ध्यान दिया। अगर आप अब भी मेरी सलाह पर ध्यान दें तो मैं और ज्यादा आभारी होऊँगा। इससे पहले कि हम इस अंतरिक्ष यान का स्वागत करें, इसे गले लगाएँ, यह जरूरी है कि इस यान की पूरी तरह जाँच-पड़ताल कर लें कि यह सचमुच में मित्रों द्वारा भेजा गया है और इसमें कुछ भी खतरनाक नहीं है।'' डॉ. सिंह ने कहा।
''लेकिन हमने आपके सुझाव के अनुसार इसकी ढेर सारी तसवीरें निकालीं। अगर अब भी आपको कुछ शक है तो हम कुछ और तसवीरें निकाल सकते हैं, गुप्ता अभी अंतरिक्ष यान के निकट है।'' चेयरमैन की बात में फिर व्यवधान पड़ गया।
''नहीं श्रीमान, नए परीक्षणों की जरूरत नहीं। क्योंकि वक्त तेजी से बीत रहा है, इसलिए मैंने खुद स्वतंत्रतापूर्वक तकेनो को एस.एस.-6 से नए मिशन पर रवाना कर दिया। वह इलेक्ट्रॉन किरणों का इस्तेमाल कर यान की तसवीरें लेगा।''
''लेकिन इस तसवीर से हमें क्या पता चलेगा? हम पहले ही विद्युत् चुंबकीय तरंगें इस्तेमाल कर चुके हैं, जो कहीं ज्यादा संवेदनशील होती हैं।'' एक प्रतिनिधि ने ऐतराज जताया।
''इन दोनों तकनीकों के बीच एक पूरी दुनिया का अंतर है। अपने नए परीक्षणों से हम जल्द ही जान जाएँगे कि यह अंतरिक्ष यान वाकई पायोनियर-10 है या...''
''या? यह और क्या हो सकता है?'' हैरान प्रतिनिधि ने पूछा।
''यह 'लकड़ी का घोड़ा' हो सकता है।'' डॉ. सिंह मुसकराए। प्रतिनिधियों के हक्के-बक्के चेहरों को देखकर उन्होंने अंदाजा लगाया कि उनमें से किसी ने प्राचीन यूनानी कथाएँ नहीं पढ़ी हैं। पर उन्होंने उन्हें और ज्यादा जानकारी न देने का फैसला किया। वे सभी कहानी सुनने का इंतजार करते रहे।
तभी चेयरमैन के सामने रखा टेलीफोन घनघना उठा। चेयरमैन ने फोन उठाकर उत्सुकतापूर्वक कुछ सुना और रिसीवर रखकर घोषणा की, ''देवियो और सज्जनो, फोन तकेनो का था। उसका कहना है कि इलेक्ट्रॉन पुंज से ली गई तसवीरें एकदम खाली आई हैं।''
सभी प्रतिनिधियों ने डॉ. सिंह की ओर देखा।
''बिलकुल सही, जिसकी मुझे आशंका थी!'' डॉ. सिंह अपने उत्साह को दबा नहीं पाए—''मित्रो, यह कोई असली पायोनियर-10 नहीं है, बल्कि यह असली यान की प्रतिकृति है, जो प्रतिपदार्थ (एंटीमैटर) से बनी है। विद्युत् चुंबकीय तरंगों को पदार्थ और प्रतिपदार्थ एक जैसे लगते हैं। और इसीलिए पहले ली गई तसवीरों से हम यही मान बैठे कि

पायोनियर-10 वापस हमारे बीच लौट आया है। लेकिन इलेक्ट्रॉन किरणों ने एकदम खाली स्थान दिखाया, क्योंकि उन्हें अंतरिक्ष यान से टकराने या उसके निकट भी पहुँचने से रोक दिया गया। क्यों? क्योंकि यान के चारों ओर शायद चुंबकीय क्षमता से युक्त कवच है, जो यान को पदार्थ के संपर्क में आने से बचाता है। क्यों? क्योंकि अंतरिक्ष यान प्रतिपदार्थ का बना हुआ है।''

''प्रतिपदार्थ!'' सभास्थल के कोने-कोने से यही शब्द गूँजने लगा।

''वह तो हमारे लिए बहुत ही घातक होगा।'' चेयरमैन ने कहा।

❑

10

एक विदेशी भुजा

''टिल्लू, तुम्हें कितनी बार कहा गया है कि उस तरफ मत जाया करो!''

''लेकिन फिर पापा उस तरफ रोजाना क्यों जाते हैं?''

''क्योंकि यह उनका काम है, टिल्लू!''

उस तरफ एक भूमिगत गलियारा था। टिल्लू के पापा रोजाना उस गलियारे से होकर अपने काम पर जाते थे और रोजाना उसी दिशा से वापस भी आते थे। उस रास्ते के अंत में क्या है, जिस पर जाने की भी मनाही है? यह जानने की जिज्ञासा न केवल टिल्लू को थी बल्कि उनकी बस्ती के बहुत से अन्य लोगों को भी थी। टिल्लू के पापा उन गिने-चुने लोगों में से थे जिन्हें उस रास्ते से गुजरने की अनुमति थी। और जब कभी टिल्लू अपने पापा के पीछे-पीछे जाने की जिद करता तो उसकी अपनी मम्मी के साथ इस तरह की नोक-झोंक अकसर हो जाया करती थी।

पर आज तो टिल्लू की मुराद पूरी हो गई। उसके पापा दोपहर का खाना खाकर घर पर मीठी नींद ले रहे थे। उनका सिक्यूरिटी कार्ड टिल्लू के हाथ लग गया। अपनी मम्मी की चौकन्नी नजरों से बचकर वह गलियारे की ओर बढ़ गया, जहाँ सबका जाना मना था।

रास्ते में फौलाद का एक मजबूत दरवाजा था। टिल्लू अकसर देखता था कि उसके पापा अपने जादुई कार्ड को एक खाँचे में डाल देते थे, जिससे दरवाजा तुरंत खुल जाता। उसने भी वैसा ही किया...और दरवाजा बिना कोई शोर किए खुल गया। अंदर रोशनी में नहाया एक गलियारा उसे अपनी ओर बुला रहा था।

दीवार में एक खाँचे से बाहर निकले कार्ड को फुरती से पकड़ता हुआ टिल्लू बेधड़क गलियारे में घुस गया। आगे रास्ता कुछ ऊँचा होता जा रहा था। वह गलियारा जमीन के नीचे बसी बस्ती से ऊपर ग्रह की सतह तक जाता था। टिल्लू को उम्मीद थी कि अगर ऊपर दिन हुआ तो सूर्य दिखेगा और रात हुई तो तारे नजर आएँगे, जिनके बारे में वह काफी कुछ पढ़ चुका था।

पर अफसोस, ऐसा कुछ भी नहीं हो पाया। सुरक्षा व्यवस्था टिल्लू की उम्मीद से कहीं ज्यादा शक्तिशाली थी। छिपे हुए उपकरणों ने पहले ही पता लगा लिया था कि कोई नन्हा घुसपैठिया सुरंग में घुस आया है। उन्होंने उसकी तसवीर भी उतारकर केंद्रीय ब्यूरो को भेज दी, जहाँ उसकी पूरी जाँच-पड़ताल हुई...।

वह मुश्किल से दस कदम ही चला होगा कि एक मजबूत हाथ ने उसके कंधे को थाम लिया और फिर सुरक्षाकर्मियों ने सख्ती-नरमी बरतते हुए उसे घर तक पहुँचा दिया, जहाँ माँ बेचैनी से उसकी राह देख रही थी, साथ ही नाराज भी थी।

और जब माँ की डाँट-डपट जारी थी तब टिल्लू को अप्रत्याशित रूप से पापा की मदद मिली।

''प्रिये, मुझे उसे समझाने दो।'' पापा ने कहा, जो उसी वक्त सोकर उठे थे। ''अगर इसे अच्छी तरह समझाया जाए तो यह ऐसा काम दोबारा कभी नहीं करेगा।'' इतना कहकर पापा ने समझाना शुरू किया, ''सुनो टिल्लू! मैं वहाँ ऊपर सतह पर काम करता हूँ, जहाँ कोई साधारण आदमी जिंदा नहीं रह सकता है, क्योंकि वहाँ की हवा साँस लेने के लिए बेहद विरल है और वहाँ का तापमान इतना कम है कि तुम उसमें जम जाओगे।''

''लेकिन पापा, फिर आप जिंदा कैसे रहते हैं?''

''क्योंकि मैं वहाँ पर एक विशेष प्रकार का सूट पहनकर और ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर जाता हूँ। इस तरह मैं

अपने को गरम रख सकता हूँ। और मेरे विशेष प्रकार से डिजाइन किए गए जूते ऊपर की सतह पर चलने में मेरी मदद करते हैं। इन सबसे बढ़कर मुझे ऐसी सतह पर जीवित रहने और काम करने का प्रशिक्षण भी मिला है।

''एक वक्त था जब हमारे पुरखे सतह पर प्राकृतिक तौर पर रहते थे। दरअसल, वे करोड़ों वर्षों तक ऊपर की सतह पर रहे। फिर वक्त बदलने लगा। वही सूर्य, जो हम सबको जीवन देता था, अचानक ही हमसे प्रतिकूल होने लगा। हालाँकि उसमें मामूली सा बदलाव ही आया, लेकिन उतना बदलाव ही हमारे ग्रह पर प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने के लिए काफी था।

''सबसे पहले पक्षी विलुप्त हो गए। उनके बाद जानवर और मछलियाँ भी उस बदलाव को झेल नहीं सकीं। हम इनसान भी केवल इसलिए बच सके, क्योंकि हमारे पास बेहतर तकनीकी थी। लेकिन हमें भी जमीन के नीचे बसने को मजबूर होना पड़ा। भला हो सौर ऊर्जा का, जिसकी मदद से हम कृत्रिम परिस्थितियों में भी अपने जीवन को सुखमय बना सके। लेकिन जो मशीनें हमारे जीवन को सुखमय बनाती हैं, उन्हें हमेशा अच्छी तथा चालू हालत में रहना चाहिए। उनमें से कुछ मशीनें ऊपरी सतह पर हैं और मैं उस दल में हूँ जो इन मशीनों की देख-रेख करने और उन्हें दुरुस्त रखने के लिए जिम्मेदार है।''

''पापा! क्या मैं भी बड़ा होने पर इस दल में शामिल हो सकता हूँ?''

''जरूर, अगर तुम चाहो तो।'' पापा ने कहा, ''लेकिन इसके लिए तुम्हें पहले अच्छा लड़का बनना चाहिए और माता-पिता का कहना मानना चाहिए।'' हमेशा की तरह मम्मी ने बात पूरी की।

अगले दिन जब टिल्लू के पापा काम पर पहुँचे तो कंट्रोल-रूम में अच्छा-खासा उत्साह था। सभी लोग बड़े से टी.वी. स्क्रीन के चारों ओर जमा थे। काले परदे पर केवल एक चमकदार बिंदु दिख रहा था।

पिछली पाली के सुपरवाइजर ने बताया कि ''यह कोई सितारा नहीं है—क्योंकि इसकी स्थिति बदल रही है। हमारे कंप्यूटर ने इस 'चीज' का मार्ग बताया है। यह सीधे हमारी ओर आ रही है।''

''कोई अंतरिक्ष यान है?'' टिल्लू के पापा ने पूछा।

अब तक नई पाली के सदस्य भी वहाँ इकट्ठा हो गए थे।

''हम भी यही सोचते हैं; परंतु इस पर नजर रखने की जरूरत है।''

एक अंतरिक्ष यान! कहाँ से आया? उनके ग्रह को छोड़कर पूरे सौरमंडल में कहीं भी जीवन के निशान नहीं मिले थे। टिल्लू के पापा को याद था कि सेंट्रल ब्यूरो के अभिलेखागार में इस बात के रिकॉर्ड थे कि प्राचीन काल में उनके ग्रह पर पुरखों का एक अतिविकसित अंतरिक्ष कार्यक्रम था, जिसके द्वारा उन्होंने अपने मानवयुक्त व मानवरहित अंतरिक्ष यानों से पूरे सौरमंडल को खँगाल डाला था। इससे यही पता चला था कि वे सचमुच में 'अकेले' थे। आज ऊर्जा की कमी के युग में और भूमिगत रहते हुए अंतरिक्ष कार्यक्रम चलाना नामुमकिन था। अब वे अपनी गुप्त स्थिति से आगे के घटनाक्रम पर केवल नजर ही रख सकते थे।

पर वे अजनबी कौन थे?

केंद्रीय ब्यूरो का सम्मेलन-कक्ष इतना शांत था कि बाहरी लोगों को एकदम खाली लगता। पर वास्तव में वह ठसाठस भरा हुआ था। लेकिन केंद्रीय समिति के सभी सदस्य एकदम खामोश थे। वे जानते थे कि राष्ट्रपति कोई महत्त्वपूर्ण घोषणा करने जा रहे हैं।

''साथियो! मैं आपके सामने वह रिपोर्ट पेश करूँगा जो मुझे मिली है। जब मैं बोल रहा हूँ तो हो सकता है कि हालात कुछ बदल जाएँ।'' राष्ट्रपति ने एक-एक कर अपने कागजात करीने से लगाए और दोबारा बोलना शुरू किया।

''दो अंतरिक्ष यान हमारी ओर बढ़ रहे हैं। दरअसल, एक तो हमारे ग्रह के चक्कर काट रहा है, जबकि दूसरा कुछ दूर है। हमारा विचार है कि ये यान हमारे पड़ोसी ग्रह से आ रहे हैं। हमें उनका कैसा स्वागत करना चाहिए? नंबर एक, तुम्हारी क्या राय है?''

नंबर एक सुरक्षा इंचार्ज था। वह अपनी बहादुरी और बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध था। उसने कहा, ''श्रीमान, अगर हम चाहें तो इन अंतरिक्ष यानों को अपनी मिसाइलों से पूरी तरह नष्ट कर सकते हैं। परंतु यह बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। हमारे पास इन यानों को आसमान में बेकार करने की क्षमता नहीं है। लेकिन अगर वे हमारे ग्रह पर उतरते हैं तो हम उन्हें बेकार कर सकते हैं। हमारी रिपोर्ट कहती है कि इन यानों में कोई जीवित प्राणी नहीं है, इनमें केवल उपकरण हैं।''

''नंबर दो, तुम्हारी क्या राय है?'' राष्ट्रपति ने समिति के वैज्ञानिक से पूछा।

''श्रीमान, मेरा सुझाव है कि हम इन यानों के साथ कोई छेड़छाड़ न करें और चुपचाप तमाशा देखें। चूँकि हमारे पास इन यानों को भेजनेवालों की ताकत का अंदाजा नहीं है, इसलिए उनके इरादों के बारे में हम पूरी तरह अँधेरे में हैं। अत: अक्लमंदी इसी में है कि अपनी मौजूदगी का खुलासा न किया जाए। अगर हम इन अंतरिक्ष यानों को नष्ट कर दें या इन्हें बेकार कर दें तो हम अपने अस्तित्व का राज खोल बैठेंगे।''

राष्ट्रपति ने नंबर तीन की ओर देखा, जो एक समाज-विज्ञानी था। वह नंबर दो से शायद ही कभी सहमत होता हो। पर आज तो दुर्लभ अवसर था। उसने कहा, ''मैं नंबर दो से सहमत हूँ, श्रीमान। बल्कि मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि सतह पर हमें अपनी गतिविधियाँ कम-से-कम कर देनी चाहिए, ताकि यही लगे कि इस ग्रह पर कोई जीवन नहीं है। सौभाग्य से हमारी सतह की स्थितियाँ भी ऐसा ही आभास देती हैं।''

राष्ट्रपति कुछ बोल पाते कि उससे पहले ही उनका निजी फोन घनघना उठा। उन्होंने रिसीवर उठाया और एक मिनट तक शांति से कुछ सुना।

''मित्रो!'' राष्ट्रपति ने घोषणा की, ''पहला अंतरिक्ष यान सतह पर उतर चुका है।''

वह दिन टिल्लू के जीवन का यादगार दिन था—इसी दिन का उसे इंतजार था। पापा उसे अपने साथ कंट्रोल-रूम में ले गए थे। वहाँ से वह टेलीविजन के परदे पर बाहरी दुनिया का अंतरिक्ष यान देख सकता था।

''क्या मजाक है! पापा, इसमें क्या है?'' टिल्लू ने पूछा।

पापा ने सिर हिलाया, ''पक्के तौर पर नहीं कह सकता। हमें इसे केवल दूर से देखने की इजाजत मिली है; लेकिन इसके सभी कल-पुरजों पर हमारा नियंत्रण है और अगर यह कुछ शैतानी करता है तो हम इस पर बल-प्रयोग भी कर सकते हैं।'' इतना कहकर पापा ने शानदार पैनल की ओर इशारा किया, जिस पर कई रंगों के बटन लगे थे। टिल्लू उन्हें बड़ी हैरानी से देख रहा था।

अचानक ही टिल्लू को अंतरिक्ष यान में कुछ हरकत होती दिखी।

''देखो पापा, यह कुछ करने जा रहा है।''

कंट्रोल-रूम में अन्य लोगों ने भी वह हरकत देखी। सभी की नजरें स्क्रीन पर गड़ गईं।

अंतरिक्ष यान में से एक यांत्रिक भुजा बाहर निकल रही थी और सतह की ओर बढ़ रही थी। भुजा ने मुड़कर मिट्टी को छुआ।

''यह क्या करने जा रही है?'' सभी लोग परदे के पास जमा हो गए, ताकि नजदीक से देख सकें। टी.वी. कैमरे के टेलीस्कोपिक लेंस ने यांत्रिक भुजा के सिरे को निकट से दिखाना शुरू किया।

टिल्लू का ध्यान कंट्रोल पैनल और उसके आकर्षक बटनों पर लगा था। उन बटनों में सबसे अलग लाल रंगवाले

बटन को दबाने की इच्छा उस पर हावी होती जा रही थी। वह आगे बढ़ा और...।

सीटी की तीखी आवाज कंट्रोल-रूम में गूँज उठी। अगले ही पल सबका ध्यान टिल्लू पर था। उसके पापा उसे खींचकर अलग ले गए और लाल बटन को उसकी पूर्व अवस्था में ले आए। लेकिन तब तक काफी नुकसान हो चुका था।

उस अंतरिक्ष यान की यांत्रिक भुजा ने काम करना बंद कर दिया।

□

दूर धरती पर नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा बुलाए गए पत्रकार सम्मेलन में एक वैज्ञानिक दुनिया भर के पत्रकारों को बता रहा था—

''...वाइकिंग मिशन के साथ सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा था। कुछ हिचकिचाहट थी। यांत्रिक भुजा परीक्षण के लिए मंगल ग्रह की मिट्टी खोदने ही वाली थी कि उसमें कुछ खराबी आ गई...। हमें कारण का नहीं पता, पर हमारे तकनीशियनों को विश्वास है कि वे इस खराबी को दूर कर लेंगे।''

थोड़ी देर बाद ही नासा (NASA) की ओर से एक और प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई—''यांत्रिक भुजा दोबारा ठीक काम कर रही है। भला हो हमारे तकनीशियनों की मेहनत का। मिट्टी के नमूने इकट्ठे किए जा रहे हैं और परखे जा रहे हैं। जल्द ही हम इस सवाल का जवाब खोज पाएँगे कि मंगल ग्रह पर जीवन है या नहीं।''

मंगल ग्रह पर जीवन? हमारे सौरमंडल के सभी ग्रहों में मंगल ही पृथ्वी के सबसे निकट है और इसकी भौतिक परिस्थितियाँ भी धरती के लगभग समान हैं। इसलिए वाइकिंग मिशन से जुड़े वैज्ञानिकों को उम्मीद थी कि मंगल ग्रह पर जीवन मिलेगा। लेकिन केवल निराशा ही उनके हाथ लगी।

वाइकिंग मिशन को मंगल ग्रह पर जीवन के कोई निशान नहीं मिले।

❑❑❑